आस्था के साधनों के निर्माता

वर्ष 41, मई 2024

मुद्रापथ

स्वर्ण जयंती विशेषांक

(1974-2024)

बैंक नोट मुद्रणालय, देवास (म. प्र.)

(भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लि. की इकाई)

आईएसओ – 45001 : 2018 प्रमाणित इकाई

❊ मध्य क्षेत्र के उपक्रमों की श्रेणी में बीएनपी, देवास को गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग से क्षेत्रीय राजभाषा सम्मान :

मध्य एवं पश्चिम क्षेत्र के कार्यालयो /उपक्रमों के वर्ग में राजभाषा में सर्वोत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु बैंक नोट मुद्रणालय देवास को वर्ष-1989-90 से 2009-10 तक सर्वश्रेष्ठ केन्द्रीय कार्यालय के रूप में मुद्रणालय देवास, को 16 बार एवं सर्वश्रेष्ठ उपक्रम के रूप में इस वर्ष-2022-23 में क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार विजेता रहा। इस तरह बीएनपी कुल 17 बार क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार विजेता बना। मध्य एवं पश्चिम क्षेत्र के लिए वर्ष-2022-23 के लिए दिनांकः 23.11.2023 को मुंबई (महाराष्ट्र) में बैंक नोट मुद्रणालय, देवास को तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। जिसमें महाराष्ट्र के महामहिम राजयपाल द्वारा श्री एस.महापात्र, मुख्य महाप्रबंधक के शील्ड एवं श्री देवेन्द्र तिवारी, प्रबंधक (रा.भा.) को प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया ।

❊ एस.पी.एम.सी.आई.एल. अंतर इकाई फुटबॉल, क्रिकेट एवं बैंडमिंटन टुर्नामेन्ट :

एसपीएमसीआईएल के निगमीकरण के पश्चात 09 इकाईयों तथा निगम कार्यालय के कर्मचारियों एवं अधिकारियों में परस्पर सामंजस्य एवं बेहत्तर तालमेल के लिए अन्तर-इकाई खेल प्रतियोगिताएं आयोजित करवाने का निर्णय लिया गया । तदनानुसार, बैंक नोट मुद्रणालय, देवास में अंतर-इकाई स्तर पर वर्ष-2010 में फुटबॉल, वर्ष-2014 में बैंडमिंटन एवं वर्ष -2022 में क्रिकेट प्रतियोगिताओ का आयोजन किया गया । वर्ष-2024 में भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नाशिक द्वारा आयोजित अंतर-इकाई बैंडमिंटन प्रतियोगिता में बैंक नोट मुद्रणालय, देवास विजेता इकाई घोषित किया गया ।

मुख्य महाप्रबंधक
बैंक नोट मुद्रणालय, देवास

स्वर्ण जयंती विशेषांक
50
1974-2024

संरक्षक की कलम से....

देश के गौरवशाली संस्थान बैंक नोट मुद्रणालय, देवास के 50 वर्षों की स्वर्ण जयंती पूर्ण होने के अवसर पर गृह पत्रिका ''मुद्रापथ'' के स्वर्ण जयंती विशेषांक के माध्यम से आपसे चर्चा करते हुए हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ।

आप सभी की निष्ठा और कर्मशीलता के बल पर मुद्रणालय आज नौ इकाईयों में शीर्ष पर है, ना केवल मुद्रणालय विगत तीन वर्षों से सीएमडी कप का विजेता है, वरन् गुणवत्तापूर्ण उत्पादन सहित सभी क्षेत्रों में नित नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है।

जहां तक उत्पादन की बात है तो हमें सदा ही यह बात ध्यान रखना है कि हम एक संप्रभु कार्य में संलग्न एक प्रतिष्ठित संस्थान है, जो इस बात के लिए सदा से ही प्रतिबद्ध है कि इसका उत्पादन उच्च गुणवता के साथ निर्मित हो, आपकी श्रमशीलता और उत्पादन बढ़ोतरी के शुभ संकल्प के साथ हम इस वर्ष भी समय से पूर्व ही लक्ष्य को प्राप्त कर लेंगे। अभी हाल में हमने एक दिन में 21 मिलियन का एवं स्याही निर्माण में 4.357 मेट्रीक टन का उत्पादन कर अपने ही पूर्व कीर्तिमान को चुनौती देकर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है।

बीएनपी द्वारा In-house develop CSI ink को RBI द्वारा 29 जनवरी, 2024 में मान्यता प्राप्त होने के पश्चात मुद्रणालय की गौरव में एक और चार-चाँद लग गया।

हमारे द्वारा इस वर्ष सामाजिक कल्याण के दायित्व (CSR) के अंतर्गत ''मेरा स्कूल - स्मार्ट स्कूल'' अभियान में 100 टी.वी. प्रदान की गई एवं शौचालय बनवाए गए, मिशन बाल शक्ति के अंतर्गत पोषण एवं आहार कुपोषित बच्चों को दिया गया, मॉडल विलेज के अंतर्गत जल आपूर्ति, सोलर लाईट, जिला अस्पताल का नवीनीकरण, एम्बुलेन्स एवं ऑक्सीजन मशीन प्रदान की गई।

बीएनपी ना केवल उत्पादन में अग्रणी है, वरन् इतर गतिविधियों में भी अग्रणी है, जिसमें मध्य क्षेत्र के उपक्रमों में राजभाषा में सर्वोत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु वर्ष 2022-23 का भारत सरकार क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार, संरक्षा के क्षेत्र में प्लेटिनम अवार्ड एवं अद्यतन आईएसओ प्रमाणन हासिल किया है, हाल ही में निगम मुख्यालय द्वारा संपन्न अंतर इकाई बैडमिंटन टूर्नामेंट, आईएसपी-नाशिक में रोमांचक मुकाबले में टीम बीएनपी-देवास विजेता बनकर विजयी ट्रॉफी की हकदार बनी। उपरोक्त सभी उपलब्धियां एवं कीर्तिमान टीम बीएनपी की एकनिष्ठ कर्त्तव्यनिष्ठा, उत्साह एवं टीम भावना को रेखांकित करते है, साथ ही कर्तव्य पथ, स्वास्थ्य पथ एवं बैंक नोट प्रेस के 50 वर्ष पूर्ण होने के यादगार के तौर पर गौरव गाथा कॉरिडोर का उद्घाटन हुआ, जिससे कार्मिकों में उत्साह की लहर है। मुझे आप सभी पर गर्व है, मुझे पूरी उम्मीद है कि टीम बीएनपी आगे भी नए कीर्तिमान स्थापित करेगी, एक बार पुन: आप सभी को स्वर्णिम उपलब्धियों से **परिपूर्ण स्वर्णजयंती वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ, साथ ही मुद्रापथ के इस विशेषांक के संपादन एवं प्रकाशन टीम को साधुवाद।**

(सुरेश्वर महापात्र)

आस्था के साधनों के निर्माता

अनुक्रमणिका

स्वर्ण जयंती विशेषांक
50
1974-2024

वर्ष 41, मई 2024

गृह पत्रिका 'मुद्रापथ'
बैंक नोट मुद्रणालय
देवास (म.प्र.)

संरक्षक
श्री एस. महापात्र
मुख्य महाप्रबंधक

सह संरक्षक
श्री के.एन. महापात्र
महाप्रबंधक

प्रकाशक
श्री सुनील दुपारे
संयुक्त महाप्रबंधक (मा.सं)

प्रधान संपादक
देवेन्द्र तिवारी
प्रबंधक (राजभाषा)

संपादकीय सहयोग
विवेक प्रसाद
वरिष्ठ पर्यवेक्षक (राजभाषा)

मुख्य पृष्ठ परिकल्पना
देवेन्द्र तिवारी
विवेक प्रसाद

संदेश	1–4
सह–संरक्षक की कलम से	5
संपादकीय	6
मुद्रणालय की 50 वर्षों की स्वर्णिम यात्रा	7–8
समय प्रबंधन	9
ठगी का नया रूप–सायबर किडनैपिंग	10
मानव जीवन का कर्म–विधान	11
लक्ष्य उत्तरदायित्व	12
भारतीय संदर्भ में वसीयत	13–14
भारत में म्यूचुअल फंड के लिए एक व्यापक मार्गदर्शिका	15–16
ई–रूपया (e) भारत की अपनी डिजिटल मुद्रा	17–18
मार्डन आर्ट (उसका अर्थ)	19
अंतर इकाई बैडमिंटन प्रतियोगिता विजेता, बीएनपी, देवास	19
बैंक नोट मुद्रणालय, देवास की आत्मकथा	20
अंतर वैयक्तिक कौशल (Interpersonal Skills)	21-22
भूमण्डलीकरण और हिन्दी	23–24
कार्यस्थल पर आँखों की सुरक्षा	25–26
प्रकाश की व्यतिकरण	27–28
गठिया	29–30
आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (कृत्रिम बुद्धिमत्ता)	31
भारत की जी–20 अध्यक्षता का महत्व	32
बच्चों पर मोबाईल का दुष्प्रभाव	33
प्राथमिक उपचार	34
बैंक नोट मुद्रणालय के इकाई प्रमुख/मुख्य महाप्रबंधकगण..	35
बीएनपी पर्यावरण के 50 वर्ष	35
मोबाईल का नशा	36
कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR)	37
विविध गतिविधियों की कहानी.... चित्रों की जुबानी	38–46
नवागत का स्वागत	46

गृह पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं का संपूर्ण उत्तरदायित्व संबंधित लेखक का है, संपादक मण्डल एवं प्रबंधन का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

विजय रंजन सिंह
Vijay Ranjan Singh
अध्यक्ष तथा प्रबंध निदेशक
Chairman & Managing Director

भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
मिनीरत्न श्रेणी- I, सीपीएसई
(भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्वाधीन)
Security Printing and Minting Corporation of India Limited
Miniratna Category-I, CPSE
(Wholly owned by Government of India)

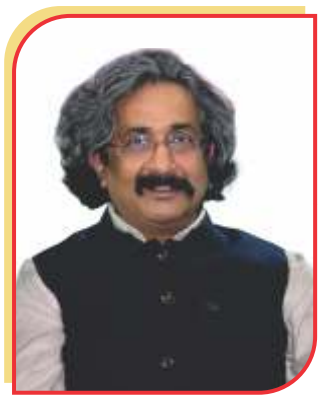

संदेश

स्वर्ण जयंती विशेषांक
50
1974-2024

मुझे यह जानकर अत्यत हर्ष की अनुभूति हो रही है कि, एसपीएमसीआईएल की प्रतिष्ठित इकाई बैंक नोट मुद्रणालय, देवास अपने स्थापना के 50 गौरवशाली वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में इकाई की गृह पत्रिका 'मुद्रापथ' को 'स्वर्णजयंती' विशेषांक के रूप में प्रकाशित कर रहा है। बैंक नोट मुद्रणालय, देवास की गौरवपूर्ण उपलब्धियों से युक्त इस स्वर्णिम कालखंड के साक्षी रहे, सभी पूर्व एवं मौजूदा अधिकारियों एवं कार्मिकों को इस अवसर पर बधाई देता हूँ और यह कामना करता हूँ कि अपनी गुणवत्तापूर्ण उत्पादों के साथ बीएनपी सभी क्षेत्रों में निरंतर प्रगति करते रहें।

किसी भी कंपनी की विकास यात्रा में उसका मजबूत संगठन, नित नए बदलते अत्याधुनिक तकनीकों, सुरक्षा मानदंडों को अपनी व्यावसायिक आवश्यकताओं के अनुरूप प्रबंध संरचना, गुणवत्ता एवं सुरक्षा के साथ कार्य करने वाले प्रशिक्षित कार्मिकों की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है, मुझे खुशी है, कि एसपीएमसीआईएल की प्रतिष्ठित इकाई के रूप में बैंक नोट मुद्रणालय देवास, अपने सुव्यवस्थित प्रबंध संरचना एवं प्रशिक्षित कार्यबल के साथ अपने विशिष्ट उत्पादों के माध्यम से देश की अर्थव्यवस्था में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। एसपीएमसीआईएल सर्वोत्तम मानकों के अनुकूल प्रौद्योगिकी को अपनाकर अपने सभी हितधारकों के लिए सतत मूल्य सृजन हेतु प्रतिबद्ध है।

गृह पत्रिकाएँ संस्थान की गतिविधियों का दर्पण होने के साथ-साथ कार्मिकों की रचनात्मकता की अभिव्यक्ति हेतु सार्थक मंच उपलब्ध कराती है। 'मुद्रापथ' के इस सारगर्भित अंक के रचनाकारों, संपादक एवं प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों/कार्मिकों को भी साधुवाद।

(विजय रंजन सिंह)

सुनील कुमार सिन्हा
Sunil Kumar Sinha
निदेशक (मानव संसाधन)
Director (Human Resource)

भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
मिनीरत्न श्रेणी- I, सीपीएसई
(भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्वाधीन)
Security Printing and Minting Corporation of India Limited
Miniratna Category-I, CPSE
(Wholly owned by Government of India)

स्वर्ण जयंती विशेषांक
50
1974-2024

संदेश

अति प्रसन्नता का विषय है कि बैंक नोट मुद्रणालय, देवास के स्वर्णिम उपलब्धियों से युक्त 50 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर इकाई की गृहपत्रिका 'मुद्रापथ' का स्वर्ण जयंती अंक प्रकाशित किया जा रहा है। इस अवसर पर बैंक नोट मुद्रणालय, देवास के प्रबंधन सहित सम्पूर्ण टीम बीएनपी को शुभकामना एवं बधाई।

यह सत्य है कि मानव की समस्त संवेदनाओं, भावनाओं, रचनात्मक तथा कार्य व्यवहार को भाषा के माध्यम से ही प्रकट किया जाता है। साथ ही दूसरी मुख्य बात यह है कि मनुष्य की रचनात्मक गहराईयां स्वयं की भाषा के माध्यम से ही बेहतर ढंग से प्रकट होती है। संसार के महानतम साहित्यकारों की रचनाएं इस बात का जीवंत प्रमाण हैं। साथ ही आम व्यक्ति के सुख-दुःख को भी प्रकट करने का माध्यम भी अपनी स्वयं की भाषा होती है।

बैंक नोट मुद्रणालय द्वारा राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य किया जा रहा है। मुद्रणालय को विगत में भी अनेक प्रशस्तियों और पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। इस प्रकार मुद्रणालय द्वारा राजभाषा के कार्य को बेहतर बनाने की दिशा में लगातार प्रयास किए जा रहें हैं। मुद्रापथ का प्रकाशन इस बेहतर कार्य को आगे बढ़ाने की दिशा में एक सराहनीय कदम है।

मुद्रापथ के प्रकाशन में लगें संपादक, उनके सहयोगियों एवं समस्त रचनाकारों को, मैं, शुभकामनाएं देता हूं कि, वे इसी प्रकार राजभाषा की अविरल ज्योति को, मुद्रापथ के माध्यम से प्रज्वलित रखें तथा भारत सरकार की राजभाषा नीति को सुदृढ़ बनाने में अपना योगदान देते रहें।

'मुद्रापथ' के सफल प्रकाशन हेतु मेरी पुनः शुभकामनाएं !

(सुनील कुमार सिन्हा)

अजय अग्रवाल
Ajay Agrawal
निदेशक (वित्त)
Director (Finance)

भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
मिनीरत्न श्रेणी- I, सीपीएसई
(भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्वाधीन)
Security Printing and Minting Corporation of India Limited
Miniratna Category-I, CPSE
(Wholly owned by Government of India)

स्वर्ण जयंती विशेषांक
50
1974-2024

संदेश

बैंक नोट मुद्रणालय, देवास की उपलब्धियों से परिपूर्ण 50 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर गृह पत्रिका 'मुद्रापथ' के इस विशेषांक के माध्यम से अपनी भाषा में आपसे चर्चा करते हुए मैं प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूं।

वस्तुतः गृह पत्रिका एक ऐसा मंच है, जिसके माध्यम से छिपी हुई रचनात्मक प्रतिभाओं का रचना कौशल प्रकट होता है। मानव के भीतर अनगिनत भावनाएं होती है, जिनके लिए शब्द खोजना एक चुनौती भरा कार्य होता है और यह चुनौती तभी पूर्ण की जा सकती है, जब अपनी भाषा में रचनात्मकता मुखरित हो रही हो।

बैंक नोट मुद्रणालय में कार्यरत समस्त कार्मिक और उनके परिजन बधाई के पात्र हैं, जिनके द्वारा मुद्रा उत्पादन के क्षेत्र में तो नए कीर्तिमान गढ़े ही जा रहे हैं और साथ ही राजभाषा को स्थापित और प्रतिष्ठित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन किया जा रहा है।

बैंक नोट मुद्रणालय के राजभाषा अनुभाग द्वारा राजभाषा को प्रतिष्ठित करने और भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन के लिए जो भरसक प्रयास किए जा रहे हैं, उसके लिए पूरी टीम प्रशंसा के पात्र है।

मुद्रापथ गृह पत्रिका के प्रकाशन और इसकी सफलता के लिए संपादक एवं प्रकाशन टीम को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं !

(अजय अग्रवाल)

विनय कुमार सिंह
Vinay Kumar Singh
मुख्य सतर्कता अधिकारी
Chief Vigilance Officer

सत्यमेव जयते

भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
मिनीरत्न श्रेणी- I, सीपीएसई
(भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्वाधीन)
Security Printing and Minting Corporation of India Limited
Miniratna Category-I, CPSE
(Wholly owned by Government of India)

स्वर्ण जयंती विशेषांक
1974-2024

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि बैंक नोट मुद्रणालय, देवास के गौरवशाली 50 वर्ष होने पर गृह पत्रिका मुद्रापथ का विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है।

बैंक नोट मुद्रणालय एक संवेदनशील संस्थान है, जिसमें बैंक नोटों के मुद्रण का अति संवेदनशील कार्य किया जाता है। अतः मुद्रणालय की आंतरिक एवं बाह्य सुरक्षा के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों में भी सतर्क रहना अपेक्षित है। कहा भी गया है कि 'सतर्कता हटी, दुर्घटना घटी' । मैं आशा करता हूं कि इस इकाई के सभी कर्मचारी सतर्कता विभाग द्वारा जारी दिशा-निर्देशों को ध्यान में रखते हुए पुरी निष्ठा एवं लगन से अपने दैनिक कार्यों का निर्वहन करते रहेंगे। निगम मुख्यालय स्तर पर एवं बैंक नोट मुद्रणालय में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा अपने कार्यालयी कार्यों में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग किया जा रहा है, यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है।

मुझे विश्वास है कि मुद्रापथ के माध्यम से बैंक नोट मुद्रणालय के कार्मिको को रचनात्मक कार्य करने की प्रेरणा प्राप्त होगी और राजभाषा के क्षेत्र में इकाई की ख्याति और बढ़ेगी। इस विशेष अंक के सम्पादन एवं प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देता हूं।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ !

(विनय कुमार सिंह, भा.रा.से)

महाप्रबंधक

बैंक नोट मुद्रणालय, देवास

स्वर्ण जयंती विशेषांक
50
1974-2024

सह-संरक्षक की कलम से....

पहाड़ों पर स्थित माँ चामुंडा एवं तुलजा भवानी के आँचल की छवि में स्थित बैंक नोट मुद्रणालय, देवास अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर रहा है। देश की अर्थ व्यवस्था में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने वाली गौरवशाली बैंक नोट मुद्रण इकाई की उपलब्धियों से परिपूर्ण स्वर्णिम कालखंड को स्मरणीय बनाने हेतु पत्रिका के रूप में 'मुद्रापथ' के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। इस अवसर पर मैं बैंक नोट मुद्रणालय की स्थापना से जुड़े सभी पूर्व एवं मौजूदा अधिकारियों एवं कार्मिकों के योगदान की सराहना करते हुये मैं अपनी हार्दिक शुभकामना व्यक्त करता हूँ।

अपनी स्थापना के उपरांत बैंक नोट मुद्रणालय के सभी क्षेत्रों यथा बैंक नोट मुद्रण, सुरक्षा स्याही का उत्पादन, संरक्षा, राजभाषा सहित सभी क्षेत्रों में उल्लेखनीय कीर्तिमान कायम किया है। इन क्षेत्रों में पूर्व में निरंतर प्राप्त सम्मानों के अतिरिक्त हाल ही में प्राप्त एसपीएमसीआईएल की सर्वोत्कृष्ट उत्पादक इकाई सम्मान, संरक्षा के क्षेत्र में प्लेटिनम अवार्ड, मध्यक्षेत्र के उपक्रमों में राजभाषा में सर्वोत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु वर्ष 2022-23 के लिये भारत सरकार राजभाषा विभाग से प्राप्त क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार एवं साथ में अद्यतन आईएसओ प्रमाणन हमारी उपलब्धियों को रेखांकित करते हैं।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है, बैंक नोट मुद्रणालय की 50 वर्षों के स्वर्णिम कालखण्ड को 'मुद्रापथ' के माध्यम से आप सभी को अपने आने वाले भविष्य में ऐसी और उपलब्धियों हेतु प्रेरित करेगी ।

एक बार पुनः राजभाषा अनुभाग के संपादक/प्रकाशन टीम को बधाई एवं शुभकामना ।

(के.एन. महापात्र)

स्वर्ण जयंती विशेषांक
1974-2024

संपादक की कलम से....

रचा महोत्सव पीत का, फागुन खेले फाग। साँसों में कस्तूरियाँ, बोये मीठी आग।।
पलट-पलट मौसम तके, भौंचक निरखे धूप। रह-रहकर चितवा हवा, ये फागुन के रूप।।

किसी कवि ने उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से अत्यंत खूबसूरती से ऋतुराज बसंत के आगमन का चित्रण किया है।

भारतीय परिवेश एवं संस्कृति में ऋतु परिवर्तन का अपना महत्वपूर्ण स्थान है, गुलाबी ठंड के जाने का प्रथम संकेत ऋतुराज वसंत, अपनी आगमन के साथ ही दे देते है, जो इस दौरान प्रकृति के यौवन का श्रृंगार, मस्ती, नयापन जो हमें पेड़ो पर उगते नव पल्लवों, नयी फसलों, खुशी एवं उत्साह में मनाए जाने वाले विविध रंगारंग उत्सवों, पर्वों एवं मेलों में देखने को मिलता है, वस्तुत: प्रकृति अपने उपरोक्त लक्षणों से नूतन वर्ष (हिन्दू नव वर्ष) के आगमन का पूर्व संकेत देती है। पश्चिमी सभ्यता के अंधानुकरण में हम भारतीय जनवरी प्रथम को ही नये वर्ष की शुरुआत मान लेते है, भले ही प्रकृति में नयापन दिखे या न दिखे। बहरहाल, पश्चिमी एवं भारतीय संस्कृति के इस अनावश्यक बहस से इतर, बैंक नोट मुद्रणालय, देवास अपनी स्थापना उपरांत स्वर्णिम सफलताओं एवं उपलब्धियों से परिपूर्ण 50 वर्ष पूर्ण कर चुका है, इस स्वर्ण जयंती अंक में 'मुद्रापथ' अपने नए रंग रूप एवं नयी कलेवर में आपके समक्ष प्रस्तुत है।

'अभिज्ञान शाकुंतलम:' एवं 'मेघदूतम' जैसी कालजयी महाकाव्यों के प्रणेता सुप्रसिद्ध महाकवि कालिदास की कर्मस्थली उज्जयिनी के समीप एवं माँ तुलजा भवानी के पावन छत्र-छाया में 1974 में स्थापित बैंक नोट मुद्रणालय, देवास 50 वर्षों का स्वर्णिम कालखंड पूरा कर चुका है, स्वदेशीकरण एवं आत्म निर्भरता के दृष्टिगत स्थापित इस मुद्रणालय के स्वर्णिम सफर में उसके विशिष्ट उत्पाद बैंक नोट मुद्रण एवं कालांतर में सुरक्षा स्याही का उत्पादन का देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हमारा एसपीएमसीआईएल निगम भी अपनी स्थापना पश्चात उपलब्धियों से पूर्ण सफलता के 18 वर्ष पूर्ण कर एक नये दौर में प्रवेश कर चुका है, निगम के अस्तित्व में आने के पश्चात शीर्ष प्रबंधन की दूरगामी नीतियों, अत्याधुनिक तकनीकों, नयी मशीनों, प्रशिक्षित एवं समर्पित कार्यबल के माध्यम से एक चमत्कारिक बदलाव आया है, जिसका प्रतिफल आज प्रतिवर्ष गुणवत्तापूर्ण रेकॉर्ड उत्पादन के रूप में सामने है।

बैंक नोट मुद्रणालय, देवास में प्रारम्भ से ही राजभाषा हिन्दी के प्रति उत्साह एवं अपनत्व का माहौल रहा है, इसमें वर्षो पहले स्थापित विविध समितियों यथा राजभाषा कार्यान्वयन समिति, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति देवास, के साथ प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले कार्यक्रमों यथा हिन्दी पखवाड़ा,एवं विविध साहित्यिक सम्मेलनों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, राजभाषा के क्षेत्र में भारत सरकार से 14 बार (1997-98 से 2009-10 तक एवं वर्ष 2022-23 तक) प्राप्त क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार एवं शील्ड, इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार इकाई के उपलब्धियों को रेखांकित करते है। इकाई की साहित्यिक एवं रचनात्मक गतिविधियों को प्रचारित एवं प्रसारित करने के साथ-साथ इकाई के कर्मचारियों की साहित्यिक प्रतिभा को मंच प्रदान करने के उद्देश्य से पहली बार वर्ष 1988 में गृह पत्रिका 'बेनोप्रीन' श्वेत-श्याम कलेवर में प्रकाशित की गयी, जो निरंतर प्रकाशन के 36 वर्ष पूरे कर अपने आपको नए रंग-रूप एवं नये नाम 'मुद्रापथ' में कब का ढाल चुकी है, परंतु नहीं बदला है तो इसके पाठको एवं रचनाकारो का इसके प्रति लगाव, जिसके बल पर यह आज भी यह पल्लवित एवं पुष्पित हो रही है । 'मुद्रापथ' के इस विशेष अंक में नियमित स्तंभों के साथ-साथ कुछ संस्मरणों एवं चित्रों को प्रकाशित कर पुराने दौर के यादों को ताजा करने की कोशिश की गयी है।

दैनिक जीवन के आपाधापी से परे, आप सभी खुशी एवं उत्साह के साथ, अपने जीवन के कुछ पल निकालकर इन रंग-बिरंगे उत्सवों का आनंद ले, यही मेरी शुभकामना एवं मंगलकामना है। आपके अमूल्य सुझाव एवं प्रतिक्रियाओं का हमें इंतजार रहेगा। सादर !

(देवेन्द्र तिवारी)
प्रबंधक (राजभाषा) एवं
सदस्य सचिव, न.रा.का.स. देवास

मुद्रणालय की 50 वर्षों की स्वर्णिम यात्रा

क्रय विशेष: द्वारा संकलित–क्रय विभाग, बैंक नोट मुद्रणालय, देवास

दिगंत कुमार डेका
अपर महाप्रबंधक (सामग्री)
(समस्त क्रय अनुभाग के सहयोग से संकलित)

हाल ही मे आजादी के 75–वर्ष यानि भारत की आजादी की हीरक जयंती को अमृत महोत्सव के रूप मे मनाया ही था की इस मुद्रणालय की स्वर्ण जयंती आ गयी । अतः इसे यादगार बनाना अति आवश्यक हो जाता है । इस अवसर पर हमारे लिए यह कहना कठिन होगा की मुद्रणालय की 50 वर्ष की यह यात्रा किन परिस्थितियों से गुजरी, क्या उतार–चड़ाव देखे होंगे, परंतु जिस मोड़ पर हम खड़े है इस पर विचार करने से यह ज्ञात होता है की 1974 से 2024 के इन 50 वर्षों मे जमीन आसमान का अंतर आ गया है । वित्त मंत्रालय के उन गलियारों से निगम की स्थापना और एक नई उड़ान के सपनों के साथ एसपीएमसीआईएल के अंतर्गत इस संस्थान की स्वर्णिम यात्रा के कुछ बदलाव हम पता कर पाये है :–

जैसा की विदित है सार्वजनिक खरीद को नियंत्रित करने वाले कानूनी ढांचे के शीर्ष पर संविधान का अनुच्छेद 299 है, जो यह निर्धारित करता है की सरकार पर कानूनी रूप से बाध्यकारी अनुबंधों को विशेष रूप से ऐसा करने के लिए अधिकृत अधिकारियों द्वारा लिखित रूप मे निष्पादित किया जाना चाहिए । अतः जनवरी 2006 मे एसपीएमसीआईएल की स्थापना और फरवरी 2006 को सभी इकाइयों के इसमे विलय के बाद कंपनी मे खरीद प्रक्रियाओं के कार्यान्वयन हेतु क्रय विभाग के लिए पहली बार जून 2011 मे एसपीएमसीआईएल (खरीद) नियमावली, 2010 के रूप मे दिशानिर्देश जारी हुए (जीएमआर 2017 के अनुसार 2021 मे संशोधित) तब तक भारत सरकार के द्वारा समय समय पर जारी नियमों का अनुपालन किया जा रहा था । उस समय बड़े क्रय प्रस्तावों का अनुमोदन मंत्रालय से लेना होता था जिसके लिए एक प्रतिनिधि को नियुक्त किया जाता था, जो प्रस्तावों का मंत्रालय मे अनुमोदन सुनिश्चित करता था । उस समय क्रय विभाग की प्रक्रिया पूरी तरह से मेन्यूअल होती थी । एक निविदा प्रक्रिया पूर्ण करने के लिए डाक विभाग का विशेष योगदान रहता था, क्योंकि निविदाकार और संस्थान के मध्य सभी पत्राचार डाक के द्वारा ही सम्पन्न होते थे। डाक भेजने और प्राप्त होने मे अत्यधिक समय इंतजार करना पड़ता था । इसके अलावा टंकण के लिए टाइपराइटर का उपयोग किया जाता था, जिसमे एक बार गलत टाइप होने पर पुरा पत्र नया टाइप करना होता था । निविदा के लिए मुख्य द्वार पर एक ड्रॉपबॉक्स रखा जाता था, जिसका उपयोग आज ना के बराबर हो गया है । निविदा खोलने का वो आनंद अलग ही होता था, तथा मुद्रणालय के उत्पाद एवं कच्चे माल की प्रकृति के अनुसार अधिकतम खरीददारी लिमिटेड टेंडर द्वारा सम्पन्न होती थी । उस समय भौतिक रूप से नस्ती का रखरखाव किया जाता था, जिसे आवश्यकता होने पर ढूँढने के लिए सभी अलमारियों को खोजना पड़ता था । स्टेशनरी की विभिन्न आवश्यकताओं के लिए अलग से स्टॉक रखना पड़ता था ।

पूर्व मे नोट उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण कच्चे माल जैसे पेपर (CWBN), स्याही आदि आयात किए जाते थे । वर्तमान मे पेपर और स्याही की आपूर्ति स्वदेशीकरण के परिणामस्वरूप भारत मे ही मैसूर और नर्मदापुरम की इकाइयां कर रही है ।

मुद्रणालय की आरंभिक स्थापना के उपरांत वर्ष 2010 मे एक मुद्रण लाइन संस्थापित की गई। नई मुद्रण लाइन स्थापना के लिए खरीद अनुभाग का उस समय प्रचलित सार्वजनिक खरीद नियमों के अनुरूप बतौर मुख्य क्रय एवं भंडार प्राधिकारी का विशेष योगदान रहा। इसके उपरांत वर्ष 2019 मे एक और मुद्रण लाइन की खरीद पूर्ण की गई तथा वर्तमान मे मुद्रणालय के पास तीन मुद्रण लाइन प्रचालन मे है जो सभी प्रकार के बैंक नोटों के उत्पादन मे सक्षम है । आज हम 5000 मिलियन पीसेस बैंकनोटों से अधिक वार्षिक उत्पादन की क्षमता रखते है । तिनके से बहुत कुछ तक के इस सफर को तय करने के बाद आज हम स्वर्ण जयंती मे प्रवेश कर चूके है ।

क्रय विभाग मे वर्तमान मे प्रचलित डिजिटल व्यवस्थाएं : –

कम्प्युटर एवं एसएपी (S-P)–मई 2012 से S-P Go Live के अंतर्गत सामग्री प्रबंधन एवं अन्य मॉड्यूल से खरीद प्रक्रिया मे बदलाव अपनाए गए, जिसके कारण कम्प्युटर का उपयोग अत्यधिक होने लगा तथा जल्दी और सुगम पत्राचार मे सुविधा के साथ साथ एक महत्वपूर्ण बदलाव ईमेल की शुरुआत के रूप मे देखने को मिला। ईमेल ने धीरे धीरे भौतिक डाक को बहुत ही कम कर दिया है । और संस्थान और निविदाकार के मध्य अब समस्त पत्राचार ईमेल से बहुत ही कम समय मे किए जा रहे है । सभी एमआईएस रेपोर्ट्स एसएपी के माध्यम से ही प्राप्त की जाती है ।

सरकारी ई बाजार/Government-e-Marketplace (GeM): वर्ष 2018 मे मुद्रणालय द्वारा भारत सरकार के निदेशों के अनुपालन मे सरकारी ई–बाजार को अपनाया गया । इस बाजार मे खरीद प्रक्रिया पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) के माध्यम से निगरानी रखी जाती है। इसमे बहुत ही पारदर्शी माध्यम से खरीद प्रक्रिया पूर्ण की जाती है, जिसके कारण अत्यधिक निविदाकार बढ़ चढ़कर निविदाओं मे हिस्सा ले रहे है ।

वर्तमान मे ग्लोबल टेंडरींग को छोड़कर अन्य मामलों मे 100% खरीद GeM के माध्यम से की जा रही है । छोटे व्यापारियों और वोकल फॉर लोकल/भारत मे निर्मित वस्तुओं को बड़ावा देने के लिए भारत सरकार के दिशा निर्देशों के अनुरूप एमएसई/एमआईआई के लिए GeM पर विशेष प्रावधान होने से इनका अनुपालन भी स्वतः सुनिश्चित हो रहा है ।

ई-ऑफिस (e-office): जबकि ई-ऑफिस आने के बाद भौतिक रूप से एक फ़ाइल का रखरखाव आज बहुत ही कठिन सा लगने लगा है । चूंकि ई-ऑफिस मे फाइल आरंभ से लेकर कदम-कदम पर नस्ती की स्थिति सेकंड मे ज्ञात की जा सकती है । इसका सबसे अच्छा फायदा यह हुआ की फाइल कही खो नहीं सकती एवं इससे पारदर्शिता बनी रहती है ।. फाइल अपने पास नहीं होते हुए भी उसका अवलोकन आसानी से कर सकते है। ये सब ई-ऑफिस की उपलब्धियाँ है । मुद्रणालय मे क्रय अनुभाग द्वारा सभी नास्तियाँ (files) ई-ऑफिस के माध्यम से ही प्रक्रियाधीन की जा रही है ।

केन्द्रीय सार्वजनिक खरीद पोर्टल (CPP Portal): सरकारी ई बाजार (GeM) के अलावा वर्तमान मे क्रय विभाग द्वारा सीपीपी पोर्टल को भी क्रय प्रक्रियाओं मे उपयोग किया जाना शुरू किया गया ।

डीएससी: हस्ताक्षर का स्थान डिजिटल हस्ताक्षर ने ले लिया है ।

डिसेमिनेशन: विभिन निगरानी संस्थाओं को एमआईएस भेजने के साथ साथ क्रय की सूचनाओं को मुद्रणालय की वेबसाइट पर प्रसारित किया जा रहा है । क्रय प्रक्रिया से संबंधित महत्वपूर्ण बदलाव:-

स.क्र.	विवरण	पहले	अभी
1	इंडेंट	मेन्यूअल हस्ताक्षरित	ऑनलाइन एसएपी पीआर
2	टेंडर	हस्तलिखित	एसएपी टेंडर/जीईएम बीड
3	टेंडर पब्लीकेशन	अखबार	ऑनलाइन जीईएम/सीपीपीपी/बीएनपी वैबसाइट
4	सीएसटी	हस्तलिखित एवं मेन्यूअल हस्ताक्षरित	टाइप्ड ई-ऑफिस द्वारा
5	बीड स्पष्टीकरण	डाक द्वारा	जीईएम एवं ईमेल द्वारा
6	क्रय प्रस्ताव	टीईसी द्वारा मेन्यूअल हस्ताक्षरित	ई ऑफिस द्वारा
7	क्रय आदेश	मेन्यूअल हस्ताक्षरित	जीईएम अनुबंध एवं डिजिटल हस्ताक्षरित एसएपी क्रय आदेश
8	धरोहर एवं प्रतिभूति जमा राशि	ऑफ लाइन	ऑनलाइन स्वीकार्य
9	एमआईएस रेपोर्ट्स मेन्यूअल	एसएपी और जीईएम	
10	जीआरवी	मेन्यूअल हस्ताक्षरित	एसएपी जीआरएन/जीईएम सीआरएसी

क्रय विभाग की प्रक्रियाएं डिजिटलाइज होने के कारण इन्हे कुछ शर्तों के साथ कही भी एक्सैस किया जा सकता है। स्पष्टतः डिजिटलाइजेसन के फलस्वरूप ऑनलाइन प्रक्रियाएं अपनाने और जानकारी के स्वप्रकटीकरण से पारदर्शिता, अखंडता, खुलापन, मितव्ययता, निष्पक्षता, प्रतिस्पर्धा और जवाबदेही जैसे सार्वजनिक खरीद के मूल सिद्धांतों का अनुपालन सुनिश्चित हो रहा है । इसी वजह से निविदाकारों का भरोसा बढ़ने के साथ-साथ निविदाओं मे प्रतिभागियों की संख्या अत्यधिक बढ़ी है तथा शिकायतें नगण्य हो गई है ।

इस तरह भौतिक से ऑनलाइन कार्यपद्धति के वर्तमान संक्रमण काल के दौरान जीईएम, ई-ऑफिस और एसएपी आदि जैसे अत्याधुनिक तकनीकी उपकरणों, व्यवस्थाओं और इनके ज्ञान से सुसज्जित क्रय अनुभाग भविष्य की विभिन्न चुनौतियों का सामना करते हुए पूर्णतः डिजिटलाइज होने की ओर अग्रसर है, जो की इस वर्तमान आधुनिक डिजिटल युग की एक अनिवार्य आवश्यकता है और 1974 के उस श्वेत-श्याम दौर से वर्तमान के डिजिटल इंडिया अभियान को सफल बनाने मे मुद्रणालय का क्रय विभाग अग्रणी भूमिका निभा रहा है ।

गहन-सघन मनमोहक वन, तरु मुझको आज बुलाते हैं
किन्तु किये जो वादे मैंने, याद मुझे आ जाते हैं
अभी कहाँ आराम बदा, यह मूक निमंत्रण छलना है
अरे अभी सोने से पहले मीलों मुझको चलना है
अरे अभी सोने से पहले मीलों मुझको चलना है।

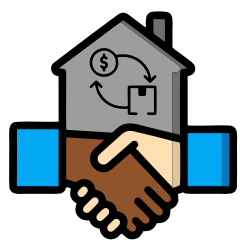

(रोबर्ट फ्रोस्ट की रचना का हिन्दी अनुवाद)

समय प्रबंधन

केदारनाथ महापात्र
महाप्रबंधक

आज के व्यस्त परिवेश में समय का महत्व निरन्तर बढ़ता जा रहा है, चाहे कोई भी संस्थान, कार्यालय या व्यक्ति हो, सभी समय की कमी महसूस करने लगे है, समय नही मिलता, समय ही नही मिला, अब तो समय कम पड़ता है, इस तरह के वाक्य सुनने को मिलते रहते हैं, इस प्रकार की स्थिति अततः तनावग्रस्त जीवन को जन्म देती है, अतः समय का प्रबंधन अत्यन्त महत्वपूर्ण है ।

समय सभी को समान रूप से उपलब्ध है एवं यह निर्बाध गति से चलता रहता है। समय का सही उपयोग सफल व्यक्तिव का आधार है तथापि इसका उपयोग कैसे किया जाये, इसे कैसे खर्च किया जाये या इसका संयोजन कैसे किया जाये, इन्ही बिन्दुओं पर विचार किया जाना आवश्यक है।

समयः मुद्रा

समय का उपयोग मुद्रा की तरह किया जाना चाहिये. जिस तरह हम अपनी आय को सोच समझ कर आवश्यकतानुसार खर्च करते हैं उसी तरह समय को भी काफी सोच विचार कर खर्च करना चाहिये ।

प्राथमिकता निर्धारणः कार्य नियोजन

प्रत्येक व्यक्ति को प्राथमिकताओं का निर्धारण करते हुए कार्य लक्ष्य तय करना चाहिये । महत्वपूर्ण मदों को प्राथमिकता देते हुए एक समय में एक काम करने से सभी कार्य समयबद्ध रूप से सफलता पूर्वक सम्पादित किये जा सकते हैं।

निर्णय क्षमताः कार्यपद्धति

समयानुरूप एवं त्वरित निर्णय कुशल प्रशासन का मूल मन्त्र है । उचित समय पर निर्णय न लेना, बार-बार निर्णय बदलना, अनावश्यक रूप समय की बर्बादी में परिणित होता है, निर्णय कुशलता एवं नियोजित कार्यपद्धति व्यक्ति को सफल एवं प्रभावी बनाती है ।

प्रभावी प्रत्यायोजन

सक्षम एवं योग्य सहयोगियों को यथा आवश्यकता कार्य सौंप कर स्वयं के लिये अन्य महत्वपूर्ण कार्यों हेतु समय बचाया जा सकता है। सभी काम स्वयं करने की प्रवृत्ति से सदा समय का अभाव रहेगा एवं कार्यों की गुणतत्ता भी प्रभावित होगी।

जिम्मेदारियों एवं अधिकारों का सुस्पष्ट होना

अपनी जिम्मेदारियों एवं अधिकारों का स्पस्ट ज्ञान न होने से कार्य निष्पादन में देरी होती है ऐसी स्थिति में बार-बार वरिष्ठों अथवा सहयोगियों पर निर्भरता से सभी का समय नष्ट तो होता ही है, साख पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है।

महत्वपूर्ण एवं शीघ्र

महत्वपूर्ण एवं शीघ्र का अन्तर स्पष्ट रूप से समझना चाहिये । कभी भी महत्वपूर्ण को शीघ्र की श्रेणी में न आने दें अर्थात महत्वपूर्ण की स्थिति में ही कार्य पूर्ण कर लिये जायें इससे जहाँ शीघ्रता के प्रभाव से बचा जा सकता है, काम भी समय रूप से क्रमानुसार होते जाते हैं ।

कालक्षय करने वाले कारक

कालक्षय करने वाले कारक अर्थात समय नष्ट करने वाले कारणों की जानकारी अत्यन्त आवश्यक है। ये कारण प्रत्येक व्यक्ति के कार्य दायित्व अनुरूप प्रथक एवं अनेक हो सकते हैं उन्हें बाह्य एवं आंतरिक कारण की श्रेणी में बांट कर कुछ को निम्नानुसार सूचीबद्ध कर सकते हैं ।

आंतरिक कारण -

1. अव्यवस्थित कार्यपद्यति एवं लक्ष्य निर्धारण का अभाव
2. प्रभावी प्रत्यायोजन की कमी
3. अनपेक्षित अतिथियों एवं दूरभाष को अवांछित समय
4. ज्ञान की कमी गलतियों का आधिक्य
5. स्पष्ट सम्प्रेषण एवं निर्देशों का अभाव

बाह्य कारण-

1. सहकर्मियों में प्रशिक्षण / अज्ञानता
2. प्राकृतिक विपदाएं
3. तकनीकी विपदाएं
4. अनपेक्षित परिथितियाँ

नियंत्रण से बाहर के कारण

बाह्य कारण तो कई बार हमारे नियन्त्रण में नहीं होते किन्तु आन्तरिक कारणों का विश्लेषण कर उन्हें काफी सीमा तक कम किया जा सकता है एवं बहुत अधिक समय उपयोगी कार्यों हेतु बचाया जा सकता है।

अतः किसी भी कार्य की समयानुरूप पूर्णता एवं लक्ष्य अनुसार उसका प्रभावी क्रियान्वयन ही सफलता का मूलमंत्र है। इसमें समय का महत्वपूर्ण योगदान है अतः इसका उपयोग, नियोजन एवं खर्च पूरी सावधानी एवं सोच विचार कर किया जाना आवश्यक है।

ठगी का नया रूप.....सायबर किडनैपिंग

योगेन्द्र भदानिया
संयुक्त महाप्रबंधक (सूचना प्रौद्योगिकी)

आजकल 'सायबर किडनैपिंग' शब्द काफी चर्चा में है। हाल जी में अमेरिका के यूटा शहर में 17 साल के एक चीनी बच्चे की नकली किडनैपिंग हुई। इंटरनेट की मदद से अपराधी ने बच्चे की जानकारी जुटाई। उसे फोन करके किसी बर्फीली पहाड़ी पर जाकर रहने के लिए कहा और बात न मानने पर उसके माता-पिता को जान से मारने की धमकी भी दी। इस डर से बच्चा वहां जाकर रहने लगा। अपराधी ने बच्चे के परिजनों को फोन किया और कहा कि उनका बेटा अपहरण हो गया है। उनसे लगभग 70 लाख रूपये की फिरौती भी मांगी। जांच-पड़ताल के बाद बच्चा सही-सलामत मिल गया। उसका कोई अपहरण नहीं हुआ था।

क्या है सायबर किडनैपिंग :

अन्य ऑनलाइन ठगी की तरह सायबर किडनैपिंग भी सायबर क्राइम का एक तरीका है। इसमें अपराधी इंटरनेट की मदद से व्यक्ति की सारी जानकारी इकट्ठी करता है और फिर उसे कॉल करता है। यह व्यक्ति को धमकाकर, डराकर और परिजनों को नुकसान पहुंचाने का हवाला देकर उसकी बताई हुई जगह पर जाने के लिए कहता है। वीडियो कॉल या फोटो मांगकर उस पर नजर रखता है। वहीं दूसरी तरफ व्यक्ति के घर पर फोन करके और नकली तस्वीरें या वीडियो भेजकार उसके अपहरण का दावा करता है, जबकि असल में अपहरण होता ही नहीं है।

कुछ अपराधी पीड़ित व्यक्ति की नकली तस्वीर, आवाज़ या वीडियो बनाने के लिए एआई का सहारा ले रहे हैं। अपराधी किसी को भी अपना शिकार बना सकते हैं, लेकिन वो लोग या छात्र अधिक जोखिम में हैं, जो परिवार से दूर अन्य राज्य या देश में रहते हैं।

सोशल मीडिया का सावधानी से इस्तेमाल :

सोशल मीडिया या मैसेंजर पर अपनी निजी जानकारी ध्यान से साझा करें। परिवार में कौन, कहां रहता है या दिनचर्या क्या है, इसे साझा करने से बचें। कई लोग घर जाने के बाद अपने घर-शहर आए हैं। कई लोग अपने प्लानर की तस्वीर भी साझा करते हैं, जिसमें कई ऐसी जानकारियां या दिनचर्या लिखी हो सकती है, जिन पर अपराधी की नजर आ सकती है। किसी भी लिंक पर क्लिक करने से बचें। मोबाइल पर सॉफ्टवेयर अपडेटेड रखें। मजबूत पासवर्ड रखें। इनकी मदद से भी ठग आप तक पहुंच सकता है।

परिवार और खुद को ऐसे सुरक्षित रखें :

पहले सबूत जुटाएं : ठग से सबूत के तौर पर पीड़ित से बात कराने के लिए कहें। अगर वो किसी और व्यक्ति को पीड़ित बनाकर बात कराए तो उससे निजी सवाल के जवाब मांग सकते हैं। सवाल ऐसे होने चाहिए, जिनका जवाब केवल पीड़ित और आप जानते हों, जैसे कि कोई यादगार लम्हा या हास्य पल आदि। अगर बात करने से वो इंकार करता है तो उसे सवाल पूछने के लिए कहें।

समझदारी से काम लें : अपराधी की आवाज़ ध्यान से सुनें। उसके बोलने के तरीके और पीछे से आने वाली आवाज़ पर ध्यान दें। इससे अपराधी तक पहुंचने में मदद मिल सकेगी। अगर हो सके तो उसी वक्त दूसरे फोन से पीड़ित से संपर्क करें। उसकी सुरक्षा सुनिश्चित होते ही पता लग जाएगा कि फोन ठगी के लिए है।

मदद जरूर लें : इस तरह के फोन आने पर घबराएं नहीं। उसके कहने पर फौरन कोई फैसला लेने से बचें। ठग कुछ भी करने के लिए कहता तो उस समय उसको हां कह दें, ताकि उसे लगे कि आप उसकी बात मान रहे हैं। लेकिन उसके बाद पुलिस और सायबर सेल की मदद लें।

परिवार को बताएं : अगर सायबर किडनैपिंग का शिकार बनाने की मंशा से ठग कॉल करता है तो फौरन इसकी जानकारी परिवार को दें, ताकि वे भी सचेत हो जाएं। सबूत के लिए ठग की कॉल रिकॉर्ड करें या मैसेज का स्क्रीनशॉट ले लें।

मानव-जीवन का कर्म-विधान

विवेक सिंह
संयुक्त महाप्रबंधक (वित्त एवं लेखा)

कर्म – सिद्धान्त क्या है? यह कार्य–कारण है, बीजवपन का सिद्धान्त है । आप जैसा बोएंगे– वैसा ही काटेंगे, ऐसा कदापि संभव नहीं है कि आप कांटे वोकर संतरे पाएं ।

यह कर्म का सिद्धान्त सार्वभौमिक है और सभी पर समान रूप से लागू होता है। प्रत्येक विचार, शब्द, कर्म, भाव, और संवेग तथा कामना– वे बीज हैं, जिन्हें हम अपने जीवन के खेत में बोते हैं, अपेक्षित समय के बाद ये उत्पन्न होते हैं और वृक्ष का आकार ग्रहण कर कड़वे अथवा मीठे फल प्रदान करते हैं–जिन्हें हमें ही खाना होता है। इन फलों का आस्वादन करने के लिए कोई और उपलब्ध नहीं होगा। कुछ कार्य ऐसे हैं जिनका प्रभाव तुरन्त होता है और कुछ कार्य अपना प्रभाव उत्पन्न करने के लिए अधिक समय लेते हैं। यदि आप ज्यादा खा लेते हैं तो यह ऐसा कार्य है, जो तुरन्त अपना प्रभाव दिखाकर अजीर्ण रोग उत्पन्न कर देता है। इसी प्रकार, अन्य अनेक कार्य ऐसे हैं– जो अपना फल प्रदान करते तो हैं, लेकिन कुछ अधिक समय बाद । प्रत्येक बीज अपना फल प्रदान करता है– यही कर्म का सिद्धांत है ।

हमें बताया गया है कि हर मनुष्य एक समान पैदा हुआ है । लेकिन कोई भी मनुष्य ऐसी कल्पना नहीं कर सकता कि सभी में समान क्षमताएं है, उनके वातावरण और परिस्थितियाँ भी समान हैं, क्योंकि, एक ही परिवार में उत्पन्न सभी सन्तानें बुद्धि और क्षमता में कभी समरूप नहीं होते ।

एक माँ कई संतानों को जन्म देती है, लेकिन हर संतान अपनी तकदीर लेकर ही पैदा होती है। हर संतान अपना कर्म–विधान लेकर आती है, जुड़वा संतानों में से भी एक बच्चा करोड़पति बन सकता है और दूसरा बच्चा दोनों समय का भोजन जुटाने के लिए भी संघर्ष करता नजर आ सकता है। अब यहीं पर दो प्रश्न उत्पन्न होते हैं – (1) पहला यह कि यह असमानता उनके कर्म का परिणाम है? और (2) यदि ऐसा है तो क्या यह उचित है ?– इन दोनों ही प्रश्नों का उत्तर– हाँ में दिया जा सकता हैं, हमारे ऋषि–मनीषियों ने अपने ज्ञान से हमें यही बताया है। आप अपने भाग्य का प्रारूप बनाने वाले वास्तुकार हैं, अपने कर्मों से अपना जीवन बनाने वाले हैं। हमारा प्रत्येक विचार, संवेग, कामना–कर्म उत्पन्न करते हैं और एक जीवात्मा के रूप में हम अनंत काल से कर्म करते चले आ रहे हैं । यदि हमारे विचार, संवेग और कर्म उदार हैं, इनसे अच्छे कर्मों की सृष्टि होती है और यदि हम विद्वेषी ओर क्रूर है – तब दोषपूर्ण कर्मों की सृष्टि होती है और अच्छा या बुरा हम अपने कर्मों से जो और जैसा उत्पन्न करते हैं, वह हमसे जुड़ा रहता है, पाप हमारे जीवन से तब तक जुड़ा रहता है– जब तक कि हम पश्चाताप द्वारा उसे निष्क्रिय नहीं कर देते। यह ईश्वर की दया है कि हमें हमारे पूर्व कर्मों का ज्ञान नहीं होता, अन्यथा संसार में अवतरित होने पर हमें अपना जीवन जीना ही कठिन हो जाता ।

हमारी स्वतंत्र इच्छा ही हमें चुनाव का अवसर प्रदान करती है। उपनिषदों द्वारा किए गए वर्णन के अनुसार हम प्रेय और श्रेय में से अपनी रूचि के अनुसार चुनाव कर सकते हैं। प्रेय सुखद लगता है, जो हमें सुख के मार्ग पर ले जाता है, यह भौतिक सुख ही हमें दिग्भ्रमित कर, हमारे जीवन का अवमूल्यन कर देता है ।

श्रेय – सत् अथवा श्रेष्ठ है, श्रेय का मार्ग प्रथम तथा हमें कठिन प्रतीत हो सकता है, लेकिन अंततोगत्वा यह मार्ग हमें हमारी भलाई की ओर ले जाता है – जिससे हमारा आध्यात्मिक उन्नयन होता है। हर कदम पर हमारे सामने चुनाव के लिए एक विकल्प मौजूद है । हाय । लेकिन क्या करें – हममें से अधिकांश लोग सरल मार्ग ही चुनते हैं– जिससे ऐन्द्रिक सुख प्राप्त हो सकें: जिसके परिणाम स्वरूप हम अवांछित कर्मों का भंडार संचित कर लेते हैं ।

मनुष्य अपने जीवन की त्रुटियों को इक्ट्ठा कर पहाड़ बना लेता है, जो हमारी तकदीर को दैत्य की शक्ल प्रदान कर देता है। हम अपनी तकदीर के स्वयं रचनाकार हैं। इस लिए अपने विचारों की शक्ल और स्वरूप के बारे में हमें अत्यंत सतर्क रहने की जरूरत है, ध्यान रहे कि प्रत्येक विचार अपने आप के जीवन में बीज का कार्य करता है, इसलिए आज आप अपने जीवन में जो बोएंगे, कल वही आप को स्वयं काटना है। आप अपने कर्म बदलिए, जिससे आपके जीवन की परिस्थितियाँ भी बदलेंगी और जहाँ तक अपने कर्म बदलने की बात है, तो उसके लिए आप अपने सोचने का ढंग बदलिए, आपकी बदली हुई विचारधारा– आपके कर्मों का स्वरूप भी बदल देगी।

लक्ष्य : उत्तरदायित्व

सुनील दुपारे
संयुक्त महाप्रबंधक (मा.सं)

किसी कार्यालय, संस्था, कारखाने या विभाग में महत्वपूर्ण अथवा उच्च पद पर आसीन व्यक्ति को उसे दिए गए पद के अनुरूप उत्तरदायी होना पड़ता है, उसे स्वयं को तो अपने साथ काम करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को योग्यता, स्वास्थ्य, वचनबद्धता और सफलतापूर्वक कार्य निष्पादन के प्रति सकारात्मक सोच बनाए रखने का उत्तरदायित्व भी उस पर होता है यह उत्तरदायित्व प्रत्येक स्तर पर व्यक्ति को शक्तिशाली बनाने में सहायक सिद्ध होता है, भले ही व्यक्ति उच्च आसन पर बैठा बडा अधिकारी हो या कार्यालय में कार्य करने वाले अन्य स्टॉफ सदस्य ही क्यों न हो इससे व्यक्ति के साथ कार्य करने वाले सदस्यों का मनोबल सदैव उच्च बना रहता है।

यह स्मरण रखना चाहिए कि व्यक्ति जिस लक्ष्य की ओर बढ़ना चाहता है, उसके लिए प्रारंभ उसे ही करना होगा, समय मुहूर्त और संसाधनों की कमी का कारण बताते हुए लक्ष्य की प्राप्ति की ओर आगे बढ़ने के श्री गणेश से भागने का तात्पर्य स्वयं को पीछे ले जाना ही है, समय बहुत तीव्र गति से आगे बढ़ना रहता है, आरंभ करने के लिए समुचित समय की प्रतीक्षा में बैठे रहने की अपेक्षा कार्य तुरंत आरंभ किया जाए, अन्यथा आगे अनेक समस्याएँ पैदा हो सकती है। यदि अच्छा प्रारंभ करने में सफलता मिल गई, तो आगे के मार्ग स्वयं खुलते जाएँगे और किसी क्षेत्र या प्रयोजन के लिए काम करने के प्रति आत्मविश्वास व साहस बढ़ता जाएगा।

लक्ष्य प्राप्ति में एक और बात बड़ी कारगर सिद्ध होती है, वह है – कि व्यक्ति जिस प्रोजेक्ट / कार्य के लिए काम कर रहा है, उस में उसके प्रति कितनी लगन, निष्ठा या रूचि है, ऐसे उपाय निरन्तर करते रहने चाहिए, जिससे काम के प्रति रूचि और लगन बनी रहें, क्योंकि रूचि और लगन से ही लक्ष्य प्राप्ति के प्रति उत्साह बढ़ता है और यही उत्साह लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में आगे ले जाने में सहायक होता है।

प्रत्येक लक्ष्य की प्राप्ति के मार्ग में अनेक बाधाएँ आती है, संभवतः वे भी परीक्षा लेने का संकल्प ले कर आती है, ऐसे में बाधाओं से घबराना और डरकर भागना असफलता का प्रतीक है, आगे आनेवाली बाधाओं को दूर करने के लिए डटे रहना और उन बाधाओं से बाहर निकलने के लिए पूरे मन और साहस से काम करने से लक्ष्य की ओर आगे बढ़ना आसान हो जाता है।

इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि जब मंजिल नजदीक होती है, तब ही विश्वास डगमगाता है, यदि लक्ष्य प्राप्ति के लिए आगे बढ़ते समय किसी कारणवश विश्वास डगमगाने लगे, तो अपने अन्दर की सम्पूर्ण ऊर्जा को पुनः केन्द्रित कर स्वयं में उसका संचय किया जाए, फिर देखिए, यही ऊर्जा मंजिल तक पहुँचाने में कितनी सहायक होती है।

किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए साधना जरूरी है यह तभी पूरी होगी, जब व्यक्ति अपने सिद्धातों पर अटल एवं सकारात्मक रहे।

सभी मनोविकारों से दूर रहते हुए चरित्रवान व्यक्ति की सोच सकारात्मक होती है, सकारात्मक का गुण कठिन से कठिन लक्ष्य प्राप्त करने में सहायक होता है महान व्यक्तियों की दूर- दृष्टि, जोखिम उठाने की क्षमता, रणनीति कौशल, ओजस्वी वाणी, संघर्ष टालने की क्षमता, अपना भविष्य देखने की क्षमता और उसे साकार करने की ललक जैसे गुण उन्हें महान बनाते है इसलिए कुछ कर गुजरने की प्रबल महत्वाकांक्षा पूरी करने के लिए सकारात्मक मानसिकता बहुत जरूरी है।

अटल आत्मविश्वास, सकारात्मक सोच के साथ लक्ष्य निर्धारित किया जाए, तथा अपने उच्च मानक तय करते हुए अपनी क्षमता का विस्तार करने की कोशिश की जाए, तो लक्ष्य अथवा उद्देश्य पूरा होना असंभव नहीं उपलब्धियों का सीधा संबंध व्यक्ति के विचारों और आत्मबल से होता है लक्ष्य प्राप्त करने के कार्य को चुनौतीपूर्ण माना जाए, परन्तु असंभव नहीं ।

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा–ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ।
। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ।

भारतीय संदर्भ में वसीयत

विक्रम सिंह चौधरी
उप प्रबंधक (विधि)

मूल बातें

वसीयत संपत्ति के स्वैच्छिक मरणोपरांत निपटान के लिए एक कानूनी घोषणा है। वसीयत से संबंधित कानून भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम, 1925 में पाया जा सकता है । इस अधिनियम की धारा 58 में कहा गया है कि कानून मुसलमानों को छोड़कर सभी पर लागू होता है। वसीयत की आवश्यक विशेषताएं हैं:

1. वसीयतकर्ता की मृत्यु के बाद वसीयत प्रभावी होने का एक इरादा होना चाहिए।
2. यह संपत्ति के संबंध में इरादे की कानूनी घोषणा है।
3. संपत्ति के संबंध में घोषणा में संपत्ति का निपटान शामिल होना चाहिए, न कि केवल उत्तराधिकारी की नियुक्ति;
4. किसी वसीयत को वसीयतकर्ता द्वारा अपने जीवनकाल में किसी भी समय बदला या रद्द किया जा सकता है। यह कोडिसिल नामक उपकरण के माध्यम से किया जा सकता है।

एक वसीयतकर्ता एक निष्पादक (एक व्यक्ति जिसे वसीयत के निष्पादन की जिम्मेदारी सौंपी गई है) नियुक्त करने का विकल्प चुन सकता है, जिसके विफल होने पर न्यायालय द्वारा एक प्रशासक नियुक्त किया जा सकता है।

वसीयत में क्या शामिल होना चाहिए?

वसीयत में निम्नलिखित विवरण शामिल होने चाहिए:

1. **वसीयतकर्ता का विवरण–** नाम, उम्र, पता और अन्य विवरण जो यह पहचानने में मदद करेंगे कि वसीयत कौन कर रहा है और कब तैयार की जा रही है।
2. **घोषणा –** यह बहुत महत्वपूर्ण है कि वसीयतकर्ता घोषणा करता है कि वसीयत लिखते समय वह स्वस्थ दिमाग का है और किसी भी दबाव से मुक्त है।
3. **लाभार्थी का विवरण –** इस वसीयत से किसे लाभ होगा और संपत्ति किसे विभाजित की जाएगी, इसका विवरण उनके नाम, उम्र, पता और वसीयतकर्ता से संबंध के रूप में दिया जाना चाहिए।
4. **वसीयत का निष्पादक –** एक निष्पादक नियुक्त करना बहुत महत्वपूर्ण है, जो यह सुनिश्चित करेगा कि वसीयत वसीयतकर्ता द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुसार की जाएगी। वसीयतकर्ता का नाम, उम्र, पता और संबंध भी निर्दिष्ट किया जाना चाहिए।
5. **संपत्ति और संपत्तियों का विवरण –** एक वसीयतकर्ता के पास मौजूद संपत्तियों और संपत्तियों के सभी विवरणों को सूचीबद्ध करना उचित है, और वे कौन से हैं, जो वसीयत में शामिल होंगे। वह वहां मौजूद किसी विशिष्ट संपत्ति की सूची भी बना सकता है।
6. **शेयर का विभाजन –** प्रत्येक लाभार्थी के पास संपत्ति पर जो हिस्सा है या किसे क्या मिलेगा, इसका विवरण पूर्ण विवरण में सूचीबद्ध किया जाना है। यदि संपत्ति किसी नाबालिग को दी जानी है, तो वसीयत में नाबालिग के लिए एक संरक्षक को भी सूचीबद्ध किया जाना चाहिए।
7. **विशिष्ट निर्देश –** वसीयतकर्ता को वसीयत निष्पादित करने के संदर्भ में निर्देश देना चाहिए और यदि कोई निर्देश हैं तो निर्दिष्ट करना चाहिए।
8. **गवाह –** कम से कम 2 गवाहों की उपस्थिति में वसीयतकर्ता द्वारा हस्ताक्षर होना चाहिए। गवाहों को वसीयत के विवरण जानने की आवश्यकता नहीं है, उन्हें बस यह सत्यापित करना होगा कि वसीयतकर्ता द्वारा हस्ताक्षर उनसे पहले किए गए थे।
9. **हस्ताक्षर –** वसीयतकर्ता को अंतिम बयान के बाद वसीयत पर तारीख के साथ हस्ताक्षर करना चाहिए।

वसीयत तैयार करते समय कौन सी सामान्य गलतियाँ करने से बचना चाहिए?

वसीयत तैयार करते समय निम्नलिखित गलतियों से बचना चाहिए:

1. संपत्ति के बारे में विशिष्ट न होना।
2. यदि संपत्ति की स्थिति में परिवर्तन हो तो वसीयत में आवश्यक परिवर्तन न करना।
3. यदि आप कोई नई वसीयत बना रहे हैं, तो अपने द्वारा बनाई गई पिछली वसीयत को रद्द करने की घोषणा नहीं कर रहे हैं।
4. निष्पादक के रूप में किसी इच्छुक पक्ष की नियुक्ति।
5. नाबालिग बच्चों के लिए अभिभावक की नियुक्ति न करना।

वसीयत के अंतर्गत कौन सी संपत्ति शामिल/वसीयत की जा सकती है?

सभी चल और अचल संपत्तियां जैसे अचल संपत्ति, सावधि जमा, बैंक खाते में पैसा, प्रतिभूतियां, बांड, बीमा पॉलिसियों की कार्यवाही, सेवानिवृत्ति लाभ, कला संग्रह, कीमती धातुएं (सोना, चांदी आदि), ब्रांड नाम / ट्रेडमार्क और बौद्धिक संपदा अधिकार।

वसीयत का पंजीकरण – वसीयत का पंजीकरण कराना अनिवार्य नहीं है। यह वसीयतकर्ता पर निर्भर है कि वह चाहता है या नहीं। हालाँकि, यदि कोई वसीयत पंजीकृत है, तो यह सबूत का एक दस्तावेज होगा, जो रजिस्ट्रार के हाथों में सुरक्षित रहेगा, क्योंकि इसके बाद इसके साथ छेड़छाड़ नहीं की जा सकती है। मूल वसीयत नष्ट हो जाने या खो जाने की स्थिति में, उप–रजिस्ट्रार के कार्यालय से प्रमाणित प्रति प्राप्त की जा सकती है।

क्या रजिस्ट्रेशन के बाद वसीयत बदली जा सकती है?

एक वसीयतकर्ता (वसीयत का मालिक) के रूप में, कोई भी व्यक्ति जब भी उचित समझे वसीयत को बदल सकता है। एक बार वसीयत में बदलाव करने या नई वसीयत बनाने के बाद पिछली सभी वसीयतें अपने आप रद्द हो जाती है।

क्या हस्तलिखित वसीयत कानूनी है?

हां, भारत में हस्तलिखित वसीयत वैध है। हालाँकि, उन्हें सुपाठ्य होना चाहिए और वैध वसीयत के मानदंडों या अनिवार्यताओं का भी पालन करना चाहिए्।

नमूना

वसीयत का एक विशिष्ट प्रारूप इस प्रकार है:–

मैं, (वसीयतकर्ता का नाम), का बेटा..., उम्र लगभग..., का...। धर्म, ... का नागरिक, ... में रहता है, इसके द्वारा इसे मेरी अंतिम वसीयत और वसीयतनामा घोषित करता हूं, जिसे मैं इस..... दिन.....2024 को..... (''वसीयत'') में निम्नानुसार बनाता हूं:

घोषणा

1. मैं इसके द्वारा अपनी सभी पिछली वसीयतें और उनसे जुड़ी संहिताएं, यदि कोई हों, रद्द करता हूं।
2. मैं अच्छे स्वास्थ्य और स्वस्थ दिमाग और क्षमता वाला हूं और मैं यह वसीयत अपनी स्वतंत्र इच्छा से कर रहा हूं।

निष्पादकों की नियुक्ति

3. जहां तक इस वसीयत का संबंध है, मैं ..... को अपनी संपत्ति (निष्पादक) के एकमात्र निष्पादक और प्रशासक के रूप में नियुक्त करता हूं, जो ..... में रहता है।

अंत्येष्टि व्यय, कर और शुल्क का भुगतान

4. निष्पादक, मेरी संपत्ति से, मेरे अंतिम संस्कार और अंतिम संस्कार समारोहों के लिए उतनी राशि खर्च करेगा जितनी आवश्यकता हो सकती है। मेरा निष्पादक किसी को उसका हिसाब देने के लिए बाध्य नहीं होगा।
5. मैं इसके द्वारा अपने निष्पादक को ऐसे सभी ऋणों, देनदारियों, करों, कर्तव्यों, शुल्कों आदि का भुगतान करने का निर्देश देता हूं, जो संपत्ति से संबंधित हैं और जिन्हें मैं अपने निधन के बाद अपनी संपत्ति से ही छोड़ सकता हूं। ऐसी संपत्ति का शेष एकत्र किया जाएगा और नीचे निर्दिष्ट तरीके से निपटाया जाएगा।

संपदा का हस्तांतरण

6. इस वसीयत की तारीख पर मेरे पास कुछ संपत्तियां और परिसंपत्तियां हैं, जिन्हें अनुसूची ए में सूचीबद्ध किया गया है, जो संपत्ति का हिस्सा है। अनुसूची ए में सूचीबद्ध संपत्तियां मेरे स्वामित्व वाली सभी संपत्तियों की एक विस्तृत सूची नहीं हैं और उपरोक्त संपत्तियों का उल्लेख केवल निष्पादक को एक संकेत और आगे बढ़ने का निर्देश देने के लिए है।
7. मैं निम्नलिखित संपत्तियों में अपने सभी अधिकार, शीर्षक और हित ..... को, पूरी तरह से और हमेशा के लिए देता हूं, तैयार करता हूं और वसीयत करता हूं: संपत्ति प्राप्त करने वाले व्यक्तियों के नामों का उल्लेख करें, और यदि वह व्यक्ति है तो एक वैकल्पिक नाम का भी उल्लेख करें वसीयत प्राप्त करने के लिए वसीयत के लेखक का निधन हो चुका है।

निष्पादक को प्राधिकार

8. मैं इसके द्वारा आगे घोषणा करता हूं कि मेरे निष्पादक के पास मेरे किसी भी/सभी वित्तीय निवेशों को बेचने, कॉल करने और पैसे में परिवर्तित करने की पूरी शक्तियां और अधिकार होंगे, जो मेरे निधन के समय मेरे पास होंगे और उसकी आय को वितरित करेंगे।
9. निष्पादक निष्पादन और प्रोबेट औपचारिकताओं को पूरा करने के लिए किए गए उचित खर्चों की प्रतिपूर्ति मेरी संपत्ति से कर सकता है।
10. निष्पादक को मेरी इच्छा के अनुसार अपनी जिम्मेदारियों को बेहतर ढंग से निभाने के लिए किसी भी पेशेवर सेवा को नियुक्त करने और परामर्श देने का अधिकार होगा।
11. मैं इसके द्वारा विशेष रूप से यह स्पष्ट करता हूं कि मेरा निष्पादक मेरी संपत्ति के प्रशासन में होने वाले किसी भी कार्य या चूक के लिए व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार नहीं होगा या उसे जिम्मेदार नहीं ठहराया जाएगा।
12. इसके साक्ष्य में, मैं ....., 2024 के इस ..... दिन पर अपनी अंतिम वसीयत और वसीयतनामा पर हस्ताक्षर करता हूं।

वसीयतकर्ता के हस्ताक्षर	गवाह 1 के हस्ताक्षर	गवाह 2 के हस्ताक्षर

नोट : ध्यान दें कि यदि आपकी संपत्ति बहुत बड़ी है या आपके वारिसों के बीच विवाद हो सकते हैं, तो आपको एक प्रमाणित विधिवद की सलाह लेना बेहतर हो सकता है। वह आपको सही और कानूनी तरीके से वसीयत बनाने में मदद कर सकता है।

संभावनाओं को अनलॉक करना
भारत में म्यूचुअल फंड के लिए एक व्यापक मार्गदर्शिका

सौरभ प्रजापत
उप प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)

परिचय : व्यक्तिगत वित्त के गतिशील परिदृश्य में, म्यूचुअल फंड विविध, पेशेवर रूप से प्रबंधित और सुलभ निवेश विकल्प चाहने वाले निवेशकों के लिए एक प्रकाश स्तंभ के रूप में उभरे हैं। भारत अपनी बढ़ती अर्थव्यवस्था और बढ़ते निवेशक आधार के साथ, म्यूचुअल फंड भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। इस व्यापक मार्गदर्शिका का उद्देश्य भारतीय संदर्भ में म्यूचुअल फंड के रहस्यों को उजागर करना है, जिसमें उनकी मूल बातें, कार्यप्रणाली, प्रकार, निवेश के रास्ते, शीर्ष प्रदर्शनकर्ता और कर निहितार्थ के महत्वपूर्ण पहलू शामिल हैं।

प्रश्न 1 : म्यूचुअल फंड क्या हैं?

संक्षेप में, म्यूचुअल फंड एक सामूहिक निवेश माध्यम है, जो स्टॉक, बॉन्ड या अन्य प्रतिभूतियों के विविध पोर्टफोलियो में निवेश करने के लिए कई निवेशकों से पैसा इकट्ठा करता है। भारत में, भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) पारदर्शिता, निवेशक सुरक्षा और बाजार की अखंडता सुनिश्चित करते हुए म्यूचुअल फंड की देखरेख करता है।

प्रश्न 2 : म्यूचुअल फंड कैसे काम करते हैं ?

म्यूचुअल फंड का कामकाजी तंत्र निवेश निर्णय लेने में फंड मैनेजर की भूमिका के इर्द-गिर्द घूमता है। निवेशक म्यूचुअल फंड में यूनिट या शेयर खरीदते हैं और फंड मैनेजर एक विविध पोर्टफोलियो बनाने के लिए इन फंडों का उपयोग करता है। नेटएसेटवैल्यू (एनएवी) म्यूचुअल फंड की परिसंपत्तियों के बाजार मूल्य को घटाकर उसकी देनदारियों को दर्शाता है, जो खरीद और बिक्री का आधार प्रदान करता है।

निवेशक एनएवी पर म्यूचुअल फंड में प्रवेश और निकास कर सकते हैं, जिससे यह एक लचीला और तरल निवेश मार्ग बन जाता है। व्यवस्थित निवेश योजना (एसआईपी) ने भारत में काफी लोकप्रियता हासिल की है, जिससे निवेशकों को नियमित रूप से एक निश्चित राशि का योगदान करने, वित्तीय अनुशासन को बढ़ावा देने और समय के साथ निवेश की लागत का औसत निकालने की अनुमति मिलती है।

प्रश्न 3 : म्यूचुअल फंड के प्रकार

- **इक्विटी फंड :** ये फंड मुख्य रूप से शेयरों में निवेश करते हैं, जिससे निवेशकों को कंपनियों की संभावित वृद्धि में भाग लेने का अवसर मिलता है।
- **डेट फंड :** सरकारी बॉन्ड और कॉरपोरेट डिबेंचर जैसी निश्चित आय वाली प्रतिभूतियों पर केंद्रित, डेट फंड इक्विटी फंड की तुलना में कम जोखिम के साथ स्थिर रिटर्न प्रदान करते हैं।
- **हाइब्रिड फंड :** इक्विटी और ऋण दोनों को संतुलित करते हुए, हाइब्रिड फंड का लक्ष्य विकास और स्थिरता के बीच एक सामंजस्यपूर्ण मिश्रण बनाना है।
- **इंडेक्स फंड :** ये फंड एक विशिष्ट बाजार सूचकांक को प्रतिबिंबित करते हैं, जिससे निवेशकों को व्यापक बाजार के प्रदर्शन को दोहराने की अनुमति मिलती है।
- **सेक्टोरल फंड :** प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य सेवा या वित्त जैसे विशिष्ट क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करते हुए, सेक्टोरल फंड निवेशकों को विशेष उद्योगों की विकास क्षमता का लाभ उठाने में सक्षम बनाते हैं।

प्रश्न 4 : मैं भारत में म्यूचुअल फंड में कैसे निवेश कर सकता हूं?

भारत में म्यूचुअल फंड में निवेश करना एक सीधी प्रक्रिया है। निवेशक सीधे परिसंपत्ति प्रबंधन कंपनियों (एएमसी) या बैंकों और

ऑनलाइन प्लेटफॉर्म जैसे मध्यस्थों के माध्यम से निवेश करना चुन सकते हैं। चरणों में आम तौर पर शामिल हैं:

- **केवाईसी अनुपालन :** म्यूचुअल फंड में निवेश करने से पहले अपने ग्राहक को जानें (केवाईसी) प्रक्रिया को पूरा करना अनिवार्य है।
- **फंड का चयन:** वित्तीय लक्ष्यों और जोखिम सहनशीलता के आधार पर, निवेशक उस म्यूचुअल फंड का प्रकार चुन सकते हैं, जो उनके उद्देश्यों के अनुरूप हो।
- **निवेश प्लेटफॉर्म :** निवेशक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, मोबाइल ऐप या एएमसी या मध्यस्थों के भौतिक कार्यालयों में जाकर निवेश कर सकते हैं।

प्रश्न 5: भारत में निवेश के लिए सर्वोत्तम म्यूचुअल फंड

सर्वोत्तम म्यूचुअल फंड की पहचान करने के लिए किसी व्यक्ति के वित्तीय लक्ष्यों, जोखिम उठाने की क्षमता और निवेश क्षितिज की गहन समझ की आवश्यकता होती है। कुछ उल्लेखनीय म्यूचुअल फंड हैं :

- **लार्ज एंड मिडकैप फंड :** मिराएएसेटलार्ज एंड मिडकैप फंड ने बाजार की स्थितियों में लचीलेपन का प्रदर्शन किया है, जो लार्ज और मिड-कैप दोनों क्षेत्रों में पूंजी लगाने के लिए एक संतुलित दृष्टिकोण प्रदान करता है।
- **लार्जकैप फंड :** आईसीआईसीआई प्रूडेंशियलब्लूचिपफंडलार्ज-कैप क्षेत्र में अपनी स्थिरता और लगातार प्रदर्शन के लिए जाना जाता है, जो इसे जोखिम से बचने वाले निवेशकों के लिए एक विश्वसनीय विकल्प बनाता है।
- **मिडकैप फंड :** पीजीआईएम इंडिया मिडकैपअपॉर्चुनिटीजफंडमिड-कैप सेगमेंट पर ध्यान केंद्रित करता है, इस क्षेत्र में उभरती कंपनियों की विकास क्षमता का दोहन करता है।
- **स्मॉलकैप फंड :** निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड, एसबीआई स्मॉलकैप फंड और टाटा स्मॉलकैप फंड गतिशील स्मॉल-कैप सेक्टर में निवेश चाहने वाले निवेशकों के लिए उल्लेखनीय विकल्प है।

प्रश्न 6 : भारत में म्यूचुअल फंड की कर देयता

प्रभावी वित्तीय नियोजन के लिए कर निहितार्थ को समझना महत्वपूर्ण है। भारत में म्यूचुअल फंड की कर योग्यता होल्डिंग अवधि और म्यूचुअल फंड के प्रकार पर निर्भर करती है:

- **इक्विटी फंड :** यदि एक वर्ष से अधिक समय तक रखा जाता है, तो लाभ को दीर्घकालिक माना जाता है और कर-मुक्त होता है। एक साल से कम की होल्डिंग पर 15% टैक्स लगता है।
- **डेट फंड :** तीन साल से अधिक समय तक रखे गए डेट फंड से होने वाले लाभ पर इंडेक्सेशन लाभ के साथ 20% कर लगाया जाता है। अल्पकालिक लाभ को निवेशक की आय में जोड़ा जाता है और लागू स्लैब दर के अनुसार कर लगाया जाता है।
- **टैक्स-सेविंग फंड (ईएलएसएस):** इक्विटी-लिंक्ड सेविंग स्कीम में तीन साल की लॉक-इन अवधि के साथ धारा 80सी के तहत कर लाभ प्रदान करती है।

निवेशकों को कर नियमों के बारे में सूचित रहना चाहिए, क्योंकि वे विकसित हो सकते हैं, जिससे म्यूचुअल फंड के कराधान पर असर पड़ सकता है।

निष्कर्ष : भारत में म्यूचुअल फंड विविध निवेशक आधार को पूरा करते हुए, धन सृजन के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में उभरे हैं। बुनियादी बातों को समझकर, निवेश विकल्पों की खोज करके और कर निहितार्थों को ध्यान में रखकर, निवेशक म्यूचुअल फंड परिदृश्य को प्रभावी ढंग से नेविगेट कर सकते हैं। चाहे आप नौसिखिया निवेशक हों या अनुभवी खिलाड़ी, भारतीय म्यूचुअल फंड बाजार पेशेवर फंड प्रबंधन और विविधीकरण के लाभों का आनंद लेते हुए आपकी वित्तीय आकांक्षाओं को प्राप्त करने के लिए ढेर सारे अवसर प्रदान करता है।

संविधान सभा ने 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी की संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया एवं इसके साथ ही संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंको का अंतरराष्ट्रीय स्वरूप यथा – 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 0 का प्रयोग किया जाए।

ई-रुपया (e₹)- भारत की अपनी डिजिटल मुद्रा

अमन कुमार
वरिष्ठ कार्यालय सहायक (मानव संसाधन)

भारत में डिजिटल लेन-देन दैनिक जीवन का अहम भाग बन गया है। वर्ष 2022-23 में यूनिफाइड पेमेंटस इंटरफेस (UPI) के माध्यम से लेन-देन की मात्रा और मूल्य में लगभग 120% की वृद्धि दर्ज की गयी है, जो आश्चर्यजनक एवं प्रोत्साहित करने वाली बात है।

1 दिसम्बर 2022 को सेंट्रल बैंक डिजिटल करेंसी (CBDC) या डिजिटल रुपया या ई-रुपया (e-rupee) लाँच हो गया है। यह नकदी का एक इलेक्ट्रॉनिक संस्करण है और मुख्य रूप से खुदरा लेन-देन पर लक्षित है। इसके तहत पायलट योजना में चार शहर - मुंबई, नई दिल्ली, बैंगलौर और भुवनेश्वर शामिल है।

ई-रुपया या CBDC

- यह RBI द्वारा डिजिटल रूप में जारी वैध मुद्रा या लीगल टेंडर है।
- ई-रुपया केंद्रीय बैंक पर दावे का प्रतिनिधित्व करने वाले डिजिटल टोकन के रूप में होगा, जिसे इलेक्ट्रॉनिक रूप से एक धारक से दूसरे धारक को स्थानांतरित किया जा सकता है।
- डिजिटल रुपये के उपयोग और इसके द्वारा किए जाने वाले कार्यो के आधार पर RBI ने डिजिटल रुपये को दो श्रेणियों में विभाजित किया है :

(क) खुदरा ई-रुपया (Retail E-rupee): यह मुख्य रूप से खुदरा लेन-देन के लिए नकदी का इलेक्ट्रॉनिक संस्करण है, जिसका संभावित रूप से लगभग सभी व्यक्तियों द्वारा उपयोग किया जा सकता है और यह भुगतान एवं निपटान के लिए सुरक्षित धन तक पहुँच प्रदान कर सकता है।

(ख) थोक CBDC (Wholesale सीबीडीसी) : इसे चुनिंदा वित्तीय संस्थानों तक सीमित पहुँच के लिए डिज़ाइन किया गया है।

सरकारी प्रतिभूतियों (G-Sec) और इंटरबैंक लेन-देन से जुड़े वित्तीय लेन-देन को इस तकनीक के माध्यम से रूपांतरित किया जा सकता है। यह परिचालन लागत, उपयोग और तरलता प्रबंधन के संदर्भ में पूंजी बाजार को अधिक कुशल एवं सुरक्षित भी बनाता है।

डिजिटल रुपया और इससे संबंधित कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु :

- जैसे हम अपने बैंक खाते में डिजिटल रूप में कैश देखते हैं, वालेट मे अपना बैलेन्स चेक करते हैं। कुछ इसी प्रकार डिजिटल रुपया भी देख और रख सकेंगें।
- CBDC ब्लॉकचैन टेक्नोलोजी पर आधारित है।
- पेपर करेंसी की तरह यह लीगल टेंडर है।
- CBDC इलेक्ट्रॉनिक रूप में अकाउंट दिखाई देगा, ICBDC को पेपर नोट के साथ बदला जा सकेगा।
- RBI, ई-रुपया पर ब्याज के पक्ष में नहीं हैं, क्योंकि लोग बैंकों से पैसे निकालकर इसे डिजिटल रूपये में बदल सकते हैं, जिससे बैंक विफल हो सकते हैं।
- ई-रुपया कागजी मुद्रा और सिक्कों के समान मूल्यवर्ग में जारी किए जाएंगे तथा बैंकों के माध्यम से वितरित किए जायेंगे।
- इसमे भागीदार बैंकों द्वारा पेश किए गए डिजिटल वालेट (Digital Wallet) के माध्यम से लेन-देन होगा और मोबाइल फोन एवं उपकरणों पर संग्रहित होगा।
- लेन-देन व्यक्ति से व्यक्ति (Person to Person-P2P) और व्यक्ति से व्यापारी (Person to Merchant-P2M) दोनों रूपों में हो

सकते हैं, IP2M लेन-देन (जैसे ख़रीदारी) के लिए व्यापार स्थल पर QR कोड होंगे।

- उपयोगकर्ता बैंकों से डिजिटल टोकन उसी तरह निकाल सकेंगें, जैसे वे वर्तमान में भौतिक नकद राशि निकलते हैं।

CBDC का वैश्विक परिदृश्य :

- जुलाई 2023 तक करीब 105 देश CBDC पर विचार कर रहे थे। दस देशों ने CBDC की शुरुआत कर दी है, जिनमें सबसे पहला वर्ष 2020 में बहामियन सैंड डॉलर था।

ई-रुपया के लाभ :

1. डॉलर पर निर्भरता कम करना- भारत अपने रणनीतिक साझेदारों के साथ व्यापार के लिए डिजिटल रूपये को एक अधिभावी मुद्रा (Superior Currency) के रूप में स्थापित कर सकता है, जिससे डॉलर पर निर्भरता कम हो सकती है।
   यह प्रगति एक ऐसे समय हो रही है, जब भारत पहले से ही रूस, संयुक्त अरब अमीरात एवं सऊदी अरब के साथ भारतीय रुपए में व्यापार के निपटारे के लिए वार्तारत है।
2. भौतिक मुद्रा को बनाए रखने की लागत मे कटौती - CBDC में नकदी पर निर्भरता कम करने की क्षमता है। एक सीमा तक बड़े नकदी उपयोग को CBDC द्वारा प्रतिस्थापित किया जा सकता है, उसी अनुरूप मुद्रा की छपाई, परिवहन, भंडारण और वितरण की लागत को भी कम किया जा सकता है।
3. विनियमित मध्यस्थता- परिचालन लागत को कम करने के साथ-साथ, यह लोगों को किसी भी निजी वर्चुअल मुद्रा (क्रिप्टोकरेंसी) के समान ही सुविधाओं की पेशकश करेगा, जबकि इसके साथ कोई जोखिम संलग्न नहीं होगा।
   क्रिप्टोकरेंसी के विपरीत, ई-रुपया विनियमित मध्यस्थता (Regulated Intermediation) एवं नियंत्रण व्यवस्था से लैस है, जो मौद्रिक एवं वित्तीय परिस्थितिकी तंत्र की अखंडता और स्थिरता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
4. भुगतान प्रणाली का वैश्वीकरण - CBDC भुगतान प्रणालियों का एक अधिक वास्तविक समय और लागत प्रभावी वैश्वीकरण भी सक्षम कर सकता है। यह सीमा-पर भुगतनों के निपटान के लिए सहयोगी/प्रतिनिधि बैंकों के महंगे नेटवर्क की आवश्यकता को समाप्त कर सकता है।
5. जेब में कैश रखने की नहीं पड़ेगी जरूरत।
6. डिजिटल रुपया को बैंक मनी और कैश में आसानी से कन्वर्ट कर सकेंगें।
7. विदेशों मे पैसे भेजने की लागत में आएगी कमी।
8. बिना इंटरनेट के भी काम करेगा ई-रुपया।

ई-रुपया से संबद्ध प्रमुख चुनौतियाँ :

1. गोपनियता और सुरक्षा संबंधी चिंता - ई-रुपया में संवेदनशील उपयोगकर्ता एवं भुगतान डेटा को बड़े पैमाने पर संचित करने की क्षमता है। इस डेटा का दुरुपयोग नागरिकों के निजी लेन-देन की जासूसी करने के लिए आसानी से किया जा सकता है।
   यदि उचित सुरक्षा प्रोटोकॉल के बिना इसे लागू किया जाता है तो एक ई-रुपया वर्तमान वित्तीय प्रणाली में पहले से मौजूद विभिन्न सुरक्षा एवं गोपनीयता संबंधी खतरों के दायरे और पैमाने को काफी हद तक बढ़ा सकता है।
2. डिजिटल डिवाइड और वित्तीय निरक्षरता-डिजिटल निरक्षरता (Digital Illiteracy) का उच्च स्तर भारत में ई-रूपए की सफलता में सबसे बड़ी चुनौती और बाधा है। उल्लेखनीय है कि पिछले वर्ष में इंटरनेट साक्षरता के मामले में भारत 120 देशों के बीच 73वें स्थान पर था।
   इसके अलावा, डिजिटल सेवाएँ स्थानीय भाषाओं में उपलब्ध नहीं है, जो वित्तीय साक्षरता के लिए एक बड़ी बाधा है।
3. स्वीकार्यता चिंता (Acceptability Concern)- ई-रूपए लेन-देन का पता लगा सकने की क्षमता (Traceability of e-rupee transactions) भारत में इसके प्रचलन के लिए एक बाधा बन सकती है, जहाँ नकद लेन-देन की सुगमता के कारण अत्यंत लोकप्रिय है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार वित्तीय वर्ष 2022-2023 में प्रचलित बैंक नोट की मात्रा में 5% की वृद्धि हुई है।

मार्डन आर्ट (उसका अर्थ)

दीपक अशोक पडवळ
संयुक्त महाप्रबंधक (त.प्र.)

बैंक नोट मुद्रणालय में समयपाल कार्यालय एवं नियंत्रण कक्ष (सी.आर.ओ.) के बीच हाल में एक दीवार पर टाईल्स के चौकोर टुकड़ों से बनी एक बहुत बड़ी मार्डन आर्ट बनी हुई है। ये मार्डन आर्ट बैंक नोट मुद्रणालय बना, तभी इसे बना दिया गया था। लगभग 50 वर्ष पूर्व ही इसे बना दिया गया था। ये मार्डन आर्ट हर अधिकारीगण, कर्मचारीगण और आने-जाने वाले का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करता है। परंतु उसे गौर से देखेंगे तो समझ आयेगा कि से मनुष्य जीवन पर आधारित एक दृश्य बना है। इसमें इन चौकोर टाईल्स के टुकड़ों से एक इंसानी आकृति उकेरी गई है, जिसकी दो आँखें हैं, दो हाथ, दौ पैर, सिर, पेट बना है। इस तस्वीर को दो भागों में बांटा गया है। इस ड्राईंग में इंसान का एक हाथ रूपये पैसे की तरफ बढ़ते दिखाई देते है, इस ड्राईंग में रूपयों को गोले के सिम्बॉल के रूप में दर्शाया गया है, यह आकृति इंसान के पास रूपया पैसा आने पर कैसा मनोभाव होता है, यह दर्शाता है। सर्वप्रथम वह मकान बनाता है, जिसे बड़े से ''एच'' के रूप में दर्शाया है। दूसरा विचार वाहन लाने का बनता है, इस दृश्य में एक ''कार'' बनी है। इंसान के पास रूपया-पैसा, मकान, कार आ गई, अब इंसानी फितरत है, जो बदलती रहती है। इंसान को नशा हो जाता है, इसलिए ड्राईंग में एक पैग बना हुआ दिखाया गया है, ऐसा करने पर उसका स्वास्थ्य खराब हो जाता है। नशे से आँख लाल दिखाई गई है एवं स्वास्थ्य खराब है तो पैर पतला दिखाया गया है। उसके सितारे गर्दिश में चले गये हैं। गोलों के रूप में दिखाया है। अब इस ड्राईंग का दूसरा दृश्य देखें, इसमें इंसान का दूसरा हाथ ऊपर है, जो आध्यात्म को दर्शाता है, इंसान का ऊपर वाले पर सम्पूर्ण भरोसा दिखाया है। इसमें इंसान का मन शांत है, इसलिए इंसान की आँखे सफेद है।

स्वास्थ्य अच्छा है तो पैर भी मोटा है। इसमें बड़ी माता एवं छोटी माता को दो टेकरी के रूप में दर्शाया गया है। इस दृश्य में सितारे आसमान छु रहे हैं, जो गोलों के रूप में दिखाये गये हैं। इंसान की मृगतृष्णा कभी पूरी नहीं हो पाती, इसलिए इंसान का पेट कभी भरता नहीं है, इसे ड्राईंग में खाली दिखाया गया है। अतः आप जीवन में सामंजस्य बनाये रखें। आप आर्थिक उपार्जन के साथ-साथ आध्यात्मिक उन्नति भी करते रहें। आपकी सफलता बी.एन.पी. की सफलता है। आप सब कुछ करें, पर ऊपर वाले का साथ कभी न छोड़ें। आप खूब तरक्की करें व सफल इंसान बनें। इस ड्राईंग का सार यही है, यही जिंदगी है। मार्डन आर्ट का महत्व भी यही है।

अंतर इकाई बेडमिंटन प्रतियोगिता विजेता, बी.एन.पी. देवास

अंतरमन में छोड़ छाप, टीम मैनेजर जितेन्द्र कुमार को बनाया,
तरकीब बाज कोच एवं कप्तान आशीष दत्त को नाशिक पहुँचाया ।
रहे शानदार खिलाड़ी पंकज सिंह ठाकुर ने लाजवाब खेल दिखाया,
इन्हीं की बदौलत दिव्यरंजन साहू ने खेल को आगे बढ़ाया ।
कायल हुए सभी एश्वर्या चौरे, दीपाली ठाकुर के जो महिला कप को भी दिलवाया,
ईधर देवास से क्रीड़ा सचिव सदानंद यादव को नाशिक भिजवाया ।
बेहतर शुरूआत की सर्वप्रथम जितेन्द्र कुमार ने नोएडा मिंट को हराया,
डबल्स में जितेन्द्र कुमार एवं दिव्यरंजन साहू ने फिर नोएडा पर परचम फहराया।
मिंटस की टीम का रास्ता एश्वर्या चौरे ने बंद करवाया,
टक्कर दी, सभी खिलाड़ियों ने सेमीफाईनल का सफर पाया ।

नर्मदापुरम को पंकजसिंह ठाकुर ने खुब छकाया,
प्रकट हुई एश्वर्या चौरे ने महिलाओं में रंग जमाया ।
तिसरा मैच डबल्स का पंकज सिंह ठाकुर, आशीष दत्त ने फाईनल में पहुंचाया,
योजनाबद्ध तरीके से सारे खिलाड़ियों ने अपनों का फाईनल में सजाया ।
गिराया, मनोबल नाशिक का पंकज सिंह ठाकुर ने फाईनल का परचम लहराया ।
तारीफ फिर करें आशिष दत्त व पंकज सिंह ठाकुर की, डबल्स में नाशिक को हराया।
विजेता बनी महिला में एश्वर्या चौरे जो महिला कप भी लाई,
जैसे ही विजेता घोषित किया, सी.एम.डी. श्री विजय रंजन सिंह सा. ने बी.एन.पी. में खुशियाँ छाई,
तारीफों के पुल बांधे सी.जी.एम. श्री एस. महापात्र सा. को ट्रॉफी के साथ दी बधाई ।

हृदयेश गेहलोत
हेडचेकर (नियंत्रण)

लीक से अलग चलने वाला ही अपनी अलग पहचान बनाता है।

बैंक नोट मुद्रणालय, देवास की आत्मकथा

हृदयेश गेहलोत
हेडचेकर (नियंत्रण)

''स्वर्ण जयंती वर्ष 1974-2024''

मैं बैंक नोट मुद्रणालय (बी.एन.पी. देवास) हूँ, भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, आर्थिक कार्य विभाग की औद्योगिक इकाई रहा हूँ। मेरी संकल्पना 1969 में की गई और मेरा स्थापना वर्ष 1974 रहा। मैं मध्यप्रदेश के देवास में 459.03 एकड़ के विशाल क्षेत्र में माँ चामुण्डा टेकरी के निकट स्थित हूँ। मेरे मुख्य भवन के निर्माण एवं मुद्रा (नोटों) के निर्माण तक की जवाबदारी श्री आर. रामास्वामी (विशेष कर्त्तव्य अधिकारी) (26.06.1969 से 03.03.1975) को सौंपी गई। मेरा उद्देश्य भारतीय रिजर्व बैंक के नोटों को वॉटर मार्क पेपर पर रू. 10/-, 20/-, 50/-, 100/-, 500/- वर्तमान में 200/- का उत्पादन करना तथा रिजर्व बैंक को भेजने का रहा है। मुद्रा (नोट) निर्माण के लिए प्रथम बार में 5 लाईन मशीनों यथा साइमल्टन की 5 मशीनें, इन्टाग्लिओ की 5 मशीनें, न्यूमोरोटा की 5 मशीनें तथा गिलोटीन की 7 मशीनों द्वारा, जो कि हायड्रोलिक मशीन 5000 शीट प्रति घंटा की मैन्युअल कटिंग से नोट बनाने की प्रक्रिया शुरू हुई। प्रारंभ में ''सागर महल'' देवास (मीठा तालाब के निकट) एक ऑफिस खोल कर तथा नाशिक (महाराष्ट्र) नोट प्रेस से कुछ कर्मचारियों और स्थानीय कर्मचारियों की भर्ती कर नोटों का उत्पादन शुरू किया गया। भारत में प्रथम बार उत्कीर्ण मुद्रण का निर्माण देवास में शुरू हुआ था। प्रथम बार में 29,246 मिलियन नोटों का उत्पादन हुआ और लगभग 7 मिलियन (रू. 10/- का 5 मिलियन एवं रू. 20/- का 2 मिलियन) परेषण मार्च 1975 को रेलवे द्वारा रिजर्व बैंक मुम्बई भेजा गया। उस समय नोटों को स्टेपल किया जाता था तथा कागज के पुड़े बनाकर (10 गड्डियों की) बनाकर लकड़ी के बक्सों में लोहे के पतरों की पेटी में सॉल्डर कर ऊपर से पत्ती (लोहे की) लगाकर डिस्पेच किया जाता था। नोट तैयार होने के पहले व बाद में प्रिंटिंग के साथ नियंत्रण विभाग भी बनाया गया था। मेरे कई विभाग बने, जैसे ऑफिस, प्लेट के लिए ब्लॉक फोर, मुद्रण विभाग, नियंत्रण विभाग, वर्कशॉप, वर्कशॉप (सिविल, मैकेनिकल, इलेक्ट्रीक, ए.सी. प्लांट), इंक फैक्ट्री, सुरक्षा के लिए सी.आई.एस.एफ. फायर विभाग भवन निर्माण के लिए सी.पी.डब्ल्यू.डी. (केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग) बना। सी.पी.डब्ल्यू.डी. ने रोड़ क्वार्टर स्कूल कल्याण केन्द्र, बैंक, अस्पताल आदि बनाये।

मुद्रा के लिए पूर्व में पेपर (वॉटर मार्क युक्त) विदेश से आता था तथा इंक भी विदेश से आती थी, जिन्हें गणना के पश्चात् ही मशीनों पर मुद्रण के लिए दिया जाता था तथा मुद्रित होने बाद पुनः गणना होती थी, ये प्रक्रिया प्रत्येक अनुभाग में होती थी प्रिंटींग एवं नियंत्रण विभाग एक दूसरे के पूरक हैं, जैसे पेपर ड्राइंग, साइमल्टन, इंटाग्लिओ, कलर सेक्शन, अंक मुद्रण, एन.सी.एस. सेक्शन, परिसज्जा दो, परिसज्जा तीन, कटपैक चार, कटपैक पाँच एवं पैकिंग अनुभाग, नम्बर शीट, एक्जाम ओल्ड चार, नम्बर शीट एक्जाम न्यू एवं न्यू वेरिफिकेशन हॉल ये थे।

क्रमानुसार विकास होने पर सन् 1976 में उत्कीर्ण मुद्रण मशीन नं. 06, 1985 में सहमुद्रण मशीन नं. 06, उत्कीर्ण मुद्रण मशीन नं. 07, कटपैक 01 1987, कटपैक 2 आने पर हाइड्रोलिक मशीन 8000 शीट प्रति घंटा स्वचालित ड्रम आधारित कटिंग स्पीड 50 पैकेट प्रति मिनिट से आधुनिकीकरण के कारण अब नोटों के बंडल पॉलिथीन में पैक होने लगे तथा 1997 में सहमुद्रण मशीन नं. 07, उत्कीर्ण मुद्रण मशीन नं. 08, अंक मुद्रण मशीन नं. 06, कटपैक 03 व 1998 में सहमुद्रण मशीन नं. 08, उत्कीर्ण मुद्रण मशीन नं. 09, अंक मुद्रण मशीन नं. 07, न्यूमेट्रिक मशीन 10,000 शीट प्रति घंटा पूर्णतः स्वचालित डिजिटल इलेक्ट्रॉनिक आधारित डी.ओ.एस. मशीन आने एवं तार की स्टेपल बंद होने से उत्पादन लगातार बढ़ता चला गया। सन् 2010 में निगमीकरण के बाद सन् 2011 में सहमुद्रण 09, उत्कीर्ण मुद्रण 10, अंक मुद्रण 08, कटपैक 04, बी.पी.एस. 01 आ गई तथा सालाना उत्पादन बढ़कर 2800 से ऊपर निकल गया। अब 2020 एवं 2022 में सहमुद्रण 10, उत्कीर्ण मुद्रण 11 एवं 12, अंक मुद्रण 09 एवं 10, कटपैक 05 आ गई, जो कि ऑनलाईन इन्स्पेक्शन सिस्टम युक्त पूर्णतः एच.एम.आई. आधारित आधुनिक मशीन रैंक आधारित कटिंग मशीन कटिंग स्पीड 85 पैकेट प्रति मिनिट हो गई, उत्पादन बढ़कर 4400 से 4500 प्रतिवर्ष होने लगा। इस तरह मेरा आधुनिकीकरण होता गया, पुरानी मशीनें निकाल दी गई एवं अब धीरे-धीरे आधुनिक मशीनें चलने लगीं।

पुरानी मशीनों में 1974 में लगी सहमुद्रण 05 मशीनें, उत्कीर्ण मुद्रण की 05 मशीनें, अंक मुद्रण की 05 मशीनें एवं जी.टी. की 05 मशीनें निकाल दी गई, इन्हीं मशीनों के साथ 1975 में भर्ती हुए कर्मचारी भी सेवानिवृत्त हो चुके हैं। 1984 एवं 1988 में भर्ती हुए कर्मचारी भी अब सेवानिवृत्त हो रहे हैं । वर्ष 2006 में एसपीएम सीआईएल के रूप में निगमीकरण के साथ-साथ मेरा (बीएनपी) नवीनीकरण भी हो चुका है और मैंने सजधज के साथ आधुनिकता का बाना पहन लिया है, साथ ही मैं आत्मनिभरता की ओर अपना कदम बढ़ाते जा रहा हूँ। अब कागज कारखाना नर्मदापुरम से कागज (वॉटर मार्क युक्त) बनकर आ रहा है एवं सुरक्षा स्याही, कारखाने में ही बनने लगा है। वर्तमान 2024 में सी.एस.आई. इंक भी देवास में ही बनने लगा है। हालही में कर्मचारियों की सुविधा के लिये नई सड़क, कर्त्तव्य पथ एवं स्वास्थ्य पथ का निर्माण हो गया है।

अंतर वैयक्तिक कौशल (Interpersonal Skills)

सिद्धार्थ श्रीवास्तव
प्रबंधक (मा.सं)

एक नवयुवक जिसका जन्म एक उच्च मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ था, बचपन से शिक्षा में आगे बढ़ते हुए पी. एच. डी. कर एक कॉलेज में प्राध्यापक की नौकरी शुरू करता है। नौकरी के एक साल में ही नियमित रूप से उसका अन्य साथियों एवं विद्यार्थियों के साथ लड़ना-झगड़ना शुरू हो गया। तत्पश्चात उसने दूसरी नौकरी शुरू की। वहाँ पर भी शुरुआत में ठीक चलता रहा, लेकिन कुछ समय पश्चात् वही समस्या शुरू हो गई। डॉक्टरेट की उपाधि होने के बावजूद भी वह आत्म निरीक्षण नहीं कर पाया कि क्यों उसके अन्य व्यक्तियों से सौहार्द्रपूर्ण संबंध स्थापित नहीं हो पा रहे हैं ?

दूसरा अन्य नवयुवक जो एक मध्यमवर्गीय परिवार से है, हायर सेकेण्डरी परीक्षा पास करने के उपरान्त कम्प्यूटर में डिप्लोमा कर एक सॉफ्टवेयर कंपनी में नौकरी की शुरुआत करता है। यहाँ वह बहुत मेहनत और अपने साथियों एवं वरिष्ठ लोगों के साथ अच्छे तालमेल से कार्य करता है। दो वर्षों में ही उसे विदेश जाने का अवसर मिलता है।

दोनों ही घटनाएँ एक-दूसरे से बिलकुल भिन्न नहीं है। ऐसी घटनाएं हम हर जगह देखते हैं। समाज में हम ऐसे कई व्यक्तियों को सफल होते हुए देखते हैं जिनमें साधारण कौशल एवं ज्ञान है, लेकिन उनका पारस्परिक व्यवहार बहुत अच्छा होता है। व्यक्ति की क्षमता का मूल्यांकन करने की पुरानी पद्धति है- आई क्यू। जिसके ऊपर शोध के उपरान्त यह पाया गया कि आई क्यू अकेले ही व्यक्ति की क्षमताओं को आँक नहीं सकता। तदुपरांत इमोशनल कोशिएन्ट (E.Q.) अस्तित्व में आया। यदि व्यक्ति अन्य व्यक्तियों के साथ परस्पर व्यवहार में संतुलन रखता है तो सफलता की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं। हाल ही में S. Q. यानी स्पिरिच्युएल कोशिएन्ट प्रचलित हुआ जो कि व्यक्ति की क्षमताओं के आकलन की व्यापक पद्धति दर्शाता है एवं व्यक्ति की समग्र क्षमताओं तथा उसके सदाचार से संबंधित मूल्यों एवं आध्यात्मिक श्रेष्ठता का भी आकलन करता है।

युनेस्को का इक्कीसवीं सदी में शिक्षा पर दस्तावेज

Learning the Treasure within सीखने के चार स्तंभ दर्शाता है जिसमें तीसरा स्तंभ Learning to live together यानी परस्पर साथ-साथ जीना सिखाता है। आधुनिक दृष्टि से जब तक व्यक्ति दूसरों के साथ सौहार्द्रपूर्ण तरीके से कार्यक्षेत्र एवं परिवार में जीना सीख नहीं लेता तब तक वह पूर्णतः शिक्षित नहीं बनता है सफलतम व्यक्ति की कल्पना करें तो उसकी विशेषताएँ निम्नानुसार होंगी :-

1. आशावादी विचारधारा।
2. अपने आस-पास के लोगों को अभिप्रेरित करने की क्षमता। खासतौर पर आपात स्थिति में।
3. व्यक्तिगत स्वार्थ से परे सेवा / कर्म को महत्व देना।
4. कार्यों की जिम्मेदारी स्वयं लेना।
5. दूसरों के साथ व्यवहार में पूर्वाग्रह से परे (Free from prejudices) रहता है।
6. वह अपने बुनियादी एवं सदाचार से संबंधित नियमों में दृढ़ विश्वास रखने वाला होता है।
7. दूसरों के साथ प्रसन्नतापूर्वक व्यवहार करता है।
8. वह दूसरों की स्वतंत्रता का आदर करता है।
9. स्वयं के दृष्टांत से दूसरों को प्रेरित करना, न कि आदेश से।
10. दूसरों के प्रति जागरुक रहना और दूसरों के कल्याण में रुचि रखना।

ये दस विशेषताएं हमारे परस्पर वैयक्तिक व्यवहार को सुधारने में मार्गदर्शक बन सकती हैं। इन्हीं बिन्दुओं का भगवद्गीता के माध्यम से विश्लेषण करते हैं :-

1. **आशावादी दृष्टिकोण :-** व्यक्ति जैसा सोचता है, वह वैसा बनता है। यदि वह सकारात्मकता से सोचता है तो जीवन के प्रति उसका रवैया सकारात्मक बनता है। गीता में कहा गया है कि व्यक्ति का गठन श्रद्धा से होता है। जैसी उसकी श्रद्धा वैसा वह बनता है (Man is constituted of faith. As is faith, so he verily is !)। एक व्यक्ति सकारात्मक दृष्टिकोण से सामान्यतः जीवन की सारी समस्याओं का निराकरण कर सकता है।
2. **अभिप्रेरण :-** गीता की शुरुआत अर्जुन विषाद योग से होती है। जिसमें अर्जुन एक महान योद्धा होने के बावजूद अपने सामने एक विशाल सेना जिसमें उसके वरिष्ठ, गुरु एवं पारिवारिक सदस्यों को योद्धा के रूप में देखकर, वह हतोत्साहित एवं भयभीत होकर श्रीकृष्ण के पास जाता है। ऐसी परिस्थिति

में श्रीकृष्ण की दृष्टि वास्तविक एवं सकारात्मक थी और वे अर्जुन के संशयों को समाप्त कर, उसकी शक्ति एवं उसे अपने गुणों की पहचान कराकर, युद्ध के लिए प्रेरित करते हैं।

3. **स्वार्थ से परे सेवा :–** लोगों के त्याग और बलिदान से समाज का विकास होता है। गीता में श्रीकृष्ण ने निष्काम भाव से, निजी स्वार्थ से परे रहकर अपने कर्म में प्रवृत्त होकर समाज की सेवा करने पर जोर दिया है।
4. **जिम्मेदारी की भावना :–** कई बार हम यह देखते हैं कि व्यक्ति सफलता का श्रेय खुद लेता है और असफलता का दोष दूसरों पर डालने की कोशिश करता है। गीता में श्रीकृष्ण हमें यह संदेश देते हैं कि सफलता या असफलता की जिम्मेदारी व्यक्ति को खुद लेनी चाहिए। व्यक्ति खुद ही अपना मित्र है और खुद ही अपना शत्रु। ऊँचे आदर्शों एवं लक्ष्यों के लिए निम्न स्तर के लक्ष्यों को छोड़ना चाहिए।
5. **समानता :–** कई संस्थान एवं परिवार टूट जाते हैं। वजह है असमानता से किया गया व्यवहा। सभी व्यक्तियों के साथ किया गया पक्षपात रहित व्यवहार एक स्वस्थ एवं आनंदित संस्थान या परिवार का निर्माण करता है। गीता के माध्यम से श्रीकृष्ण हमें सलाह देते हैं कि चाहे मित्र हो या शत्रु, मान हो या अपमान, प्रशंसा हो या आलोचना सभी अवस्थाओं में अपने मन को संतुलित बनाए रखें।
6. **दृढ आत्मविश्वास :–** संतुलित व्यक्ति वह होता है जो बिना सोचे परखे किसी की बातों को नहीं मानता है। उसे अपने आप में, अपने आदर्शों में पूर्ण विश्वास होता है जो उसके कार्य एवं व्यवहार में झलकता है। गीता में सम्यक् दृष्टि से सभी लोगों के साथ योग्य व्यवहार करने पर जोर दिया गया है ।
7. **प्रसन्नता के साथ किया गया व्यवहार :–** दूसरों के साथ सौहार्द्रपूर्ण संबंध के लिए जरूरी है सही शब्दों / वाणी का प्रयोग। कई बार संबंध गलत शब्दों/वाणी से बिगड़ते हैं। यह एक कला है कि सही शब्दों का प्रयोग सही व्यक्ति के आगे सही समय पर हो । गीता में श्रीकृष्ण ने सत्य, सुमधुर एवं कल्याणकारी वाणी की बात कही है।
8. **दूसरों की स्वतंत्रता का आदर :–** व्यक्ति की स्वतंत्रता का सबसे अच्छा उदाहरण गीता में है। श्रीकृष्ण ने अर्जुन को सारे उपदेश देने के बाद भी अपनी बुद्धि के अनुरूप निर्णय लेने के लिए कहा था। उन्होंने अपने विचार अर्जुन पर थोपे नहीं थे, केवल मार्गदर्शन किया था। स्वतंत्रता के आदर के लिए व्यक्ति में विनय होना जरूरी है।
9. **स्वयं के दृष्टांत से अन्यों को प्रेरित करना :–** केवल शक्ति के उपयोग से किसी से कार्य संपादित नहीं करवाया जा सकता, बल्कि अपने सद्गुणों से प्रेरित कर करवाया जा सकता है। व्यक्ति स्वयं कार्य के प्रति समर्पित न हो तो दूसरों को कार्य के प्रति समर्पित होने के लिए प्रोत्साहित नहीं कर सकता। श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है कि सामान्यतः लोग जिसे अपना आदर्श मानते हैं, उसी के आदर्शों का अनुसरण भी करते हैं। अतः समाज एवं संस्थान के वरिष्ठ व्यक्तियों की नैतिक जिम्मेदारी है कि वे ऐसा आचरण करें जो अन्य व्यक्तियों के लिए प्रेरक बनें।
10. **दूसरों का कल्याण :–** यदि व्यक्ति को अन्य लोगों के कल्याण में रुचि नहीं है तो अंततः वह स्वयं भी खुश / सुखी नहीं रह सकता एवं दूसरों को भी सुखी नहीं रख सकता। स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि अपने आपको खुश / सुखी रखने का आसान उपाय है कि आप यह देखें कि आपके आस–पास के अन्य लोग भी खुश / सुखी हैं।

गीता में श्रीकृष्ण ने कहा है कि श्रेष्ठ व्यक्ति वह है जिसमें इतनी सौहार्द्रता हो कि वह दूसरों के सुख और दुःख के प्रति जागृत रहे। हमें अपने साथ–साथ अन्य व्यक्तियों के सुख / खुशी का भी ख्याल रखना चाहिए।

भगवद्गीता जैसी मार्गदर्शिका के माध्यम से हम अच्छे पारस्परिक संबंधों का विकास कर अपने संस्थान एवं समाज में सौहार्द्रपूर्ण वातावरण का निर्माण कर सकते हैं।

संविधान की 8वीं अनुसूची में 22 भाषाओं को मान्यता प्राप्त है।
Constitution recognized 22 language in 8th Schedule.Y

1. 1. असमी 2. बंगला 3. गुजराती 4. हिंदी 5. कन्नड़ 6. कश्मीरी 7. मलयालम 8. मराठी 9. उड़िया 10. पंजाबी 11. संस्कृत 12. सिंधी 13. तमिल 14. तेलुगु 15. उर्दू 16. मणिपुरी 17. कोंकणी 18. नेपाली 19. मैथिली 20. बोड़ो 21. डोंगरी 22. संथाली (संस्कृत, सिन्धी, कश्मीरी – ये तीनों राज्य भाषा नहीं है)
2. 1. Assamese 2. Bengala 3. Gujarati 4. Hindi 5. Kannada 6. Kashmiri 7. Malayalam 8. Marathi 9. Oriya 10. Punjabi 11. Sanskrit 12. Sindhi 13. Tamil 14. Telugu 15. Urdu 16. Nepali 17. Manipuri 18. Konkani 19. Maithili 20. Dongri 21. Bodo 22. Santhali (These are not a state language - Sanskrit, Sindhi, Kashmiri) Nepali is a foreign language in our constitution.
3. हमारे संविधान की 8वीं अनुसूची में अंग्रेजी को शामिल नहीं किया गया है, यह एक सह आधिकारिक भाषा है। English is not been included in 8th schedule of our constitution, it is a co-of ficial language.

भूमंडलीकरण और हिन्दी

नितिन श्रीवास्तव
वरिष्ठ पर्यवेक्षक (क्रय अनुभाग)

भूमंडलीकरण वास्तव में पूँजीवादी विकास का पर्याय है। इसका मुख्य कार्य समस्त विश्व में राजनीति तथा अर्थव्यवस्था के साथ-साथ संस्कृति के परिदृश्य में भी एक विवशता का भाव भर देना है। इस दृष्टि से भूमंडलीकरण अप्रतिरोध्य कहा जाता है। इस पूँजीवादी भूमंडलीकरण की प्रकृति अधिपत्यवादी रही है। ईस्ट इंडिया कंपनी के उत्तराधिकारी जो कभी व्यापार के लिए आए थे, अब बहुराष्ट्रीय केंपनी के साथ बाजारवाद, उपभोक्तावादी सेंस्कृति तथा भूमंडलीकरण की राजनीति लेकर स्थापित हुए हैं। अतः हम कह सकते हैं कि भूमंडलीकरण पश्चिम के आधिपत्य के विस्तार की व्यवस्था है। आज सब कुछ बाजारवाद के यशीभूत है। सन् 1995 में गठित विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यू.टी.ओ.) इसमें प्रधारन है। इस बाजारवादी अर्थव्यवस्था का वर्चववादी विचारधारा के रूप में सर्वाधिक घातक प्रभाव अपने देश पर पड़ा है। भूमंडलीकरण का सर्वशक्तिशाली आधार प्रौद्योगिकी है।

आज के युग में प्रौद्योगिकीकरण होना विकासशीलता का घोतक माना जाता है। आत सुचना प्रौद्योगिकी ने जितना वित्तीय पूँजी को शक्तिशाली बनाया है उतना ही संचार माध्यमों पर भी नियंत्रण रखा है। इसमें इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने भूमंडलीकरण को अधिक गतिशील तथा अनिवार्य कर दिया है। आज हम भौतिक समृद्धि के मध्य आत्मिक रिक्तता से गुजर रहे हैं। उपभोक्तावाद, भूमंडलीकरण, मीडिया तथा विज्ञापनों का कुप्रभाव आज साहित्य एवं सौंदर्य चेतना पर पड़ा है क्योंकि इन्हीं के कारण साहित्य तथा सौंदर्य चेतना का मनुष्य की अनुभूति तथा संवेदनाओं से बहिष्कार हुआ है।

आज की परिस्थितियों, मानव जीवन के क्रियाकलापों, जीवन शैली तथा मनोभावों में परिवर्तन आया है। भौतिकवादी दृष्टिकोण, उप-संस्कृति के उदय, मानवीय मूल्यों के विघटन, पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण, उपभोक्तावादी दृष्टि, विश्व बाजार का व्यापार प्रभाव तथा मीडिया जैसे शक्तिशाली साधनों ने बुद्धिजीवियों को दिग्भ्रमित किया है। हिन्दी का साहित्य भी इसके दुष्प्रभाव से मुक्त नहीं हो पाया है। विज्ञान और तकनीक के कृत्रिम उपादानों ने एक इंद्रजाल-सा फैला दिया है। चाक्षुष माध्यमों से साहित्य को सबसे बड़ी क्षति पहुँची है। मनुष्य अब मस्तिष्क प्रधान हो गया है उसका हृदय पक्ष गौण हो गया है।

आज भूमंडलीकरण के प्रभाव से हिन्दी भाषा तथा साहित्य संकट से आच्छन्न है। इसके कई कारण हैं । सर्वप्रथम कारण यह है कि सूचना प्रौद्योगिकी के विकास में सत्ता व्यवस्थाओं से जितने साधन उपलब्ध कराए जा रहे हैं उतने भाषा को नहीं । आज अपने ही देश में भाषा की उपयोगिता तथा उसके उपादेय के महत्व को जानकर उसे अपने अस्मिता के अंग के रूप में समझने वाली आत्मसजगता जागृत नहीं हो पाई है। आज इंटरनेट ने जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित किया है। कुछ दिनों पूर्व हमारी बहुभाषिकता तथा उसकी जटिलताओं का लाभ उठाकर अंग्रेजी ने अपना स्थान दृढ़ किया था किन्तु अब तो वह भूमंडलीकरण के कारण अंतर्राष्ट्रीय उद्योग-व्यवसाय की भाषा बन गई है। यह हमारी भाषाओं के अधिकार ही नहीं छीन रही प्रत्युत उसके स्वरूप को भी नष्ट तथा विकृत कर रही है। वैश्वीकरण के इस युग में अंग्रेजी का प्रभुत्व उच्च शिक्षा पर भी दर्शित होता है। अंग्रेजी माध्यम-शिक्षा के विस्तार के कारण उच्च शिक्षा में ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों से हिन्दी का निष्कासन हुआ है। उच्च शिक्षा में इंटरनेट का प्रभाव रहा है। भाषा की दृष्टि से भारत के समस्त उद्योगों में समस्त पदों के लिए एम.बी.ए. आवश्यक माना गया है। प्रबंधन की शिक्षा की हिन्दी में व्यवस्था अल्प होने के कारण हिन्दी का महत्त्व कम होता जा रहा है।

आज के इस युग में हिन्दी साहित्य एक अनुत्पादक विषय माना जा रहा है। उसका जितना उत्पादन होता हैं उसकी तुलना में 'माँग' की मात्रा कम हो रही है। आज कविता, नाटक उपन्यास, कहानी आदि विधाओं की उपयोगिता के संबंध में प्रश्नचिह्न लगाया जा रहा है। इसके संबंध में यह धारणा बनती रही है कि इसमें अर्थोपार्जन की तथा मानव संकृति के विकास की संभावनाएँ लुप्त होती जा रही हैं। उपभोक्तावादी मानसिकता के कारण ऐसे साहित्य के प्रति रुचि शनैः-शनैः कम होती जा रही है।

आज भूमंडलीकरण के कारण पठनीयता का प्रश्न खड़ा हुआ है। हिन्दी साहित्य के समांतर एक वीभत्स पठनीय साहित्य का बाजार में विक्रय हो रहा है। हिन्दी में वंशानुगत शिक्षा, संस्कृति अतीत के अनुभवों तथा संस्कारों की अव्याहत रूप से प्रवाहित परंपरा आज अवरुद्ध हुई है। आज पठनीयता रचनाधर्म का कम व्यापार धर्म का बृहत्तर हिस्सा है। हिन्दी साहित्य मर्यादावादी रहा है। वह अश्लीलता को प्रोत्साहन नहीं देता किंतु प्रकाशकों की अर्थोपार्जन की मानसिकता ने विश्व बाजार में ऐसे मूल्यहीन साहित्य का विक्रय कर जनता के मस्तिष्क को प्रदूषित किया है। अतः हिन्दी की पुस्तकें अंग्रेजी में अनुदित करने के उपरांत भी विश्व बाजार में नहीं बेची जाती । आज के आर्थिक साम्राज्यवाद के युग में हिन्दी साहित्य की इसी कारण उपेक्षा हो रही है।

50 वर्ष पूर्व हिन्दी में ज्योतिष, रसायन, राजनीति, गणित एवं नक्षत्र पर मौलिक लेखन किया जाता था किंतु आज विज्ञान, तकनीकी, कृषि, वाणिज्य, अर्थशास्त्र आदि पर मौलिक लेखन अत्यंत अल्प मात्रा में हो रहा है। कम्पयूटर के आगमन से भाषा उलझकर रह गई है।

अब अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक परिदृश्य में परिवर्तन आया है। अब साम्राज्यवाद का स्वरूप सैन्य साम्राज्यवाद न रहकर आर्थिक साम्राज्यवाद हो गया है। आज बहुर्राष्ट्रीय कंपनी पूर्णतः स्थापित हुई है। किंतु हिन्दी का साहित्य न ही इन अधुनातन आविष्कारों के साथ है और न ही आर्थिक साम्राज्यवाद इस देश में हैं। विकसित देशों में पुस्तकों को खरीदकर पढ़ने में लोगों की रुचि अधिक है किंतु हमारे देश में न ऐसी मानसिकता है और न ही इसकी प्रवृति । विकसित देशों को अंग्रेजी के अंतर्राष्ट्रीयकरण के कारण विशाल तथा व्यापक बाजार का लाभ प्राप्त हो रहा है। विश्व बाजार में प्रकाशकों की दृष्टि पूर्णतः व्यवसायिक रही है। दूसरी ओर प्रकाशक अंग्रेजी नोबल, बूकर जैसे पुरस्कार प्राप्त विद्वानों की पुस्तकें विश्व – बाजार में बेचते हैं। इसी कारण कई राष्ट्रों में अंग्रेजी में साहित्य–लेखन की प्रवृत्ति बढ़ रही है। वहाँ पुस्तक विक्रय का राष्ट्रीय आय में योगदान है। हमारे देश में पुस्तक की राशि तथा जो रायल्टी मिलती है वह न प्रचार का कारण बन पाती है और न ही लेखकीय उत्साह का । अतः हिन्दी साहित्य स्तरीय होने के उपरांत भी अंग्रेजी साहित्य की स्पर्द्धा में पीछे रह गया है। पत्र–पत्रिकाएँ अथवा इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों का उद्देश्य सूचनाओं का व्यापार करना है। उपभोक्ता संस्कृति के प्रसार ने हिन्दी साहित्य को भी मात्र एक उत्पाद माना है। इलेक्ट्रॉनिक माध्यम और सूचना प्रसार के शक्तिशाली प्रसार ने मनोरंजन के जगत को वशीभूत किया है। इसमें हिन्दी, साहित्य सृजन का प्रतीक नहीं बन सकी है। आज प्रकाशकों की दृष्टि व्यावसायिक होने के कारण हिन्दी की साहित्यिक पत्रिकाएँ विज्ञापनों के माध्यम से सुदृढ़ आर्थिक आधार प्राप्त करने में असमर्थ रही हैं ।

आज भाषा के रूप में प्रचलित प्रामाणिक हिन्दी अपना मानक रूप अर्जित करने की प्रक्रिया में अपने मूल से विच्छिन्न हो रही है। अतः उसका स्वरूप अधिक औपचारिक प्रतीत हो रहा है तथा यह निरंतर कृत्रिम और यांत्रिक होती जा रही है ।

अंततः हम कह सकते हैं कि वैश्वीकरण के होते हुए हिन्दी में इतनी क्षमता निश्चित है कि वह सूचना तकनीक की चुनौतियों का सामना करते हुए स्वयं को इस नए परिवेश में समायोजित कर ही लेगी । आज विश्वव्यापी आठ भाषाओं में हिन्दी का तीसरा स्थान है। एक जीवित भाषा के रूप में करोड़ों लोगों द्वारा विभिन्न परिवेश तथा संदर्भों में प्रयुक्त हिन्दी का भविष्य उज्ज्वल है। आज प्रवाह पूँजी का है उसके सम्मुख समस्त मूल्य मर्यादा महत्वहीन हो गई है। अतः आज आवश्यकता है कि हिन्दी आधुनिक वैज्ञानिक उपादनों से सज्जित हो, वह कंप्यूटर और इंटरनेट की भाषा हो सके। हिन्दी को नया आयाम देने की दृष्टि से पत्र–पत्रिकाएँ, पुस्तकों के प्रकाशन का विकास आवश्यक है । भूमंडलीकरण की चुनौती का सामना करने के लिए हिन्दी को अनुवाद के रूप में अन्य भाषाओं से जुड़कर निरंतर आधुनिकता बोध से सशक्त होना पड़ेगा। अतः उत्कृष्ट अनुवाद अनिवार्य है। भाषा की दृष्टि से हिन्दी को विवरणात्मकता त्यागकर संक्षिप्त, क्षिप्र, सारवान, आधुनिक गठन से युक्त भाषा बनना होगा ।

संवैधानिक प्रावधान
Constitutional Privision

भारत के संविधान भाग – 5 (120), 6 (210), 17 (343–351) में राजभाषा से संबंधित प्रावधान हैं।

OFFICIAL LANGUAGE RELATED PART - 5 (120), 6 (210), 17 (343-351) OF CONSTITUTION OF INDIA.

भाग/Part-5 (120) संसद में प्रयुक्त होने वाली भाषा/Of ficial Language Policy of the Union.
भाग/Part-6 (210) विधान मंडल में प्रयुक्त होने वाली भाषा/Language to be used in the Legislature.
भाग/Part-17 (343-351) संघ की भाषा/Language of the Union.

अनुच्छेद / Article (343-351)

343 – संघ की राजभाषा / Of ficial Language of the Union.
344 – अंग्रेजी का प्रयोग 15 वर्ष, फिर 25 वर्ष के लिए / Use of English extend to indefinite period.
345 – राज्य की भाषा (प्रांतीय भाषा) / Language of Stage (Local Language).
346 – संचार की भाषा राजभाषा होगी (संपर्क भाषा) / Language spoken in the particular State.
347 – राज्य में विशेष बोली जाने वाली भाषा / Of ficial Language of the Union.
348 – न्यायालय का निदेश (प्रयोग की जाने वाली भाषा) / Court Directive regard to O.L.
349 – अधिनियम को पारित करना (राष्ट्रपति की मंजूरी) / O.L. Act Passed by President's Approval.
350 – प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा / Instruction in Mother-tongue at the primary stage.
351 – हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश / Directive for development of Hindi Language.

कार्यस्थल पर आँखों की सुरक्षा

अनुराग वर्मा
संरक्षा अधिकारी

आँखें हमारे शरीर का सर्वाधिक महत्वपूर्ण बहुमूल्य अंग हैं, यदि आँखें न हों या रोगग्रस्त हो जाएं, तो मनुष्य के लिये दिन-रात बराबर हो जाता है। नेत्र ज्योति न होने पर हमारे और दुनिया के बीच दीवार बनकर हम भौतिक, मनोवैज्ञानिक तथा भावनात्मक रूप से अलग हो जाते हैं। आँखें शरीर की सबसे कोमल एवं सूक्ष्म अंग हैं। सुखमय जीवन के लिये इनका स्वस्थ्य होना बहुत जरूरी है । आँखें दुनिया की खिड़की हैं, आँखों से हम सीधे एवं त्वरित संचार कर सकते हैं। आँखें चोट के प्रति सबसे ज्यादा असुरक्षित होती हैं। इसके मुख्य अंगो में कम प्राकृतिक रक्षक हैं। कॉर्निया तथा लेन्स में कुछ ही ब्लड वेसल्स होते हैं अतः चोट लगने पर धीरे-धीरे स्वस्थ्य होती हैं। रेटीना में मुख्यतः स्नायु होते हैं, जो चोट लगने या नष्ट होने पर ठीक नहीं होते हैं ।

प्रकृति ने हमारी आँखों में कई सुरक्षा साधन दिये हैं। चेहरे की हड्डी की बनावट बड़ी वस्तुओं से सुरक्षा करती है। आँख के आसपास की मांसपेशियां हवा के झोंकों के प्रति शॉक अब्जारबर का कार्य करती हैं। आँखों की प्रत्यावर्तित क्रिया द्वारा पलकें छोटे-छोटे कणों, कीट-पतंगों तथा चकाचौंधवाले प्रकाश से भी बचाती हैं। भौहें नमी को सीधे प्रवेश से रोकती हैं। आँखों में एक अतिरिक्त ऑप्टीक नर्व होती है, जो बगैर क्षति के थोड़े से विस्थापन में सहायक होती है। इतने सब सुरक्षा चक्रों को भेदकर यदि कोई वस्तु आंख से टकराती हैं, तब अश्रुवाही नली आँखों को धोकर बाह्य वस्तु से सुरक्षा प्रदान करती है। अतः हमे आँखों की उपेक्षा न करके सर्वाधिक सुरक्षा करनी चाहिये ।

जब किसी कार्यस्थल पर खतरनाक कार्य किये जा रहे हों, आँखों की सुरक्षा हेतु व्यक्तिगत सुरक्षात्मक उपकरण प्रदान किये जाना चाहिये । कर्मचारियों द्वारा इनका उपयोग करना चाहिये। कार्य के दौरान सही तरीके से सुरक्षा उपकरण पहनकर - आप आँखों की सुरक्षा कर सकते हैं। ऐसे कार्यस्थलों पर कर्मचारी एवं आगंतुक को भी सुरक्षा उपकरण पहनना चाहिए ।

प्रत्यक्ष खतरे

कार्यस्थल पर विभिन्न प्रकार के खतरों के प्रति आँखें असुरक्षित होती हैं। मुख्यतः इन्हें तीन श्रेणियों यथा यांत्रिक, रसायनिक, उष्णीय तथा विकिरण खतरों में विभाजित कर सकते हैं ।

1. **यांत्रिक खतरे –** कटिंग, मशीनिंग, ग्राइंडिंग, चिपिंग, : पिघली धातु इत्यादि को हेंडल करते समय उड़ते कण, धूल, टुकडे, स्पार्क, पिघली धातु के छींटे इत्यादि आँखों में जा सकते हैं और चोट लग सकती है। मशीनिंग कार्य करते समय सुरक्षा चश्में, जिसमें साइड शील्ड लगी हो, पहनकर बचाव कर सकते हैं। आग, धूल या चिप्स के खतरों से बचाव के लिये साइड कप या बाक्स वाले चश्मों का उपयोग किया जाता है। कटिंग करते समय चश्में तथा प्लास्टिक फेस शील्ड का उपयोग करना चाहिये। पिघली धातु को हेंडल करते समय अत्यन्त सुरक्षा की आवश्यकता होती है, ऐसे कार्य के दौरान रंगीन चश्में के साथ हेलमेट तथा फेस शील्ड भी पहनना आवश्यक है ।
2. **रसायनिक खतरे –** कारखाने तथा लेबोरेटरी में रसायनों के हैंडलिंग के दौरान छींटे उड़ना, धूल एवं धुआँ उड़नें जैसे खतरे बने रहते हैं, अतः ऐसे कार्य करते समय बॉक्स टाइप केमिकल चश्में पहनना चाहिये। ज्यादा खतरनाक काम करते समय फेस शील्ड या स्प्लेश हुड का प्रयोग किया जाना चाहिये।
3. **उष्मीय तथा विकिरण–** उचित किस्म के सुरक्षा चश्में पहनकर ताप, चकाचौंध, पराबैंगनी किरण, अवरक्त किरण से आंखों की सुरक्षा की जा सकती है। इस प्रकार के खतरे कुछ प्रक्रियाओं में मौजुद रहते हैं, उदाहरणार्थ इलेक्ट्रिक आर्क वेल्डिंग इत्यादि ।

इलेक्ट्रिक आर्क वेल्डिंग के कार्य करते समय फिल्टर लगी वेल्डिंग स्क्रीन, टिन्टेड ग्लास का प्रयोग करें। गैस वेल्डिंग कार्य करते समय फिल्टर लगे गागल्ज का उपयोग करना चाहिये। लेसर आपरेशन के लिये विविष्ट प्रकार के चश्में, जिसमें सही फिल्टर लगे हों, प्रयोग करना चाहिये। समस्त प्रकार की खतरनाक प्रक्रियाओं के दौरान उचित प्रकार के आँखों के चश्में पहनना चाहिये। किसी भी प्रकार की शंका होने पर पर्यवेक्षक की सलाह अवश्य लें। चश्मे के लेंस तथा फ्रेम की प्रतिदिन सफाई करें। यदि लेंस में स्क्रेच पड़ जाएं, क्रेक हो जाएं टूट जाएं या धुंधले पड़ जाएं तो इन्हें तुरंत बदल देना चाहिये ।

आपके सुरक्षा चश्मे की फिटिंग सही होना चाहिये, न टाइट, न ढीला । ध्यान रखें, अपना चश्मा कोई अन्य व्यक्ति नहीं पहने, न ही आप अन्य व्यक्ति का चश्मा पहनें। सुरक्षा उपकरण कर्तव्य स्थल पर नियमित उपयोग हेतु प्रदान किये जाते हैं, अतः कार्य अनुरूप सुरक्षा उपकरण पहनना ही चाहिये ।

सावधानियां

कार्य स्थल पर खतरनाक कार्य करने के पूर्व आँखों की पूर्ण जाँच करवाना चाहिये। कमजोर दृष्टि से दुर्घटना होने की संभावना होती है। 40 वर्ष से उपर की आयु के व्यक्तियों को नियमित जांच करवाना चाहिये । कर्तव्य के दौरान सिरदर्द, चक्कर आना, भेंगा या तिरछा दिखना अथवा स्पष्ट देखने के लिये झुकना, ऐसी स्थिति में बगैर विलम्ब के चिकित्सक को दिखाना चाहिये । याद रखें, चिकित्सक द्वारा बताए गये चश्में, ग्लास या कानटेक्ट लेंस सुरक्षा उपकरण नहीं है। व्यक्तिगत सुरक्षात्मक उपकरणों को चश्में, ग्लास या कानटेक्ट लेंस के ऊपर पहनना चाहिये ।

आपातकालीन उपाय

व्यक्तिगत सुरक्षात्मक उपकरणों के उपयोग करने के बावजूद दुर्घटना हो सकती है या हो जाती है। ऐसी परिस्थिति से निपटने के लिये तुरंत निम्नानुसार कार्यवाही करें।

1. रसायनिक जलन– पलकें खोलकर तुरंत कम प्रेशर के पानी से आंखें 15 मिनिट तक धोएं जिससे रसायन निकल जाएं या हलका पड़ जाए। प्रभावी व्यक्ति यदि असहाय हो तो लेटाकर नाक के पास से पानी डालें, सीधे आंख में नहीं डालें। तुरंत चिकित्सक की सहायता प्राप्त करें।
2. कटना, फटना, छेदना– आँखों पर हलकी बांधकर, तुरंत चिकित्सक की सहायता प्राप्त करें। धोएं नहीं ।
3. बाह्य वस्तु– इसे स्वयं बाहर न निकालें, तुरंत चिकित्सक की सहायता प्राप्त करें ।
4. प्रहार, धक्का – आँखें लाल होने, सूजने या दर्द न हो तो भी, आंतरिक चोट हो सकती है, तुरंत चिकित्सक की सहायता प्राप्त करें।
5. सामान्य– कार्य स्थल पर फर्स्ट एड बाक्स सुसज्जित एवं सुविधाजनक स्थान पर रखें । इसमें आँख धोने का साल्यूशन हमेशा रखें। कार्य स्थल के पास **आई –** वाशर लगा होना चाहिये।

सफाई के लिये स्वच्छ कपड़ा – टिश्यु पेपर पास में रखें। याद रखें आँखें ईश्वर की सबसे बड़ी देन है।

अगर आप पापा के दोस्त हुए तो मेरी बात सुनकर हमें अपने घर में रोक लेंगे और मैं अपने माता–पिता के साथ 'जगतू' की गुंडागर्दी देख चुकी थी । इसीलिए मैं नहीं चाहती थी कि आप अकेले उसका कोपभाजन बनें– अलका ने कहा।

रमेश दस वर्षीया बच्ची की बुद्धिमत्ता से चकित था ।

बेटे रमेश ! तुम्हारा और मीना का यह उपकार कभी नहीं भूलूंगा। तुम्हारी वजह से मेरे बच्चे मुझे वापस मिल गए– रामभरोसे लालजी ने कहा । अंकल, आप कैसी बात कर रहे है, मुझमें और शेखर में फर्क समझते हैं !

दादाजी, अंकलजी को इनाम तो जरूर मिलना चाहिए– अलका बीच में बोल उठी। हाँ–हाँ जरूर । तुम्हारे मम्मी–पापा के पूर्ण स्वस्थ हो जाने पर एक जोरदार पार्टी होगी जिसमें रमेश अंकल, मीना आंटी और दोनों बच्चे भी शामिल होंगे– दादाजी ने कहा ।

अगर नहीं आए तो ? अलका ने कहा ।

तो यह पार्टी खरगोन मे रमेश के घर पर होगी। यह मेरा सौभाग्य होगा रमेश ने कहा ।

रमेश तुमने दोस्ती का जो हक अदा किया वह एक मिसाल बन गया – दादाजी के कहा ।

अंकलजी, मैंने कुछ नहीं किया यह तो साक्षरता मिशन है जो मुझे राह दिखाती है, संजीवनी देती है ।

सत्यमेव जयते

भारत के संविधान में हिन्दी भाषा के विकास के लिए विशेष निदेश

''संघ का यह कर्त्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी के और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं के प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द–भण्डार के लिए मुख्यतः संस्कृति से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करें ।

भारत का संविधान
भाग–17
अनुच्छेद–351

राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय, भारत सरकार

प्रकाश का व्यतिकरण

सोमनाथ बैनर्जी
उप. महाप्रबंधक (त.प्र.) स्याही कारखाना

व्यतिकरण (Interference) से किसी भी प्रकार की तरंगों की एक दूसरे पर पारस्परिक प्रक्रिया की अभिव्यक्ति होती है, जिसके परिणामस्वरूप कुछ विशेष स्थितियों में कंपनों और उनके प्रभावों में वृद्धि, कमी या उदासीनता आ जाती है। व्यतिकरण का विस्तृत अध्ययन विशाल विभेदन शक्ति वाले सभी यंत्रों के मूल में काम करता है।

भौतिक प्रकाशिकी में इस धारण का समावेश टॉमस यंग (Thomas Young) ने किया। उनके बाद व्यतिकरण का व्यवहार किसी भी तरह की तरंगों या कंपनों के समवेत या तज्जन्य प्रभावों को व्यक्त करने के लिए किया जाता रहा है। संक्षेप में किसी भी तरह की (जल, प्रकाश, ध्वनि, ताप या विद्युत से उद्भूत) तरंग गति के कारण लहरों के टकराव से उत्पन्न स्थिति को व्यतिकरण की संज्ञा दी जाती है। जब कभी जल या अन्य किसी द्रव की सतह पर दो भिन्न तरंगसमूह एक साथ मिलें तो व्यतिकरण की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। जहाँ एक तरंगसमूह से संबंद्ध लहरों के तरंगश्रृंगों का दूसरी शृंखला से संबद्धलहरों के तंरगश्रृंगों से सम्मिलिन होता है, वहाँ द्रव की सतह का उन्नयन उस स्थान पर लहरों के स्वतंत्र और एकांत अस्तित्व के संभव उन्नयनों के योग के बराबर होता है। जब तरंगों में से एक के तरंगश्रृंग का दूसरे के तरंगगर्त पर समापातन होता है, तब द्रव की सतह पर तरंगों का उद्वेलन कम हो जाता है और प्रतिम लित उन्नयन (या अवनयन) एक तरंग अवयव (component) के उन्नयन और दूसरे के अवनयन के अंतर के बराबर होता है। ध्वनि में उत्पन्न विस्पंद (beats) इसी व्यतिकरण का एक साधारण रूप है, जहाँ दो या दो से अधिक तरंगसमूह, जिनके तरंगदैर्ध्य में मामूली सा अंतर होता है, करीब एक ही दिशा में अग्रसर होते हुए मिलते हैं।

प्रकाश की गति तरंगीय होती है। किसी एकल प्रकाशस्रोत से नि:सृत ऊर्जा माध्यम के पार्श्व में समान रूप से बिखर जाती है। यदि प्रकाश के दो स्वतंत्र स्रोत, जिनसे समान परिमाण और अभिन्न कला की तरंगें सतत नि:सृत हों, एक दूसरे के सन्निकट रखे जाएँ, तो माध्यम के आसपास ऊर्जा का वितरण समांग नहीं होता, जहाँ एक प्रकाशतरंग का शृंग दूसरे प्रकाशतरंग के शृंग (crest) पर, या एक का तरंगगर्त (trough) दूसरे के तरंगगर्त पर गिरता है, वहाँ आयाम (amplitude) बढ़ जाता है और आयाम स्वरूप ऊर्जा या प्रकाश की तीव्रता भी बढ़ जाती है। साथ ही, यदि एक का तरंगश्रृंग दूसरे के तरंगगर्त पर गिरे, तो परिणामी आयाम (resultant amplitude) शून्य होता है और प्रकाश की तीव्रता घट जाती है। पहली स्थिति का संपोषी (constructive) व्यतिकरण और दूसरी स्थिति को विनाशी (destructive) व्यतिकरण कहते हैं।

पारदर्शी ठोस के पतले पट्टों (plates) और साबुन के बुलबुलों पर प्रकाश की किरणों के पड़ने पर व्यतिकरण का स्पष्ट परिचय मिल सकता है। जब प्रकाश की किरणें साबुन के बुलबुलों, या सीसे की पतले पट्टों पर पड़ती हैं, तो उनकी बाहरी और भीतरी दोनों सतहों से किरणें परावर्तित होकर प्रेक्षक की आँखों की ओर लौटती हैं और प्रकाश के तरंगसमूहों में, जो दोनों स्रोतों (सतहों) से आँखों तक पहुँचती हैं, कलाओं (phases) में सूक्ष्म अंतर होने के कारण (जो बुलबुले या पट्ट के प्रत्येक बिंदु पर भिन्न होता है) व्यतिकरण होता है, जिससे उत्पन्न प्रभाव कामी मोहक ओर चित्ताकर्षक होते हैं। साबुन का कोई बुलबुला एकवर्णी (monochromatic) प्रकाश में प्राय: कुछ काली रेखाओं से आवृत दिखाई पड़ता है। कारण यह है कि काले दिखाई पड़ने वाले बिंदुओं पर प्रकाश के दो तरंग समूह, जो क्रमश: बुलबुले की भीतरी और बाहरी सतहों से आते हैं, करीब करीब या पूर्णत: एक दूसरे के प्रभाव को नष्ट कर देते हैं। यदि बुलबुला श्वेत प्रकाश में देखा जाए, तो हमें सामान्यतया काली रेखाएँ नहीं दिखाई पड़तीं। उनके स्थान पर रंगों की पट्टियाँ (लरपवी) होती हैं। ऐसा इसलिए होता है कि विभिन्न रंग, जिनके योग से श्वेत प्रकाश की उत्पत्ति होती है भिन्न भिन्न तरंगों के होते हैं, जिससे बुलबुले के किसी बिंदु पर व्यतिकरण से रंग के केवल एक अंश मात्र का विनाश होता है और उजले प्रकाश के शेष अवयव बच रहते हैं, जो आँखों पर अपना पूर्ण वर्णीय प्रभाव उत्पन्न करते हैं।

व्यतिकरण के लिए कुछ मौलिक शर्ते हैं जिनकी पूर्ति आवश्यक है। इनमें से कुछ तो प्रकाश की प्रकृति में ही अंतर्निहित है और दूसरी, यदि परिणाम का प्रेक्षण प्रयोग द्वारा करना हुआ तो, आवश्यक हो उठती है। सरलता के लिए हम दो विद्युत् चुंबकीय लहरों पर विचार कर सकते हैं, जो किसी दिक्बिंदु पर, जहाँ से दोनों लहरें गुजरती हैं, विनाशी व्यतिकरण उत्पन्न करें।

यदि व्यतिकरण का प्रतिरूप स्थिर (steady) रहा, अर्थात् यदि प्रकाश की तीव्रता (intensity) का परिणामी तथाकथित बिंदु पर समय के

प्रत्येक मान के लिए शून्य हो, तो निम्नलिखित शर्तों की पूर्ति आवश्यक है :

(1) व्यतिकरण उत्पन्न करनेवाली तरंगों का दैर्ध्य और उनकी आवृत्तिसंख्या समान होनी चाहिए,

(2) दो तरंगों की कलाओं का अंतर किस निश्चित बिंदु पर समय के साथ कभी भी नहीं बदलना चाहिए,

(3) दोनों तरंगों का परिमाण आवश्यक रूप से समान या निकटत: समान होना चाहिए,

(4) दोनों तरंगों का समान ध्रुवीकरण (polarisation) नितांत आवश्यक है। अत: प्रकाशतरंगों के लिए यह अवश्यक है कि वे तरंगसमूह, जो मिलकर व्यतिकरण उत्पन्न करें, अवश्य एक ही स्रोत से नि:सृत हों। प्रकाशतरंगों की असंबद्ध (incoherent) प्रकृति से भी यह अनुमान लगाया जा सकता है। एक ही स्रोत से नि:सृत तरंगों में स्रोत की परमाण्वीय रचना की समानता के चलते और परमाणुओं की कक्षाओ (orbits) में प्राय: एक ही तरह के संक्रमणों के कारण, कला समान होती है, या उनका कलांतर (phase difference) स्थिर रहता है।

प्रकाश द्वारा उत्पन्न प्रतिरूपों के सम ल प्रेक्षण के लिए दो अन्य शर्तें, जिनकी पूर्ति होनी चाहिए, निम्नलिखित हैं –

(1) यदि प्रकाश एकवर्णी (monochromatic), या बहुत हद तक वैसा न हो, तो उन दोनों प्रकाशपुंजों के, जो मिलकर व्यतिकरण उत्पन्न करते हैं, प्रकाशीय पथ की दूरी का अंतर बहुत कम होना चाहिए (10-8 सेंमी. के क्रम का) तथा

(2) दोनों व्यतिकरणशील तरंगों के अग्रसर होने की दिशा प्राय: समान होनी चाहिए, अर्थात् तरंगाग्र (wave fronts) का एक दूसरे के साथ अति न्यून कोण बनाना आवश्यक है।

यदि दो अतिसन्निकट प्रकाशस्रोत के समान परिमाण और कालांतर (period) की तरगें किसी कलांतर विशेष पर कुछ दूर स्थित पर्दे के एक बिंदु पर मिलें, तो पर्दे पर कुछ बिल्कुल की रेखाएँ जिनके अंतराल में अधिकतम तीव्रता की रेखाएँ रहती हैं, देखी जाती हैं। वे न्यूनतम और अधिकतम तीव्रता की रेखाएँ व्यतिकरण फ्रिंजें कहलाती हैं।

जब कभी व्यतिकरण फ्रिंजें (fringes) पतली फिल्मों के चलते बनती हैं, तब उनका कारण व्यतिकरण में भाग लेनेवाली किरणों के कलांतर का परिवर्तन होता है। यह परिवर्तन फिल्म (film) की मोटाई के परिवर्तन, या आयतन कोण के परिवर्तन, के कारण होता है। यदि मोटाई समांन नहीं हुई, तो प्राय: दोनों तथ्य एक ही साथ क्रियाशील हो उठते हैं; लेकिन एक बात स्पष्ट है कि जब कोई फिल्म आँख द्वारा देखी जा रही है, तो उसे आँख से करीब 25 सेंमी. की दूरी पर रखा जाना चाहिए।

यदि फिल्म का परास (range) बहुत बड़ा न हो, तो हमारी आँखों तक मि ल्म के विभिन्न बिंदुओं से आती हुई किरणों के झुकाव की भिन्नता कोई अधिक नहीं होती और प्रत्येक किरण का आयतन कोण करीब करीब समान होता है। अत: फ्रिंजें मुख्यत: फिल्म की मोटाई की भिन्नता के कारण बनती है। यह भी नितांत स्पष्ट है कि फिल्म के उन सभी बिंदुओं पर, जहाँ मोटाई समान है, वहाँ प्रकाश की दीप्ति भी समान होगी। यदि ऐसा कोई भी बिंदु काला या उज्वल हुआ, तो शेष भी तदनुरूप काले या उज्वल होंगे। इसलिए काली या उज्वल पट्टियाँ समान मोटाई के मि ल्म के विभिन्न बिंदुओं के बिंदुपथ (loci) मात्र होती है। इस तरह की फ्रिंजें न्यूटनी वलय (Newtons rings) कहलाती हैं, क्योंकि न्यूटन ने सर्वप्रथम इनका अध्ययन किया था।

ग़ौरतलब है की हमारी भारतीय 200/– एवं 500/– के मूल्यवर्ग वाले नोटों पर लगे हुए कम से कम दो सुरक्षा विशेषताएँ भौतिक प्रकाश के इसी पहलू को इस्तेमाल कर निर्मित की गयी है। क्या आप उन्हे ढूंढ सकते है ?

भाषा के आधार पर क्षेत्र

"क" क्षेत्र	दिल्ली, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, उत्तरप्रदेश, बिहार, झारखण्ड, हरियाणा, राजस्थान, हिमांचल प्रदेश, उत्तरांचल, संघ शासित क्षेत्र – अंडमान निकोबार
"ख" क्षेत्र	महाराष्ट्र, पंजाब, गुजरात, चंडीगढ़, दमन और दीव, दादर–नागर हवेली
"ग" क्षेत्र	शेष सभी राज्य एवं संघ शासित क्षेत्र

गठिया (Gout)

वृंदा खांडवे
प्राकृतिक चिकित्सक

संधिवात ग्रंथिवात या आम भाषा में **गठिया** कहते हैं- यह एक जीर्ण रोग है, जिसे क्रॉनिक डीजीज कहते है। गठिया के रोगी को बहुत अधिक शारीरिक दर्द का सामना करना पड़ता है । व्यक्ति अधीर उत्तेजित व नकारात्मक विचारों से ग्रसित हो जाता है व स्वभाव में चिड़चिड़ापन आने लगता हैं। गठिया का रोग जब शरीर में बढ़ने लगता है तो रोगी में सिरदर्द मांसपेशियों में दर्द होता है व कब्ज की शिकायत रहने लगती है-जोड़ों के अंदर विजातीय द्रव्य या गंदगी जमा होने लगती है।

गठियाँ मे जोड़ो मे दर्द होता है और यह दर्द अधिकतर पैर के अँगूठे से आरम्भ होता है फिर धीरे- धीरे पुरे शरीर के जोड़ो में फैलता जाता है- जोड़ो मे जहाँ जहाँ दर्द होता है वहाँ हल्की सी गर्माहट होती है और उस जगह पर हल्का सा लाल पन दिखाई देने लगता है-हल्का सा छुने भर से रोगी को दर्द महसूस होता है। जोड़ों मे दर्द इतना अधिक होता है कि रोगी को चलने-फिरने-उठने-बैठने मे बहुत तकलीफ व परेशानी होती है।

गठिया मे आधी रात के बाद व सूर्योदय के पहले अधिक दर्द होता है-कभी-कभी हल्का बुखार भी देखने को मिलता है-मांसपेशियों मे दर्द होता है थकान बनी रहती है भूख कम लगती है और नकारात्मक बातें मन में आती है व यह रोग अब ठीक होगा या नही-

गठिया मे पानी भरपूर मात्रा में पीये शरीर में पानी की कमी ना हो ध्यान रखें । सुबह शाम गुनगुना पानी पियें। ठंडी जगह पर ना रहे-ठंडी चीजे ना खायें-हमेशा शुद्ध हवादार व धूप वाली जगह पर रहें। अत्यधिक नमकीनतला- गलाबांसी मिर्च मसालेदार भोजन ना ले। अत्यधिक वसा युक्त व गरिष्ठ आहार ना लें। चाय कॉफी व कोल्ड ड्रिंक ना ले ।

* आहार में क्या लें *

* ताजे फल, हरी सब्जियाँ, सलाद, सुप, छिलके वाली मूंग की दाल, मोटा अनाज, लाल रंग के फल, अपने आहार में नियमित शामिल करें । यह रेशेदार आहार है । (गेहूं का उपयोग कम करें)
* जूस, सुप, सलाद अधिक लें ।
* लहसुन, अदरक, सोंठ, हींग का उपयोग नियमित रूप से करें ।
* सिट्रस फ्रूट, रसीले फल जिसमे विटामिन-सी ज्यादा हो, अन्ननास, अनार, संतरा, मौसंबी, आँवला ले ।
* हरी सब्जियों में.. मुली, पुदीना, मैथी, सहजन की पत्ती, फूल, फली आहार में शामिल करें ।

* कुछ ध्यान रखने योग्य बातें *.

1. शरीर के जोड़ों पर अपना ध्यान केंद्रित करें। कुछ योग, आसन, व्यायाम नियमित करें, परंतु यह करते समय जोड़ों या शरीर में किसी भी संधि स्थान पर अत्यधिक दबाव या स्ट्रेस ना आये यह सावधानी रखें ।
2. अपने शरीर का पोशचर हमेशा सही रखें, कुर्सी, टेबल पर काम करते समय या किसी भी तरह उठते-बैठते, चलते- फिरते, सोते अपनी पोजिशन सही रखें । निरंतर एक जगह ना बैठे बीच मे कुछ अंतराल से उठे ।
3. शरीर की मांसपेशियों की स्ट्रैंथ बढ़े यह भी ध्यान रखें ।
4. जोड़ों में लगातार दर्द बना रहता हो तो यह आरम्भिक लक्षण हो सकते हैं किसी एक्सपर्ट से संपर्क करे, समय पर उचित परामर्श व उपचार मिल सके ।
5. अगर वजन अधिक हो, अर्थात मोटापा हो तो वजन कम करें, वजन अधिक होने से शरीर में दर्द की शिकायत बनी रहती है ।

* हम स्वयं कैसे ध्यान रखें *

1. अत्यधिक परिश्रम से बचे विश्राम का ध्यान रखें ।
2. नियमित पैदल चले, प्रातःकाल नियमित पैदल चलने से एक्स्ट्रा कैलोरी बर्न हो जायेगी, मसल्स की ताकत बढ़ेगी, फ्रेश ऑक्सीजन मिलेगी व मूड फ्रेश रहेगा ।
3. तासीर के अनुसार स्वयं हल्की- फुल्की मसाज कर सकते हैं, किसी दर्द निवारक तेल से जिस से मांसपेशियाँ व जोड़ों को आराम मिलेगा व वहाँ रक्त का संचारण ठीक से होता रहेगा ।

4. ठंडी जगहों पर ना बैठे ना सोये। सूर्य प्रकाश व शुद्ध वायु हो इसका भी ध्यान रखें।
5. ठंडा पानी, ठंडे पेय पदार्थ ना ले, फ्रीज मे रखी खाने की चीजे सामान्य तापमान पर आने के बाद ही खायें।
6. कुछ स्ट्रेंचिंग के व्यायाम करें जो माँसपेशियों की ताकत को बढ़ाये व लचीलापन आये।
7. अगर किसी को स्मोकिंग की आदत है तो उसे पूर्णतः बंद करें।
8. सिट्रस फ्रूट या सिट्रस ज्यूस अपने आहार में नियमित ले जो विटामिन उ से भरपूर हो।
9. ज्यूस या फलाहार अधिक ले। रेशेदार या रफेज आहार मे अधिक हो जिस से पाचन शक्ति बढ़ेगी व कब्ज की शिकायत नही होगी।
10. नियमित 20 मिनिट सूर्य प्रकाश मे बैठे विटामिन डी की कमी की पूर्ति हो।
11. मौसम के अनुसार नंगे पांव जमीन पर चले, यह अर्थिंग ट्रीटमेंट है नियमित 20 मिनिट।
12. मुख्य पथ्य...
    * ब्रेड, बिस्किट, पापड़, मैदा, बेसन, दालें (तुअर, मसूर दाल), नमक, शक्कर व दूध व दूध से बने पदार्थ। ऐसे पदार्थ आहार में ले जिसमें वसा व कोलेस्ट्राल की मात्रा कम हो।
13. अधिक राग, द्वेष, गुस्सा, दुःख ना करें।

* कुछ योग,आसन, प्रणायम व ध्यान *

अपने दैनिक जीवन में नियमित रूप से सम्मिलित करें..

1. ॐ का नाद करें
2. क्रियाएँ.. कपाल भाती
3. कुंजल
4. जोड़ों की आसान सी क्रियाएँ जोड़ों का मूवमेंट अच्छे से हो।
5. शरीरिक क्षमता के अनुसार कुछ आसन कर सकते हैं..

* ताडासन, कटी चक्रासन, कोणासन, उत्तानपाद आसन, पवन मुक्त आसन, वक्रासन, मार्जरी आसन, भद्रासन, भुजंग आसन, शवासन...
* प्रणायाम..अनुलोम विलोम, भ्रामरी, योग निद्रा, ध्यान, अनुभवी चिकित्सक व एक्सपर्ट के मार्ग दर्शन में करें।

सात्विक आहार, सात्विक विचार व सकारात्मक सोच के साथ...

राजभाषा की कुछ महत्वपूर्ण जानकारी

Some Factual information Regarding Rajbhasha

1976 धारा 5(5) – के अन्तर्गत हिंदी पत्र का उत्तर हिंदी में देना / Under Section 5(5) of the 1976 Rule, Communication from Govt. of fce in reply to communication in Hindi shall be in hindi.

1976 धारा 8(4) – के अन्तर्गत कार्यालय में हिंदी में टिप्पण करना / Under Section 8(4) of the 1976 Rule, the Govt. Notified of fices where Hindi used for Noting, Drafting for of ficial purposes.

1976 धारा 10(4) – के अन्तर्गत कार्यालय में कर्मचारियों / अधिकारियों को 80% कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लेने पर राजपत्र में अधिसूचित किए जाना / Under Section 10(4) of the 1976 Rule, The employees whereof acquired 80% working knowledge of Hindi to be Notified in the Gazette, Govt. of India.

1976 धारा 11 – के अन्तर्गत सभी – नाम पट्टा, पदनाम, रबड़ मोहर, सूचना पट्ट, संकेत, काउंटर, पत्र शीर्ष, मुलाकाती पत्र, लिफाफे, फाइल कवर, रजिस्टर, फार्म चालान, पर्चियाँ, फर्म, पुस्तिका, बैनर इत्यादि (यह सभी लेखन सामग्री द्विभाषिक / त्रिभाषिक रूप में बनाया जाना चाहिए) / Under Section 11 of the 1976 Rule, all the - Name Board, Designation, Rubber Stamp, Notice Board, Sign, Counter, Letter Heads, Visiting Card, Envelopes, File Cover, Registers, Form Challan, Slip, Form / Format, All Manuals, Banner etc. (All stationery should be made as bilingual / trilingual)

*** पहले क्षेत्रीय भाषा में, दूसरा हिंदी में, अंत में अंग्रेजी का प्रयोग करें।

*** First Regional language, second Hindi and last English to be used.

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (कृत्रिम बुद्धिमत्ता)

मंगेश हिरलकर
प्रबंधक (त.प्र.) स्याही कारखाना

वर्तमान में दुनिया हर क्षेत्र में प्रगति कर रही है। भारत जैसे देश, जो कि पूर्णरूप से विकसित नहीं हुए हैं, वह भी दुनिया में अपने सूचना प्रौद्योगिकी के सहारे दुनिया में अपना परचम लहरा रहे हैं। दुनिया पिछले 2-3 दशकों में आर्थिक, प्रौद्योगिक, शैक्षणिक क्षेत्र में बहुत ज्यादा तरक्की कर रही है।

भारत में नब्बे के दशक में कम्प्यूटर के क्षेत्र में क्रांति हुई। देश में कम्प्यूटर आने से पहले सभी कार्य बहीखातों में मैन्यूअली होते थे, इसके लिए अत्यधिक मानवशक्ति की आवश्यकता होती थी। साथ ही कार्य त्रुटियाँ होने की भी संभावना अधिक रहती थी। लेकिन जैसे ही कार्यक्षेत्र में कम्प्यूटर का उपयोग बढ़ने लगा, वैसे ही कार्य करने की क्षमता में वृद्धि हुई एवं त्रुटिपूर्ण कार्य ज्यादा से ज्यादा होने लगे। कम्प्यूटर शिक्षा शालेय पाठ्यक्रमों में पढ़ाने का कार्य शुरू हो गया, धीरे-धीरे देश-दुनिया में इंटरनेट-कम्प्यूटर के प्रति लोगों की रूचि बढ़ने लगी एवं सूचना-प्रौद्योगिकी क्षेत्र में नये-नये आयाम, नये-नये आविष्कार होने लगे। सन् 2000 के बाद मोबाईल-दूरसंचार के क्षेत्र में बहुत बड़ी क्रांति हुई एवं संचार के क्षेत्र में आमूलाग्र बदलाव होने लगे।

मोबाईल-इंटरनेट ने तो मान लीजिये कि दुनिया की दूरियाँ कम कर दी। कुछ भी जानकारी चाहिए तो आप इंटरनेट के माध्यम से उसे ढूँढ सकते हैं। पिछले एक दशक में स्मार्टफोन ने तहलका मचा दिया। दुनिया के लगभग सभी देशों में स्मार्टफोन उपभोक्ताओं में बहुत तेजी देखने को मिली है।

अब इंटरनेट-मोबाईल जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुके हैं। पहले कहा जाता था 'रोटी, कपड़ा और मकान', यह जीवन की मूलभूत आवश्यकताएँ हैं, लेकिन अब इसके साथ इंटरनेट-मोबाईल भी जोड़ा जाने लगा। दुनिया के किसी भी विषय या संदर्भ की जानकारी अब चुटकियों में हमारे पास उपलब्ध हो रही है।

इन सभी के साथ हम कम्प्यूटर, मोबाईल, इंटरनेट का ज्यादा से ज्यादा इस्तेमाल शिक्षा, स्वास्थ्य, संचार, ट्रान्सपोर्ट, रेल्वे, कारखाना, कार्यालय इत्यादि में करने लगे। आजकल सरकारें भी चाहती हैं कि 'डिजिटल इंडिया' को बढ़ावा दें, जिससे भ्रष्टाचार में कमी हो।

इसी सूचना प्रौद्योगिकी विकास में एक नया आविष्कार हुआ है, जिसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता या 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' कहा जाता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस बहुत ही प्रगत तकनीक है, इसके सहारे मानव के बुद्धि के समकक्ष कार्य करवाये जा सकते हैं।

इसके अनेक फायदे हैं, जैसे कि स्वास्थ्य के क्षेत्र में जटिल से जटिल शल्यक्रिया ए-आई/रोबोट के सहारे अत्यंत कुशलतापूर्वक हो रही है।

औद्योगिक क्षेत्र में भी ए-आई का उपयोग हो रहा है। ऑटोमोबाईल सेक्टर, फार्मा, आईटी गैजेट्स, केमिकल, रिफायनरी, औष्णिक विद्युत इत्यादि क्षेत्रों में उत्पादन बढ़ाने के लिए ए-आई का इस्तेमाल हो रहा है। औद्योगिक क्षेत्र में त्रुटिपूर्ण एवं गतिशीलता से कार्य करने के लिए ए-आई का इस्तेमाल इन दिनों बढ़ता हुआ दिखने लगा है। चैट-जीपीटी जैसे प्लेटफार्म भी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का ही एक हिस्सा है। आजकल समाचार पढ़ने के लिए बड़े-बड़े न्यूज चैनल्स पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एंकर (ए-आई एंकर) आने लगे हैं। कई बार ऐसा प्रतीत होता है कि मानो सचमुच के न्यूज एंकर समाचार पढ़ रहे हैं। शैक्षणिक क्षेत्र में ट्यूशन पढ़ाने हेतु या यूट्यूब चैनल्स पर ए-आई टीचर विषयों को गंभीरता से पढ़ाते हुए नजर आ रहे हैं।

किसी भी जटिल प्रक्रिया को आसान तरीके से कम समय में त्रुटिरहित करने की क्षमता आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में है। इससे मानवशक्ति एवं समय की बचत हो रही है। लेकिन इसकी अच्छाईयों के साथ कुछ नकारात्मक पहलू भी हैं। अनेक व्यक्तियों का कार्य ए-आई के कारण कम होने की संभावना है, इसके कारण रोजगार की उपलब्धता कम हो जायेगी। बेरोजगारी बढ़ सकती है एवं ए-आई पर पूर्ण रूप से अवलंबित होने की संभावना को नकारा नहीं जा सकता।

मानव जाति के कल्याण के लिये आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उचित तरीके से इस्तेमाल किया जा सकता है। किसी भी चीज की अधिकता हानिकारक होती है, वैसे ही ए-आई के संदर्भ में यह लागू है। यह हमें सुनिश्चित करना है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कहाँ पर, किस कार्य हेतु मानव कल्याण के लिये उपयोग करना है।

(वर्ष 2023 का हिन्दी पखवाड़ा में आयोजित निबंध प्रतियोगिता में अधिकारी संवर्ग में प्रथम पुरस्कार विजेता लेख)

भारत की जी-20 अध्यक्षता का महत्व

अमन कुमार
वरिष्ठ कार्यालय सहायक (मानव संसाधन)

जैसा कि नाम से ही विदित है कि जी-20 बीस शक्तिशाली देशों का समूह है। वर्ष 1999 में एशियाई देशों में आर्थिक संकट की संभावना को देखते हुए एक संगठन का निर्माण किया, जिसमें उनके वित्त मंत्रियों की बैठक आयोजित करवाकर आर्थिक संकट से लड़ने हेतु प्लान बनाया गया।

सर्वप्रथम जी -20 का जन्म आर्थिक संकटों के मद्देनजर हुआ था। परंतु समय के साथ इसमें अन्य मुद्दे भी जुड़ते चले गए यथा आतंकवाद, पर्यावरण, ग्लोबल वॉर्मिंग इत्यादि एवं इसी तरह जी-20 का स्तर वित्त मंत्रियों से उठकर स्टेट ऑफ हेड्स तक पहुँच गया, जिसमें विभिन्न देशों के राष्ट्राध्यक्ष सम्मिलित होने लगे। इस प्रकार जी-20 की प्रथम बैठक वर्ष 2008 में अमेरिका के वॉशिंगटन शहर में हुआ।

वर्तमान में भारत ने इस शिखर सम्मेलन के 18 वें संस्करण की अध्यक्षता की, जो दिनांक 09-10 सितंबर 2023 को नई दिल्ली में सम्पन्न हुई। जी-20 की ताकत का अंदाजा उसके सदस्य देशों से ही पता चलता है, जैसे अर्जेंटीना, ब्राजील, कनाडा, चीन, भारत, रूस, रिपब्लिक ऑफ कोरिया, जर्मनी, यूनाईटेड किंगडम, अमेरिका, यूरोपियन संघ इत्यादि । जी-20 के सदस्य देशों के पास पूरी दुनिया का 85% जीडीपी, 2/3 आबादी है। इसलिए जी-20 समूह अपने आप में एक बहुत बड़ी उपलब्धि है।

जी-20 कैसे काम करता है ?

जी-20 दो समानांतर ट्रेक पर काम करता है :

1. **फाईनेंशियल ट्रेक :** इसमें सदस्य देशों के वित्त मंत्री आपस में बातचीत करके वित्तीय समस्याओं पर चर्चा करते हैं एवं चुनौतियों से लड़ने हेतु प्लान बनाते हैं।
2. **शेरपा ट्रेक :** इसमें प्रत्येक सदस्य देश एक-एक शेरपा लीड मनोनित करता है, जो अपने-अपने राष्ट्राध्यक्षों को जी -20 में मदद करता है।

जी-20 में लिए गए फैसलों को मानने की कोई कानूनी बाध्यता नहीं है, परंतु जी -20 ऐसे ताकतवर देशों का समूह है कि कोई भी देश जी-20 सम्मेलन में लिए गए फैसलों को नकार नहीं सकता है।

जी-20 की अध्यक्षता कैसे मिलती है ?

इसका फैसला 'ट्रोइका' के माध्यम से होता है। ट्रोइका का मतलब तीन देशों का समूह, जिसमें पिछला अध्यक्ष देश (इंडोनेशिया), वर्तमान अध्यक्ष देश (भारत) एवं भविष्य में अध्यक्षता करने वाला देश (ब्राजील) । यह सर्वविदित है कि 18वें जी-20 शिखर सम्मेलन की अध्यक्षता भारत ने की है। इतने बड़े सम्मेलन की मेजबानी मिलना एवं सफलतापूर्वक इसका आयोजन करना, विश्व पटल पर भारत की मजबूत साख को प्रदर्शित करता है। भारत ने जी-20 का सफल आयोजन कर अपने आप को विकसित देशों की कतार में खड़ा कर दिया है।

18वें शिखर सम्मेलन के महत्वपूर्ण बिंदु एवं निष्कर्ष :

1. प्रथम बार भारत ने जी-20 शिखर सम्मेलन का आयोजन सफलतापूर्वक किया।
3. अफ्रीकी संघ को मान्यता (अब जी-21)।
3. नए अध्यक्ष देश - ब्राजील 1 दिसंबर 2023 को आधिकारिक तौर पर ब्राजील जी-20 का अध्यक्ष होगा।
4. ग्लोबल बायोफ्यूल पर संधि ।
5. पर्यावरण बचाव संबंधी संधि ।
6. 2030 तक नवीकरणीय ऊर्जा को चार गुणा बढ़ाने का दृढ़ संकल्प ।
7. भारतीय संस्कृति - (क) मंडपम
   (ख) भगवान नटराज की कांस्य मूर्ति
   (ग) नालंदा विश्वविद्यालय की छवि
   (घ) कोणार्क सूर्य मंदिर के रथ के चक्र की छवि
   (ड) बोधि वृक्ष के नीचे बैठे भगवान बुद्ध की प्रतिमा
8. जी-20 का वाक्य : ''**वसुधैव कुटुंबकम्**''
9. जी-20 की थीम : ''एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य''

भारत ने जी-20 शिखर सम्मेलन कर विश्व पटल पर अपनी ताकतवर छाप छोड़ते हुए नए भविष्य की शुरूआत कर दी है।

(वर्ष 2023 का हिन्दी पखवाड़ा में आयोजित निबंध प्रतियोगिता में कर्मचारी संवर्ग में प्रथम पुरस्कार विजेता लेख)

बच्चों पर मोबाईल का दुष्प्रभाव

संगीता पियुष
प्रयोगशाला तकनीशियन
बीएनपी चिकित्सालय

इन दिनों हर पेरेंट्स (Parents) की ये शिकायत होती है कि उनका बच्चा (Children) दिन भर मोबाइल से चिपका रहता है। हालांकि, इसकी वजह खुद पेरेंट्स भी हैं, जो हर वक्त मोबाइल (Mobile) में व्यस्ता रहते हैं और परिवार के साथ क्वालिटी टाइम बिताने की बजाय मोबाइल पर एंटरटेनमेंट का बहाना ढूंढते रहते हैं। यही नहीं, बच्चों को कई पेरेंट्स कम उम्र में ही मोबाइल हाथ में पकड़ा देते हैं और बाद में जब बच्चों को इसकी आदत लग जाती है तो वे छुड़ाने के लिए सख्ती करने लगते हैं। ऐसे में घर का माहौल तो खराब होता ही है, बच्चे छिप-छिपकर मोबाइल का प्रयोग करने लगते हैं।

अकेले में मोबाइल देखने के चक्कर में वे कई बार इंटरनेट पर मौजूद उन कंटेंट्स को भी देखने लगते हैं, जो शायद उनकी उम्र के हिसाब से एडल्ट क्वालिटी के हैं। ऐसे कंटेंट बच्चों के मानसिक और शारीरिक विकास पर काफी गहरा प्रभाव छोड़ते हैं और इसका दूरगामी असर खतरनाक हो सकता हैं। तो आइए यहां हम आपको बताते हैं कि आप बच्चों में मोबाइल की आदत को छुड़ाने के लिए किन उपायों का सहारा ले सकते हैं।

आउटडोर गेम के लिए करें मोटिवेट :

बच्चों को मोबाइल से दूर रखने का सबसे अच्छा उपाय है कि उन्हें आउटडोर गेम या एक्टिविटी में इंवॉल्व करें। आप उन्हें बाहर खेलने, साइकिल चलाने, गार्डनिंग आदि के लिए भी मोटिवेट कर सकते हैं।

कम उम्र में मोबाइल फोन ना दें :

बेहतर होगा कि आप बच्चों को कम उम्र में मोबाइल देने से बचें। स्क्रीन टाइम के लिए आप टीवी का ही इस्तेमाल करें।

वाइ-फाई रखें बंद :

जब आपका काम हो जाए तो आप इंटरनेट या वाइ-फाई को बंद करें. ऐसा करने से बच्चों हर वक्त इंटरनेट झोन में नहीं रहेंगे और मोबाइल का इस्तेइमाल नहीं कर पाएंगे।

क्वालिटी फैमिली टाइम :

घर में प्रयास करें कि अच्छा माहौल रहे और आप आपस में क्वालिटी फैमिली टाइम बिताएं। आप एक दूसरे के साथ मजाक करें, साथ में बदमाशी करें, फनी फेस कॉम्पीटिशन आदि करें या घर का डेकोरेशन आदि प्लान करें। बच्चों को इसमें खूब इनवॉल्व करें।

स्क्रीन टाइम करें लिमिट :

छोटे बच्चों के लिए 24 घंटे में 2 से 3 घंटा स्क्रीन टाइम रखें और टीनएज बच्चों के लिए अधिक से अधिक 4 से 5 घंटा, जिसमें वे अपनी पढ़ाई और लर्निंग कर सकें। ऐसा करने से वे इंटरनेट को बेहतर तरीके से यूटिलाइज कर पाएंगे और उनकी सेहत पर भी इसका असर नहीं पड़ेगा।

मोबाइल पासवर्ड का करें प्रयोग :

घर में बड़े अपने फोन का पासवर्ड बदलते रहें और बिना आपकी अनुमति के बच्चों को फोन यूज़ करने की आदत ना डालें।

घर बाहर के काम में रखें बिजी :

बढ़ते बच्चों को जरूरी है कि वे घर-बार के काम को सीखें। अगर आपका बच्चा अधिक मोबाइल देखने लगा तो आप उसे प्यार से हेल्प करने की बात कहें। आप बच्चों को घर की सफाई, डेकोरेशन, ब्रेकफास्ट की तैयारी, किसी की मदद आदि के लिए प्रोत्साहित करें। बच्चे जितना बिजी रहेंगे, मोबाइल का उतना कम इस्तेमाल करेंगे।

प्राथमिक उपचार

दीपाली ठाकुर
कार्यालय सहायक (मा.सं)

प्राथमिक चिकित्सा विद्या प्रयोगात्मक चिकित्सा के मूल सिद्धांतों पर निर्भर है। इसका ज्ञान शिक्षित पुरुषों को इस योग्य बनाता है कि वे आकस्मिक दुर्घटना या बीमारी के अवसर पर, चिकित्सक के आने तक या रोगी को सुरक्षित स्थान पर ले जाने तक, उसके जीवन को बचाने, रोगनिवृत्ति में सहायक होने, या घाव की दशा और गंभीर होने से रोकने में उपयुक्त सहायता कर सकें।

प्राथमिक चिकित्सा की सीमा (फर्स्ट एड) – प्राथमिक उपचार आकस्मिक दुर्घटना के अवसर पर उन वस्तुओं से सहायता करने तक ही सीमित है, जो उस समय प्राप्त हो सकें। प्राथमिक उपचार का यह ध्येय नहीं है कि प्राथमिक उपचारक चिकित्सक का स्थान ग्रहण करे। इस बात को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि चोट पर दुबारा पट्टी बाँधना तथा उसके बाद का दूसरा इलाज प्राथमिक उपचार की सीमा के बाहर है। प्राथमिक उपचार का उत्तरदायित्व किसी डॉक्टर द्वारा चिकित्सा संबंधी सहायता प्राप्त होने के साथ ही समाप्त हो जाता है, परंतु उसका कुछ देर तक वहाँ रुकना आवश्यक है, क्योंकि डाक्टर को सहायक के रूप में उसकी आवश्यकता पड़ सकती है।

किन–किन स्थितियों में प्राथमिक चिकित्सा उपयोगी है ?

ऊँचाई पर जाने से समस्या होना, हड्डी टूटना, जलना, हृदयाघात (हार्ट अटैक), श्वसन–मार्ग में किसी प्रकार का अवरोध आ जाना, पानी में डूबना, हीट स्ट्रोक, मधुमेह के रोगी का बेहोश होना, हड्डी के जोड़ों का विस्थापन, विष का प्रभाव, दाँत दर्द, घाव–चोट आदि में प्राथमिक चिकित्सा उपयोगी है।

प्राथमिक उपचार में आवश्यक बातें :

* प्राथमिक उपचारक को आवश्यकतानुसार रोगनिदान करना चाहिए, तथा
* घायल को कितनी, कैसी और कहाँ तक सहायता दी जाए, इसपर विचार करना चाहिए।

रोग या घाव संबंधी आवश्यक बातें : * रोगी की स्थिति, इसमें रोगी की दशा और स्थिति देखनी चाहिए।

* चिन्ह, लक्षण या वृत्तांत, अर्थात् घायल के शरीरगत चिन्ह, जैसे सूजन, कुरूपता, रक्तसंचय इत्यादि प्राथमिक उपचारक को अपनी ज्ञानेंद्रियों से पहचानना तथा लक्षण, जैसे पीड़ा, जड़ता, घुमरी, प्यास इत्यादि पर ध्यान देना चाहिए। यदि घायल व्यक्ति होश में हो तो रोग का और वृत्तांत उससे, या आसपास के लोगों से पूछना चाहिए। रोग के वृत्तांत के साथ लक्षणों पर विचार करने पर निदान में बड़ी सहायता मिलती है।
* कारण : यदि कारण का बोध हो जाए तो उसके फल का बहुत कुछ बोध हो सकता है, परंतु स्मरण रहे कि एक कारण से दो स्थानों पर चोट, अर्थात् दो फल हो सकते हैं, अथवा एक कारण से या तो स्पष्ट फल हो, या कोई दूसरा फल, जिसका संबंध उस कारण से न हो, हो सकता है। कभी कभी कारण बाद तक अपना काम करता रहता है, जैसे गले में फंदा इत्यादि।

घटनास्थल से संबंधित बातें : * खतरे का मूल कारण, आग, बिजली का तार, विषैली गैस, केले का छिलका या बिगड़ा घोड़ा इत्यादि हो सकते हैं, जिसका ज्ञान प्राथमिक उपचारक को प्राप्त करना चाहिए।

* निदान में सहायक बातें, जैसे रक्त के धब्बे, टूटी सीढ़ी, बोतलें तथा ऐसी वस्तुओं को, जिनसे घायल की चोट या रोग से संबंध हो सुरक्षित रखना चाहिए।
* घटनास्थल पर उपलब्ध वस्तुओं का यथोचित उपयोग करना श्रेयस्कर है।
* दोहर, कंबल, छाते इत्यादि से बीमार की धूप या बरसात से रक्षा करनी चाहिए।
* बीमार को ले जाने के निमित्त प्राथमिक उपचारक को देखना चाहिए कि घटनास्थान पर क्या–क्या वस्तुएँ मिल सकती हैं। छाया का स्थान कितनी दूर है, मार्ग की दशा क्या है। रोगी को ले जाने के लिए प्राप्त योग्य सहायता का श्रेष्ठ उपयोग तथा रोगी की पूरी देखभाल करनी चाहिए।

प्राथमिक उपचार के मूल तत्व – * रोगी में श्वास, नाड़ी इत्यादि जीवनचिन्ह न मिलने पर उसे तब तक मृत न समझें, जब तक डॉक्टर आकर न कह दे।

* रोगी को तत्काल चोट के कारण से दूर करना चाहिए।
* जिस स्थान से अत्यधिक रक्तस्राव होता हो उसका पहले उपचार करें।
* श्वासमार्ग की सभी बाधाएँ दूर करके शुद्ध वायुसंचार की व्यवस्था करें।
* हर घटना के बाद रोगी का स्तब्धता दूर करने के लिए उसको गर्मी पहुँचाएँ। इसके लिए कंबल, कोट, तथा गरम पानी की बोतल का प्रयोग करें।
* घायल को जिस स्थिति में आराम मिले उसी में रखें।
* यदि हड्डी टूटी हो तो उस स्थान को अधिक न हिलाएँ तथा उसी तरह उसे ठीक करने की कोशिश करें।
* यदि किसी ने विष खाया हो तो उसके प्रतिविष द्वारा विष का नाश करने की व्यवस्था करें।
* जहाँ तक हो सके, घायल के शरीर पर कसे कपड़े केवल ढीले कर दें, उतारने की कोशिश न करें।
* जब रोगी कुछ खाने योग्य हो तब उसे चाय, काफी, दूध इत्यादि उत्तेजक पदार्थ पिलाएँ। होश में लाने के लिए स्मेलिंग साल्ट (smelling salt) सुँघाएँ।
* प्राथमिक उपचारक को डॉक्टर के काम में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए, बल्कि उसके सहायक के रूप में कार्य करना चाहिए।

बैंक नोट मुद्रणालय के इकाई प्रमुख/मुख्य महाप्रबंधकगण (स्थापना से अब तक)

श्री आर. रामास्वामी
विशेष कर्त्तव्य अधिकारी
26.06.1969 - 03.03.1975

श्री डी.सी. मुखर्जी
महाप्रबंधक
03.03.1975 - 03.04.1977

श्री पी.एस. शिवराम
महाप्रबंधक
07.04.1977 - 30.06.1980

श्री एम.वी. चार
महाप्रबंधक
15.03.1981 - 12.12.1990

श्री जे.सी. गुलाटी
महाप्रबंधक
31.05.1991 - 30.09.1995

श्री टी.के. रामास्वामी
उपमहाप्रबंधक एवं विभागाध्यक्ष
01.10.1995 - 10.06.1998

श्री एम.डी. सिंह
महाप्रबंधक
02.07.1998 - 28.06.2003

श्री अश्विनी कुमार
महाप्रबंधक
28.06.2003 - 05.03.2004

श्री सुमित सिन्हा
उप महाप्रबंधक एवं विभागाध्यक्ष
05.03.2004 - 31.01.2006

श्री एम. पुन्नुदुरे
कार्यप्रबंधक एवं विभागाध्यक्ष
01.02.2006 - 07.03.2006

श्री दिलीप वी. गोंडनाले
महाप्रबंधक
08.03.2006 - 01.02.2009

श्री एम.सी. बैलप्पा
उप महाप्रबंधक एवं विभागाध्यक्ष/महाप्रबंधक
01.02.2009 - 09.04.2011 /
08.07.2015 - 24.02.2018

श्री बी. बर्मन
महाप्रबंधक
09.04.2011 - 23.02.2013

श्री सुधीर साहू
महाप्रबंधक
23.02.2013 - 04.06.2014

श्री संजीव रंजन
महाप्रबंधक
04.06.2014 - 08.07.2015

श्री टी.आर. गोवडा
महाप्रबंधक
27.02.2018 - 20.07.2018

श्री राजेश बंसल
मुख्य महाप्रबंधक
20.07.2018 - 24.05.2022

श्री वीएनआर नायडू
मुख्य महाप्रबंधक
09.06.2022 - 28.10.2022

श्री सुरेश्वर महापात्र
मुख्य महाप्रबंधक
17.10.2022 से अब तक

बी.एन.पी. पर्यावरण के 50 वर्ष

राहुल सहारे
वरिष्ठ पर्यवेक्षक (नियंत्रण)

बैंक नोट मुद्रणालय का प्राकृतिक वातावरण बहुत ही खूबसुरत है, एक समय यहाँ खेत हुआ करते थे तथा यहाँ से वहाँ तक कुछ ही वृक्ष थे। जब से बैंक नोट मुद्रणालय बना, यहाँ के प्रबंधतंत्र द्वारा वृक्षारोपण किया गया है तथा व्यवस्थित तरीके से तो उन लोगों की सोच आज हमें एक लुभावना वातावरण निर्मित कर रही है। यहाँ हर तरह के पेड़-पौधे लगे हुए है। पूर्व के कई महाप्रबंधकों ने रोड के दोनों ओर जो छोटे वृक्ष लगाये थे, अब वो विशाल वृक्षों का रूप ले चुके है तथा बी.एन.पी. परिसर को ऑक्सीजन से लबालब भरते रहते है। यहाँ नीम, पीपल, बड़, चंदन तथा सागी और भी कई प्रकार के वृक्ष लगे हुए है। सुन्दर उद्यान केन्द्रीय पार्क भी है, जिसमें गुलाबों की कई वैरायटी लगी है। इसी तरह बी.एन.पी. ऑफिस कारखाना परिसर को भी साफ स्वच्छ सुन्दर वृक्षों एवं पौधों से सजाया गया है। यहाँ पर भी गुलाबों की बड़ी क्यारिया मन को मोह लेती है। इसी तरह इंक फैक्ट्री का गार्डन भी मन को मोह लेता है। बी.एन.पी. में वृक्षों की तरह से शहर से अधिक वर्षा होती है। साथ ही शहर एवं बी.एन.पी. के तापमान में 2 डिग्री का अंतर महसूस किया जा सकता है।

पूर्व के महाप्रबंधकों का लाभ आज नियुक्त होने वाले कर्मचारियों एवं अधिकारी गणों के परिवार वाले ले रहे है, इसीलिए आज भी हमें लगातार वृक्षारोपण करते रहना चाहिए तथा स्वस्थ रहना चाहिए, इन्हीं वृक्षों की बदौलत बी.एन.पी. को पर्यावरण अवार्ड आई.एस.ओ. 14001 भी मिला हुआ है। वृक्षों के कारण ही बी.एन.पी. में राष्ट्रीय पक्षी मोर ने अपना बसेरा यहाँ बना रखा है। इसी कड़ी में हमारे वर्तमान मुख्य महाप्रबंधक महोदय श्री एस. महापात्र सा. ने भी कर्त्तव्य पथ एवं स्वास्थ्य पथ का निर्माण करवाया, जिस पर घुमने का आनंद ही कुछ और है आने वाली नई पीढ़ियों के लिये ये एक मिसाल रहेगा तथा स्वास्थ्य के लिए सोने में सुहागे का काम भी करेगा, इसीलिए आप और हम सभी वृक्ष लगाते रहें, जिससे प्रेस एवं देश का वातावरण स्वच्छ एवं स्वस्थ्य रहे।

मोबाईल का नशा

पुष्पेंद्र कुमार पटेल
वरिष्ठ पर्यवेक्षक (स्याही कारखाना)

मोबाईल एक नशा है, यह कहना है डॉक्टरों का। डाक्टरों के अनुसार मोबाईल एक नशा बन गया है, आज के दौर में बच्चे और बड़े सब उसके ऊपर निर्भर हो गए है। आज के समय मे मोबाईल का उपयोग करने की बात तो 2023 में एक अनुमान के अनुसार 5 बिलियन लोग इसका उपयोग कर रहे है। आज दूसरों की जिंदगी मे क्या हो रहा है, इसका ब्यौरा सोशल मीडिया से हमें मिल जाता है। दूसरो की जिंदगी मे दिलचस्पी हमारी खुद की जिंदगी को तहस-नहस कर देती है, इससे मानसिक शांति पर बहुत असर पड़ता है। दिनभर मे एक व्यक्ति कितना समय मोबाईल चलाने मे बिताता है, इसको लेकर एक बड़ी जानकारी सामने आई है। भारत सहित दुनियाभर के मोबाईल यूजर्स दिनभर में लगभग 4 घंटे या उससे अधिक समय बिताने की और अगसर हो रहे है, यह अत्यधिक चिंता का विषय है।

अरस्तू ने कहा था कि एक स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है।

मोबाईल के उपयोग से हमारे स्वास्थ पर बहुत गहरा पभाव पड़ता है। इसके अधिक उपयोग से बच्चो में चिड़चिड़ाहट, सिरदर्द की समस्या, अनिद्रा व हृदय से सम्बन्धित रोगों की संख्या बढ़ रही है। सोशल मीडिया पर जो भी दिखाता है, वो वास्तविकता से कोसों दूर होता है। मासूम बच्चों के मानस पटल पर इसका दुष्पभाव पड़ता है, जो उनके शारिरिक विकास में अवरोध डाल देता है। बच्चे दोनों में फर्क समझ नहीं पाते हैं। उनका अपरिपक्व मन जो देखता है, उसी पर विश्वास कर लेता है। बच्चे काल्पनिक दुनिया की चकाचौंध मे वास्तविक से दूर हो जाते है और अपने परिवार से कट जाते हैं।

आज के युग में प्रकृति की जगह मोबाईल के दृश्यों ने ले ली है, पेड़ की छाव का अहसास गुम सा गया है। वो घास पर पैर रखकर स्फूर्ति को महसूस करना, मानो सदियों की बात है। वो तितलियों को पकड़ते हुए भागना, मानो एक स्वप्न सा हो गया है। आज के युग में माँ की लोरी की जगह यूट्युब ने ले ली है। हम प्रकृति से दूर हो गए हैं, खेलना-कूदना तो जैसे बच्चे भूल ही गए है। ऐसी स्थिति में माता पिता का ये कर्तव्य है कि बच्चों को प्रकृति का महत्व समझाए, मोबाईल के कारण बच्चे अपने कार्य स्वयं करने की क्षमता खो देते है, क्योंकि उनको मोबाईल में हर चीज का हल मिल जाता है। किशोर बच्चों के हाथ मोबाईल की जगह पुस्तक को दें, बच्चो में पढ़ने की आदत डालें, पुस्तक पढ़ने से बच्चों में शब्दकोष बढ़ता है तथा उनमें ज्ञान की वृद्धि होती है।

अब फैसला आपको करना है कि आप आने वाली पीढ़ी को इस नशे से दूर रखना चाहते है या नहीं। जरा सोचिएगा जरूर...

1963 धारा 3 (3) के अन्तर्गत आने वाले सभी 14 दस्तावेज को द्विभाषी रूप में जारी करना

नियम – Rules, संकल्प – Resolution, सूचना – Notice / Information, अधिसूचना – Notification, प्रेस-विज्ञप्ति – Press Release, Communiques, निविदा – Tender, करार – Agreement, परिपत्र – Circular, विज्ञापन – Advertising, संविदा – Contract, सामान्य आदेश – General Order, रिपोर्ट – Report, अनुज्ञप्ति – Licence, अनुज्ञा पत्र – Permit, सदन के पटल पर रखे जाने वाले दस्तावेज – Paper to be laid on the table of the House of Parliament.

चुटकुले

सिपाही : धटना स्थल से थानेदार को फोन लगाकर बोला, जनाब यहाँ एक औरत ने अपने पति को गोली मार दी ।
थानेदार : क्यों ?
सिपाही : क्योंकि उसका पति पोछा लगे हुए गीले फर्श पर चलने लगा था।
थानेदार :तुमने गिरफ्तार कर लिया उसको ।
सिपाही : नहीं साहब, पोछा अभी सूखा नहीं है।

कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR)

साज़िद खान
कनिष्ठ कार्यालय सहायक (मा.सं.)

.

कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व :

Corporate Social Responsibility-CSR को सामान्यतः सामाजिक कल्याण पर असर का आकलन करने और उत्तरदायित्व ग्रहण करने के एक कॉर्पोरेट पहल के रूप में संदर्भित किया जा सकता है।

CSR अनुपालन का महत्त्व :

- कॉर्पोरेशन के लिये सकारात्मक छवि के निर्माण हेतु और उनके ESG अनुपालन के सहायता हेतु CSR परियोजनाओं का अधिकाधिक प्रयोग किया जा रहा है।
- वर्तमान समय में छवि महत्त्वपूर्ण हो गई है क्योंकि हितधारक अधिक जागरूक हो गए हैं और सामाजिक मुद्दों में संलग्नता रखते हैं।
- कोविड-19 महामारी की शुरुआत के बाद से भारत के परोपकारी सहयोगिताओं की संख्या दोगुनी से अधिक हो गई है, जो विदेशी एवं घरेलू परोपकार कार्यों, उच्च-निवल मूल्य (high net worth) रखने वाले व्यक्तियों, CSR फंडर्स, निजी पूंजी आदि से वृहत (large) रूप से धन जुटा रही है।
- इन विविध धाराओं के माध्यम से वंचित लोगों के जीवन में सुधार के लिये सहयोगात्मक धन की मात्रा में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।
- फंडिंग स्तर की वृद्धि के साथ ही सामाजिक प्रभाव के संचालन के लिये नवोन्मेषी वित्तपोषण दृष्टिकोण (innovative financing approaches) का भी विकास हुआ है; इसमें शिक्षा एवं स्वास्थ्य हेतु 'विकास प्रभाव बॉण्ड' (Development Impact Bonds- DIBs) और अन्य मिश्रित वित्तपोषण संगठन जैसे 'पे-फॉर-आउटकम मॉडल' (pay-for-outcomes models) शामिल हैं।

CSR को और अधिक प्रभावी कैसे बनाया जा सकता है ?

- **कंपनियों की भूमिका :** केवल धन आवंटित करने से आगे बढ़ते हुए कंपनियों को CSR अनुपालन की प्रगति की नियमित समीक्षा करनी चाहिये और इसके प्रति अधिक पेशेवर दृष्टिकोण के लिये कुछ उपाय करने चाहिये। इसके साथ ही, उन्हें स्पष्ट उद्देश्य निर्धारित करने चाहिये और सभी हितधारकों को इनके साथ सरेखित (Align) करना चाहिये।
- उनकी व्यावसायिक आवश्यकताओं के संबंध में उनके NGO भागीदारों को अवगत किया जाना भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है।
- NGOs को पता होना चाहिये कि जो कंपनियाँ अपने CSR बजट से धन देती हैं, वे उनके द्वारा चयनित विषयों के प्रति गंभीर भी हैं।
- कंपनियों को बोर्ड, CSR समिति, CFO की भूमिकाओं पर भी पुनर्विचार करना चाहिये और फंड के उपयोग के लिये एक परिभाषित प्रक्रिया सहित नई मानक परिचालन प्रक्रियाएँ (SOPs) स्थापित करनी चाहिये। इसके साथ ही प्रभाव मूल्यांकन की प्रयोज्यता (applicability) निर्धारित की जाए, मालिकों और समय सीमा के साथ प्रक्रियाओं की एक विस्तृत चेकलिस्ट तैयार की जाए और एक वार्षिक कार्रवाई योजना को आकार दिया जाए।
- **सरकार की भूमिका:** सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिये कि कंपनी की CSR नीति में शामिल गतिविधियों को उसके द्वारा कार्यान्वित किया जाए।
- गैर-सरकारी संगठनों की अनुपलब्धता के मुद्दों को संबोधित करना और CSR एवं इसकी गतिविधियों के महत्त्व के बारे में समाज में जागरूकता पैदा करना भी सरकार की ज़िम्मेदारी है।
- सरकार CSR पर अपनी नीति में बदलाव लाने के लिये निर्दिष्ट रिपोर्टों की डेटा माइनिंग हेतु आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग जैसे प्रौद्योगिकी उपकरणों का उपयोग करने की योजना बना रही है।
- सरकार द्वारा कंपनियों की निगरानी में सुधार के लिये प्रौद्योगिकी का लाभ उठाना स्वागतयोग्य है, लेकिन इसे कंपनियों के सामाजिक दायित्वों पर लागू करने से पहले उनके वित्तीय और शासन पहलुओं पर लागू किया जाना चाहिये।

राजभाषा नीति संबंधी मार्गदर्शन एवं मॉनीटरिंग के लिए गठित समितियाँ

केन्द्रीय हिन्दी समिति :

अध्यक्ष – माननीय प्रधानमंत्री जी
सदस्य – गृह मंत्री एवं गृह राज्य मंत्री तथा 6 अन्य केन्द्रीय मंत्रालयों के मंत्री, 6 राज्यों के मुख्यमंत्री, संसदीय राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष।
उद्देश्य – हिन्दी के विकास और प्रसार-प्रचार ।

विविध गतिविधियों की कहानी.... चित्रों की जुबानी.....

❊ एसपीएमसीआईएल निदेशक मंडल की 111 वी बैठक :

बैंक नोट मुद्रणालय, देवास में दिनांक 11.03.2024 एवं 12.03.2024 को भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड, नई दिल्ली के निदेशक मण्डल की 111 वीं बैठक माननीय अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय श्री विजय रंजन सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुई। जिसमें एसपीएमसीआईएल निगम के निदेशक मंडल के सदस्य श्री एस.के. सिन्हा, निदेशक (मा.सं), श्री अजय अग्रवाल, निदेशक (वित्त) सहित स्वतंत्र सदस्य श्री राम कुमार चिल्लुकुरी एवं श्री ए.के. चौकशी भी उपस्थित थे। इसी उपलक्ष्य में मुद्रणालय की स्मारिका '**गौरवगाथा**' का विमोचन भी सम्पन्न हुआ ।

❊ गौरवगाथा कॉरिडोर का उद्घाटन

बैंक नोट मुद्रणालय, देवास के 50 वर्ष पूर्ण होने के यादगार लम्हे के तौर पर गौरवगाथा कॉरिडोर का दिनांकः 11.03.2024 को अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक के कर कमलो से उद्घाटन सम्मपन हुआ, जिसमे भारतीय मुद्रा के विकसित स्वरूप एवं स्थापना से अब तक का सफर के साथ कार्मिको का योगदान का विवरण समाहित है जिससे सभी कार्मिको में उत्साह की लहर एवं उन्माद से भरा है।

❊ नव निर्मित सी.एस.आई. स्याही का सीएमडी महोदय द्वारा शुभारम्भ :

बैक नोट मुद्रणालय, देवास के स्याही कारखाना द्वारा स्व-विकसित सी.एस.आई स्याही का उद्घाटन किया गया, ज्ञात हो की यह स्याही पूर्व में विदेशो से मंगाया जाता था, लेकिन मुद्रणालय के मुखिया श्री एस. महापात्र, मुख्य महाप्रबंधक के नेतृत्व में इसे स्वयं ही विकसित किया गया एवं भारतीय रिजर्व बैक द्वारा 29 जनवरी-2024 को सी.एस.आई. स्याही की मान्यता स्वीकृति मिल गई जिसका विमोचन माननीय अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक के कर कमलों से सम्पन्न हुआ।

❊ स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त) की झलकियाँ :

❊ गणतंत्र दिवस (26 जनवरी) की झलकियाँ :

❊ नई PIDS का सी.आई.एस.एफ. को हस्तांतरण :

बैंक नोट मुद्रणालय की सुरक्षा व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए सुचना प्रौद्योगिकी अनुभाग द्वारा सुरक्षा का पुख्ता/चौकसी हेतु मुद्रणालय में तैनात केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के जवानो को (PIDS) Perimeter Intrusion Detection System माननीय अध्यक्ष एवं प्रबंधक निदेशक की उपस्थिति में उक्त उपकरण सौपा गया जिससे मुद्रणालय की सुरक्षा व्यवस्था और सुदृढ़ हो जाए ।

❊ नव निर्मित कर्तव्य पथ का उद्घाटन :

बैंक नोट मुद्रणालय, देवास में कार्मिकों के हित को ध्यान में रखते हुए दिनांकः 14.08.2023 को मुद्रणालय में फैक्ट्री गेट से प्रखण्ड-4 तक माननीय निदेशक (मा.सं.) श्री सुनील कुमार सिन्हा के कर-कमलों से कर्तव्य पथ का उद्घाटन किया गया उक्त कार्यक्रम में मुद्रणालय के मुख्य महाप्रबंधक, महाप्रबंधक एवं सभी वरिष्ठ अधिकारी, कर्मचारी, मान्यता प्राप्त यूनियन सभी उपस्थित थें।

❊ अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस :

बैंक नोट मुद्रणालय, देवास में कार्यरत नारी शक्ति को सम्मानित करने हेतु बैंक नोट मुद्रणालय में 08 मार्च–2024 को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में मुद्रणालय की सभी महिलाओं को सम्मानित किया गया । कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री एस.महापात्र, मुख्य महाप्रबंधक ने सभाकक्ष में केक कटिंग कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया एवं सभी महिलाओ से विचार–विमर्श के पश्चात पुनः सभी महिलाओ को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कार्यक्रम का समापन किया गया ।

❊ कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सी.एस.आर.) :

बैंक नोट मुद्रणालय, देवास के तत्वावधान में, निगम सामाजिक दायित्व (सीएसआर) के अन्तर्गत दिनांक 02.02.2024 को मुद्रणालय परिसर में देवास के ग्रामीण क्षेत्र हेतु '**मेरा स्कूल– स्मार्ट स्कूल**' अभियान के अन्तर्गत देवास स्कूल के कक्षा को स्मार्ट कक्षा बनाने हेतु 100 शासकीय स्कूलो के पुरे देवास में (सोनकच, बागली, कन्नौद, खालेग़ाँव, टोकखुर्द इत्यादि) माननीय श्री ऋषव गुप्ता, माननीय कलेक्टर, देवास एवं मुद्रणालय के मुख्य महाप्रबंधक श्री एस. महापात्र के साथ वरिष्ठ अधिकारी गण के उपस्थिति में यह स्मार्ट टी.वी. वितरित किया गया ।

❊ बैंक नोट मुद्रणालय, देवास में हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन :

वर्ष-2023 में 14 सितम्बर हिन्दी दिवस के अवसर पर दिनांक 14 सितम्बर-2023 से 29 सितम्बर 2023 पर आयोजित बैंक नोट मुद्रणालय, देवास में हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया जिससे निम्न प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई -

1. निबंध प्रतियोगिता (अधिकारी वर्ग), दिनांक : 14 सितम्बर-2023
2. निबंध प्रतियोगिता(कर्मचारी वर्ग), दिनांक : 19 सितम्बर-2023
3. वर्ग-पहेली एवं शब्द-ज्ञान प्रतियोगिता, दिनांक : 23 सितम्बर-2023
4. टिप्पण एवं पत्र-लेखन प्रतियोगिता, दिनांक : 28 सितम्बर-2023
5. सामान्य ज्ञान (प्रश्नमंच प्रतियोगिता), दिनांक : 29.09.2023
6. वार्षिक टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता

पखवाड़े के दौरान आयोजित सभी प्रतियोगिताओं में मुद्रणालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़- चढ़ कर उत्साह एवं उल्लास के साथ भाग लिया ।

*** न.रा.का.स., देवास की अर्द्धवार्षिक बैठक :**

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, देवास के तत्वावधान में वर्ष-2023 की प्रथम अर्द्धवार्षिक बैठक दिनांक : 21.07.2023 को होटल श्रीखेड़ापति देवास एवं 29.12.2023 को द्वितीय अर्द्धवार्षिक बैठक का आयोजन बैंक नोट मुद्रणालय, देवास के अतिथि गृह में किया गया । बैंक नोट मुद्रणालय के मुख्य महाप्रबंधक एवं न.रा.का.स. अध्यक्ष श्री एस. महापात्र एवं सदस्य सचिव श्री देवेन्द्र तिवारी के साथ न.रा.का.स. के सभी सदस्य कार्यालयों के प्रमुख एवं वरिष्ठ अधिकरी उपस्थित थे। मुख्य महाप्रबंधक बैंक नोट प्रेस, देवास एवं अध्यक्ष न.रा.का.स. द्वारा सभी सदस्य कार्यालयों की छः माही रिर्पोट की समीक्षा की गई एवं राजभाषा कार्यान्यवयन हेतु निर्देश जारी किये गये । सदस्य सचिव देवेन्द्र तिवारी ने सभी कार्यालयों को संबोधित करते हुए राजभाषा के प्रावधानों से अवगत कराया। बैठक का संचालन श्री विवेक प्रसाद वरि. पर्यवेक्षक (रा.भा.) द्वारा किया गया ।

❊ **स्वास्थ्य पथ का उद्घाटन :** बैंक नोट मुद्रणालय, देवास में 22 जनवरी 2024 के दिन (रामजन्म भूमि) उद्घाटन के पावन अवसर पर बीएनपी परिसर में सभी कार्मिको एवं उनके परिवारजनों के लिए मुख्य महाप्रबंधक श्री एस. महापात्र द्वारा स्वास्थ्य पद का उद्घाटन किया गया, जिससे परिसरवासियों में उत्साह की लहर हैं। स्वास्थ्य पथ का सी.एम.डी. महोदय द्वारा दिनांक 11-03-2023 को निरीक्षण किया गया ।

❊ **संरक्षा सप्ताह का आयोजन :** बैंक नोट मुद्रणालय, देवास में 53वाँ राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह का आयोजन दिनांक 4 मार्च से 10 मार्च तक मनाया गया। जिसका थीम उद्देश्य, इतिहास और महत्व के अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के जवान एवं बीएनपी के अधिकारी एवं कर्मचारीगण द्वारा विभिन्न कार्यकलापों में भाग लिया गया एवं समापन समारोह में मुख्य महाप्रबंधक श्री एस. महापात्र द्वारा संरक्षा एवं सुरक्षा से संबंधित विषयों पर सभी को संबोधित किया गया ।

आई.एस.ओ. – प्रमाणन

CERTIFICATE

The Certification Body
of TÜV SÜD South Asia Private Limited
certifies that

Bank Note Press
A B Road Dewas - 455001, M.P, India

has implemented Occupational Health and Safety Management System
in accordance with ISO 45001:2018
for the scope of

Printing and Supply of Bank Notes.

The certificate is valid from 2022-04-05 until 2025-04-04
Subject to successful completion of annual periodic audits

Certificate Registration No. 99 117 00652
Date of Initial certification: 2022-04-05
Issue Date: 2022-04-05 Rev. 00

❋ बैंक नोट प्रेस को मिला संरक्षा अवार्ड :

देवास, राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद एम.पी. चैप्टर भोपाल के द्वारा वर्ष 2023-24 में संरक्षा के क्षेत्र में सर्वोत्तम कार्य के लिए बैंक नोट प्रेस देवास को हेल्थ, सेफ्टी व इनवायरमेंट प्लेटिनम अवॉर्ड से नवाजा गया।

यह अवॉर्ड माननीय कैबिनेट मंत्री, कृष्णा गौर (म.प्र. शासन) के द्वारा बी.एन.पी, सी.जी.एम. श्री सुरेश्वर महापात्र एवं संरक्षा अधिकारी अनुराग वर्मा ने ग्रहण किया। सी.जी.एम. श्री महापात्र ने बताया, यह अवॉर्ड हमारे सभी कर्मचारियों-अधिकारियों के अथक, गुणवत्तापूर्ण व सुरक्षित तरीके से सर्वोत्तम कार्य निष्पादन का परिणाम है। इस अवॉर्ड के लिए म.प्र. की 100 से अधिक कम्पनियां ने विभिन्न कैटेगरी के लिए आवेदन किया था। इस अवॉर्ड के प्राप्त होने से कर्मचारियों-अधिकारियों में हर्ष व्याप्त है।

❋ बैंक नोट प्रेस के महिला मंडल द्वारा बीएनपी चिकित्सालय को एम्बुलेंस भेंट :

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर बैंक नोट मुद्रणालय, देवास के महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती दीप्तिरानी महापात्र एवं सभी महिला सदस्य द्वारा बीएनपी चिकित्सालय को एम्बुलेंस भेंट की गई जिससे मुद्रणालय परिसर में रहने वाले सभी परिसर वासियों के हितों को ध्यान में रखते हुए यह सामाजिक कल्याण का कार्य लेडिस क्लब द्वारा किया गया।

*** डॉ. बाबा साहब भीमराव अंबेडकर की 134वीं जयंती समारोह :** बैंक नोट मुद्रणालय, देवास के तत्वावधान में दिनांक : 14 अप्रैल, 2024 को भारत रत्न डॉ. बाबा साहब भीमराव अंबेडकर की 134 वीं जयंती के अवसर पर मुद्रणालय द्वारा एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य महाप्रबंधक एवं महाप्रबंधक के साथ अन्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों तथा मान्यता प्राप्त यूनियन एवं एसोसिएशन के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में बाबा साहब की स्मारिका पर फूल-माला अर्पित की गई एवं साथ ही स्कूल के बच्चों द्वारा नाट्य प्रस्तुति दी गई, जिसमें बाबा साहब की जीवन से जुड़ी उपलब्धियों को बच्चों द्वारा दर्शाया गया । इस अवसर पर मुख्य महाप्रबंधक समेत अधिकारियों तथा यूनियन एवं एसोसिएशन के प्रतिनिधियों ने बाबा साहब के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर अपने विचार प्रकट किए। कार्यक्रम के समापन में मुख्य महाप्रबंधक द्वारा सभी बच्चों को पुरस्कृत किया गया।

नवागत का स्वागत

श्री दीपक अशोक पडवळ
संयुक्त महाप्रबंधक (त.प्र.)

श्री अशोक शर्मा
संयुक्त महाप्रबंधक
(सामग्री)

श्री बृजमोहन कुमार द्विवेदी
उप महाप्रबंधक
(तकनीकी प्रचालन)

श्री प्रदीप कुमार
उप महाप्रबंधक
(तकनीकी प्रचालन)

श्री भूषण अशोक कुलकर्णी
उप महाप्रबंधक
(वित्त एवं लेखा)

श्री अनिल कुमार विश्वकर्मा
प्रबंधक (तकनीकी प्रचालन)

श्री सुधीर कुमार तिवारी
प्रबंधक (तकनीकी प्रचालन)

मो. इदरिस अंसारी
प्रबंधक (तकनीकी प्रचालन)

श्री सागर वसंतराव देवतले
प्रबंधक (तकनीकी प्रचालन)

श्री अभिराज सिंह ठाकुर
प्रबंधक (तकनीकी प्रचालन)

श्री धीरेंद्र कुमार
प्रबंधक (सूचना प्रौद्योगिकी)

श्री पी. शिवराम प्रसाद राव
प्रबंधक (तकनीकी प्रचालन)

श्री सिद्धार्थ श्रीवास्तव
प्रबंधक (मा.सं.)

श्रीमती पुष्पलता कुलहारे
प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2024-25 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. **क** क्षेत्र से **क** क्षेत्र को 100% 2. **क** क्षेत्र से **ख** क्षेत्र को 100% 3. **क** क्षेत्र से **ग** क्षेत्र को 65%	1. **ख** क्षेत्र से **क** क्षेत्र को 90% 2. **ख** क्षेत्र से **ख** क्षेत्र को 90% 3. **ख** क्षेत्र से **ग** क्षेत्र को 55%	1. **ग** क्षेत्र से **क** क्षेत्र को 55% 2. **ग** क्षेत्र से **ख** क्षेत्र को 55% 3. **ग** क्षेत्र से **ग** क्षेत्र को 55%
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	4. **क** क्षेत्र से **क** व **ख** क्षेत्र को 100% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	4. **ख** क्षेत्र से **क** व **ख** क्षेत्र को 90% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	4. **ग** क्षेत्र से **क** व **ख** क्षेत्र को 55% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/ डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10.	हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में काम करने की सुविधायुक्त इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों जिनमें कम्प्यूटर भी शामिल है, की खरीद	100%	100%	100%
11.	**वेबसाइट द्विभाषी हो**	**100%**	**100%**	**100%**
12.	नागरिक चार्टर तथा जनसूचना बोर्ड आदि द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किए जाएं।	100%	100%	100%

प्रविष्टि 09 आमंत्रण

हिन्दी में कहानी या कविता लिखें

ऊपर दी गई तस्वीरों को (प्रविष्टि क्रं. 09)
देखकर आपको हिन्दी में कोई
प्रेरणास्पद कहानी या कविता
मुद्रापथ को लिखकर भेजना है।
श्रेष्ठ कहानी/कविता को पुरस्कृत किया जाएगा,
साथ ही मुद्रापथ के आगामी अंक में
प्रकाशित भी किया जाएगा।

प्रविष्टि भेजने का पता :–
देवेन्द्र तिवारी
प्रबंधक (राजभाषा)
बैंक नोट मुद्रणालय, देवास (म.प्र.)
संपर्क : 07272-268331
ईमेल : devendra.tiwari@spmcil.com

पिछड़ा आदमी

जब सब बोलते थे
वह चुप रहता था,
जब सब चलते थे
वह पीछे हो जाता था,
जब सब खाने पर टूटते थे
वह अलग बैठा टूँगता रहता था,
जब सब निढाल हो सो जाते थे
वह शून्य में टकटकी लगाए रहता था
लेकिन जब गोली चली
तब सबसे पहले
वही मारा गया।

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना
(सुप्रसिद्ध कवि)

युगांधर प्रिंटर्स : 9893699948